प्रेम की पराकाष्ठा

श्री सत्यजीवन वर्म्मा, एम० ए०



ऑस्कर वाइल्ड

प्रेम की पराकाष्ठा

हिन्दी-गौरव-ग्रन्थ-माला—४३ वां ग्रन्थ

प्रेम की पराकाष्ठा

वा

पडुआ की रानी

अर्थात्

ऑस्कर वाइल्ड कृत "डचेस ऑफ़ पडुआ"

का

स्वतन्त्र हिन्दी अनुवाद।



अनुवादक

श्री सत्यजीवन वर्म्मा, एम० ए०

प्रयाग

गाँधी हिन्दी पुस्तक-भंडार,

१९३०

प्रकाशक
गांधी हिन्दी पुस्तक-भण्डार,
प्रयाग ।

प्रथम बार १०००
मूल्य २॥)

मुद्रक
सूरजप्रसाद खन्ना,
हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग ।

नाटक के पात्र

सीमोन गेसो —पडुआ का राजा।
बिट्रीस —उसकी रानी।
अंडरी पोलाजेलो —पडुआ का धर्माध्यक्ष।
माफ़ियो पेट्रूसी, जेप्पो विटेलोज़ो, टेडियो बारडी —राजा के ख़ास नौकर
गाइडो फ़रान्टी —एक नवयुवक।
अस्केनियो क्रीस्टोफ़ेनो —उसका मित्र
कौन्ट मोरानज़ो —एक बूढ़ा आदमी।
बरनारडो केवाल्केन्टी —पडुआ के प्रधान न्यायाधीश
ह्यूगो —जल्लाद।
लूसी —रानी की नौकरानी।

नौकर, नागरिक, सिपाही, महन्त, बाज़वाले, बाज़ और शिकारी कुत्तों के साथ, इत्यादि।

स्थान—पडुआ

समय—सोलहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।

ग्रंथकार के अन्य प्रकाशित ग्रंथ।

१. वीसलदेव रासो—(नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी)।
२. सूर रामायण— (लहरी प्रेस, काशी)।
३. अन्योक्ति कल्पद्रुम— (,, ,, ,,)।
४. मुरली-माधुरी— (सरस्वती प्रेस, काशी)।
५. नयन— (राम नारायण लाल, प्रयाग)।
६. चित्रावली— (,, ,, ,,)।
७. संक्षिप्त पद्मावत—(इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग)।
८. स्वप्न-वासवदत्ता—(,, ,, ,,)।
९. प्रायश्चित्त— (साहित्य भवन, प्रयाग)।

मिलने का पता—

साहित्य-भवन लिमिटेड, प्रयाग।

वक्तव्य।

गत वर्ष जाड़े के दिनों में मैंने अनेक पुस्तकों के अनुवाद किये उनमें यह नाटक भी था। आधुनिक अंग्रेजी नाटककारों के 'ड्रामों' का अनुवाद अन्य लोग भी प्रकाशित कर रहे हैं। पर मेरी धारणा यह है कि उनसे अभी जनता को उतना लाभ नहीं पहुँच सकता जितना आसा किया जाता है। वर्तमान अंग्रेजी नाटककारों को समझने के लिए अंग्रेजी समाज का पूरा ज्ञान होना चाहिये। साथ ही साथ उनके नाटकों में भाषा सम्बन्धी बहुत सी बारीकियां हैं जो अनुवाद में नहीं आ सकतीं। उनका मजा तो अंग्रेजी ही में तथा अंग्रेजी समझने वाले ही को मिल सकता है। हमारी भाषा में वे भाव ठीक ठीक न अनुवादित हो सकते हैं न उनको हम अपनी भाषा में समझ कर उनका आनन्द ही उठा सकते हैं। यदि अनुवाद में ये छोड़े दिये जायँ तो अनुवाद अपने उद्देश से च्युत हो जाता है। अतः मैंने इन कठिनाइयों को सामने रखकर इस नाटक को अनुवाद के लिए चुना। यद्यपि यह आधु-

निक युग के नाटककार की रचना है पर उसमें प्राचीनता की झलक है और एक प्रकार से यह किसी विशेष समाज से सम्बन्ध नहीं रखता है।

अनुवाद के विषय मेरा विचार है कि अनुवाद दो प्रकार के होने चाहिए। एक तो अविकल और अक्षरशः। दूसरा स्वतंत्र और भावार्थ। पहला उन ग्रंथों के लिए काम में लाया जाय जिनको हम अपनी भाषा के द्वारा अध्ययन करना चाहते हैं जैसे विज्ञान विषयक, तथा अन्य प्रामाणिक ग्रंथ। दूसरे प्रकार का अनुवाद उन विषयों के लिए होना चाहिए जिनके अध्ययन में हमें प्रामाणिकता का उतना ध्यान नहीं है जितना उनके भावों और विचारों का आनन्द उठाने तथा उनसे मिलते जुलते अपने यहाँ के विचारों तथा भावों को जगाने के लिए। इसका प्रयोग नाटक, नाविल आदि मनोरंजक साहित्य के लिए हो सकता है। उपरोक्त कथन का उद्देश नियम निर्धारित करना नहीं है वरन उपयोगिता की दृष्टि से 'अनुवाद' के दो भेद दर्शाना है। एक ही ग्रंथ के दोनों प्रकार के अनुवाद हो सकते हैं पर उनका उद्देश तथा धर्म दो होगा। जैसे यदि 'शेक्सपियर' के किसी नाटक के दोनों प्रकार के अनुवाद

हमें करने हैं तो पहले प्रकार का अनुवाद केवल 'शेक्सपियर' को विशेष रूप से अध्ययन करनेवाले व्यक्ति के लिये होगा, दूसरा रंग मंच तथा जनता के काम का। मैंने उस नाटक का अनुवाद दूसरी श्रेणी में रक्खा है।

आजकल 'भाषा' के विषय में अनेक मत हैं। कुछ लोग 'तत्समवाद' के अनुयायी हैं कुछ 'तद्भववाद' के माननेवाले। इधर हिन्दुस्तानी एकेडेमी के स्थापित होने के पश्चात् कुछ लोगों ने 'हिन्दोस्तानी' भाषा के प्रचार का दोबारा बीड़ा उठाया है और वे धीरे धीरे इसका प्रचार कर रहे हैं। मैं किसी सम्प्रदाय विशेष का अंध-भक्त नहीं हूँ। मेरा विचार है कि इस प्रकार किसी एक का भक्त होकर साहित्य का हम उपकार नहीं कर सकते। वरन आवश्यकता अनुसार हमें सब से काम लेना चाहिये। सारांश यह कि विषय और भावों के अनुसार भाषा का रूप होगा। जबरदस्ती न साहित्य की भाषा 'हिन्दुस्तानी' बन सकती है न कुछ लोगों की खींचा तानी से तत्सम या तद्भववादी। लेखकों को स्वतंत्रता दीजिए, जनता में शिक्षा का प्रचार कीजिए—कुछ दिनों में आप ही आप साहित्य की भाषा मँजकर ढलकर तय्यार हो जायगी।

राजनैतिक तथा साम्प्रदायिक विचारों से भाषा तथा साहित्य में हाथ लगाना सर्वथा अनुचित और अनधिकार चेष्टा है।

आधुनिक हिन्दी रंगमंच को देखते हुए तथा आधुनिक जनता की शिक्षा की ओर ध्यान देते हुए हमें मानना पड़ेगा कि वे वही भाषा समझ सकते हैं जिसमें उर्दू और हिन्दी का सामंजस्य हो। हमारे बोलचाल की भाषा इसी प्रकार की है—इसे आसानी से कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। इस अनुवाद में ऐसी ही भाषा का प्रयोग उचित समझा गया।

अनुवाद कहाँ तक सफल हुआ है यह पाठक गण ही निश्चय कर सकते हैं। मैं 'सिद्ध हस्त अनुवादक' नहीं और न मुझे अपने अनुवाद पर 'नाज़' है। इसके मर्मज्ञ जो हैं वे ही इसका निर्णय कर सकेंगे।

बेलीरोड
प्रयाग
१४-११-३०

सत्यजीवन वर्मा

कवि-परिचय ।

इस नाटक का मूल लेखक ऑस्कर वाइल्ड (Oscar wilde) आयरलैण्ड निवासी था । उसका जन्म अक्टूबर १६ सन् १८५४ में डब्लिन नगर में हुआ था । इसके पिता सर विलियम वाइल्ड डाक्टरी का काम करते थे और इस व्यवसाय में अच्छी ख्याति भी इन्हें प्राप्त हुई थी । ऑस्कर की माता विदुषी थीं । इन्हें साहित्य से प्रेम था और वे 'इस्पेरेनज़ा' के उपनाम से कविताएँ तथा लेख आदि भी लिखा सकती थीं । लेडी वाइल्ड को पुत्री की बड़ी साध थी । जब आस्कर पेट में था तो वे समझती थीं कि उसे लड़की पैदा होगी । पुत्र उत्पन्न होने पर वे उदास होगईं और अपनी साध मिटाने के लिए अपने पुत्र आस्कर को बहुत दिनों तक लड़की के कपड़े पहनाया करती थीं । कुछ लोगों का कथन है कि इसका प्रभाव आस्कर के स्वभाव पर भी पड़ा था ।

नौ वर्ष की अवस्था में वह पोरटोरा (Portora) के रायल स्कूल में भरती हुआ और सन् १८७१ तक वहाँ था । इसके

पश्चात् डब्लिन के ट्रिनिटी (Trinity) कालेज में अध्ययन करने चला गया। कालेज में उसने विशेष ख्याति नहीं पाई। प्रायः वह साधारण योग्यता का छात्र रहा। हाँ, एक बार अवश्य उसे सोने का एक पदक ग्रीक भाषा की प्रतियोग्यता में मिला था।

सन् १६०४ में वह आक्सफ़ोर्ड गया, पर यहाँ भी उसकी कोई विशेषता प्रकट न हुई। वह प्रायः और लड़कों से अलग रहता। खेल कूद और अन्य प्रकार के विनोद में वह कदाचित ही भाग लेता। वह एकान्त-प्रिय था और उसे ठाट बाट से रहने का शौक़ था। उसने अपने बाल बढ़ा रखे थे और अच्छे कपड़े पहनता था। वह देखने में भी सुन्दर था।

सन् १८८२ में आस्कर मित्रों के बुलाने पर अमेरिका गया पर वहां उसके व्याख्यानों में वांछित सफलता नहीं हुई और वह अमेरिका से असंतुष्ट लौटा। सन् १८८४ में यद्यपि उसके विचार विवाह-सम्बन्ध के विरुद्ध थे उसने कांस्टेन्स लायड् (Constance Lloyd) से विवाह कर लिया।

आस्कर वाइल्ड को शान-बान से रहने का बड़ा शौक़ था। रुपये की वह अधिक पर्वा नहीं करता था। पेरिस के सब से अच्छे होटल में वह रहता था और उसके खर्च को देखकर लोग दंग रह जाते थे। स्वभाव से वह सौन्दर्य्य प्रिय था। नवयुवकों

की संगत उसे बहुत प्रिय थी। इसी कारण कुछ लोग उसके आचरण पर भी आक्षेप करने लगे थे। पर आस्कर को इसका तनिक भी ख्याल न था। वह समाज की उपेक्षा करता था और उसे एक भयानक जन्तु समझता था। ऊँच नीच का भेद उसे नहीं भाता था।

स्वतंत्र विचार तथा सौन्दर्य्य प्रिय लोगों के मित्र तथा शत्रु दोनों बड़े बड़े लोग होते हैं। आस्कर के भी मित्र और शत्रु थे। १८६५ में लार्ड क्वीन्सबरी ने आस्कर पर दुराचार का अभियोग चलाया और अपने प्रभाव तथा धन के ज़ोर से आस्कर को दोषी भी प्रमाणित कर दिया। आस्कर को दो वर्ष की कड़ी सज़ा मिली और वह रीडिंग जेल में रखा गया। यहाँ उससे बड़ी सख्ती से काम लिया जाता था। फिर भी आस्कर का 'कवि हृदय' सजीव रहा और जेल में उसने कई ग्रंथ लिखे जो कला की दृष्टि से अद्वितीय समझे जाते हैं। जेल से निकल कर वह एक प्रकार से एकान्त जीवन व्यतीत करने लगा। समाज से उसे घृणा सी हो गई थी—उसकी स्त्री का भी देहान्त थोड़े दिनों पश्चात् हो गया। अनेक स्थलों पर दरिद्रता का जीवन बिता कर अन्त में वह ३० नवम्बर १६०० में बड़े कष्ट सहनकर स्वर्ग लोक सिधारा। उसकी ख्याति उसके मृत्यु के पश्चात् हुई।

[८]

डचेस आफ़ पडुआ

प्रस्तुत नाटक आस्कर के अन्य नाटकों में विशेष स्थान रखता है। इसका सम्बन्ध आस्कर के उत्थान और पतन से भी है। इस नाटक के लिखे जाने का इतिहास यों है :—

कुमारी मेरी अंडरसन नामक अमेरिका के किसी अभिनेत्री की फ़रमाइश पर आस्कर ने पाँच हज़ार डालर पर एक विप्रलंभ रूपक—वियोगान्त नाटक-लिखना स्वीकार किया था और लिखा पढ़ी यह हुई थी कि १ मार्च १८८३ तक वह नाटक लिखकर तैयार हो जायगा। आस्कर ने १०००) डालर पेशगी ले लिया था। रुपया मिल जाने पर आस्कर बड़े ठाट से पेरिस में रहने लगा उसे विश्वास था कि बहुत शीघ्र वह शेष ४०००) डालर पा जायगा, पर दुर्भाग्यवश उसने नियत समय पर नाटक पूरा न किया और नाटक की हस्तलिखित प्रति मेरी अण्डरसन के पास एक मास बाद पहुँची और उसने उसे लेना अस्वीकार कर दिया। आस्कर को इससे भारी धक्का पहुँचा। उसकी आर्थिक स्थिति बिलकुल खराब हो गई। उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। यह सब होते हुए भी आस्कर का धैर्य्य न टूटा। जब उसे अस्वीकृति का तार मिला, उसने पढ़ा और उसे अपने मित्र

को यह कहते हुए दिया "राबर्ट, यह तो ठीक नहीं हुआ।" 'पद्मुआ की रानी' यद्यपि देर हो जाने के कारण स्वीकृत नहीं हुई पर इसमें संदेह नहीं कि यह कवि की अपूर्व कृति है। सर्व सम्मति से भी यह इस समय सर्वोत्तम वियोगान्त नाटक समझा जाता है।

सत्यजीवन वर्मा

अंक पहिला ।

अंक पहिला।

दृश्य

पडुआ की मंडी में मध्याह्न का समय; सामने पडुआ का विशाल गिरजाघर, सफ़ेद और काले संगमरमर की बनी हुई रोमन ढंग की इमारत; संगमरमर की बनी सीढ़ियां गिरजाघर के द्वार तक जाती हैं; सीढ़ियों के नीचे दोनों ओर संगमरमर के दो शेर; रंगमंच की दोनों ओर मकानोंकी खिड़कियों पर रंगीन परदा पड़ा हुआ, पत्थर की मेहराब में मढ़ी हुई; रंगमंच की दाहिनी ओर सार्वजनिक फ़ौआरा, हरे कांसे की बनी मूर्ति मुख से शंख फूंकती हुई, फ़ौआरे की चारों तरफ़ पत्थर के बने आसन; गिरजा का घंटा बज रहा है, और नागरिक, पुरुष, स्त्री और बच्चे उसमें जा रहे हैं।

[गाइडो फेरांटी और अस्केनियो क्रिस्टोफ़ेनो आते हैं]

अस्केनियो

अपनी जान की क़सम, गाइडो ! मैं एक पग आगे न बढ़ूँगा। बस, अगर एक क़दम आगे बढ़ा तो क़सम खाने को भी मेरी जान न बचेगी। यह तुम्हारा हवा के पीछे दौड़ना !

[फ़ौआरे की सीढ़ी पर बैठ जाता है।]

गाइडो

मेरी समझ में यही जगह होगी।

[एक राहगीर के समीप जाकर अपनी टोपी उतार कर प्रणाम करता हुआ]

क्यों जनाब, यही मंडी है ? और वह सेंटा क्रोस का गिरजा ?

[नागरिक सम्मतिसूचक सिर हिलाता है]

धन्यवाद, महाशय !

अस्केनियो

अब ?

गाइडो

अरे ! यही तो है।

अस्केनियो

अच्छा था अगर और कहीं होता। यहां तो कोई कलवरिया भी नहीं है।

गाइडो

[अपनी जेब से एक पत्र निकालता है और पढ़ता है]

'समय दोपहर, नगर पडुआ, स्थान बाज़ार, और दिन महात्मा फिलिप दिवस।'

अस्केनियो

और उस पुरुष के बारे में, हम उसे पहचानेंगे कैसे ?

गाइडो

[पढ़ता हुआ]

'मैं हलके बैंगनी रंग का लबादा पहनूंगा, कंधे पर सफ़ेद बाज़ ज़री में बना हुआ होगा।' यह तो वीर का पहनावा होगा, अस्केनियो !

अस्केनियो

मैं भी चाहता हूँ जल्दी ज़िरह वख्तर पा जाऊँ। क्या तुम समझते हो वह तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में बतलायेगा ?

गाइडो

क्यों ?—नहीं क्यों ? अब से एक महीने पहले, तुम्हें याद होगा, मैं अपने अंगूर की बाड़ी के उस कोने में खड़ा था जो सड़क के किनारे पर है—यहीं से बकरियां भीतर आती थीं, उसी समय एक आदमी घोड़े पर सवार मेरे पास आया था और उसने मुझसे पूछा कि क्या मेरा ही नाम गाइडो है। उसी ने मुझे यह पत्र दिया था जिस पर लिखा था 'तुम्हारे पिता का मित्र'। उसी में यह भी था कि यदि मैं अपने जन्म का रहस्य जानना चाहता हूँ तो इस स्थान पर आज मिलूँ। उसमें लेखक की पहचान भी लिखी थी। सदा से मैं बूढ़े पेडरो को अपना चचा समझता था पर उनके कथन से मुझे मालूम हुआ कि बात ऐसी नहीं है। उनका कहना है कि मुझे बचपन ही में किसी ने उनके हाथों सौंप दिया था जिसे उन्होंने फिर कभी देखा ही नहीं।

अस्केनियो

और तुम्हें पता ही नहीं कि तुम्हारे पिता कौन हैं ?

गाइडो

न— ।

अस्केनियो

कुछ स्मरण भी नहीं है ?

गाइडो

बिलकुल नहीं, अस्केनियो—रत्ती भर भी नहीं !

अस्केनियो

[हँसकर]

जान पड़ता है उसने तुम्हें उतनी कनेठियां नहीं दी हैं जितनी मेरे पिता ने मुझे दी थीं।

गाइडो

[हँसकर]

तुम उसके योग्य तो नहीं थे ।

अस्केनियो

कभी नहीं ! और इसी से और बुरा हुआ। मुझे अपनी गलती ही नहीं जान पड़ी कि उससे मैं बच सकूँ। हाँ, कौन सा समय तुम कहते थे उसने नियत किया है ?

गाइडो

दोपहर।

[गिरजे की घड़ी बजती है।]

अस्केनियो

लो, समय तो हो गया। तुम्हारा आदमी तो नहीं आया। मुझे तो उस पर विश्वास नहीं होता, गाइडो ! मेरी समझ में किसी युवती की तुम पर आँखें गड़ गई हैं। अच्छा, अब जैसे मैं तुम्हारे पीछे पेरूगिया से पडुआ तक आया हूँ—वैसे अपनी क़सम ! तुम्हें भी मेरे साथ पास की कलवरिया तक चलना पड़ेगा।

[उठता है]

पेट देवता की क़सम, गाइडो ! मैं ऐसा भूखा हूँ जैसे विधवा पति के लिए, ऐसा थका हूँ जैसे कुमारी कन्या

अच्छी शिक्षाओं से, और मुझे अमल ऐसी सता रही है जैसे पादड़ियों के उपदेश सुनते समय नींद। चलो, गाइडो ! तुम व्यर्थ में मूर्ख की भाँति यहाँ खड़े हो, तुम्हारा आदमी कभी आवेगा नहीं।

गाइडो

हाँ, तुम्हारी ही बात ठीक जान पड़ती है। अच्छा !

[जैसे ही वह अस्केनियो के साथ प्रस्थान करता है लार्ड मोरेनज़ो बैंगनी लबादा पहने हुए आता है। उसके कंधे पर सफ़ेद बाज़ कढ़ा हुआ है ; वह गिरजे की ओर जाता है ; उसे भीतर जाते हुए गाइडो देखता है और दौड़ कर उसे रोक लेता है।]

मोरेनज़ो

गाइडो फ़ेरांटी, तुम ठीक समय पर आये।

गाइडो

अच्छा ! क्या मेरा पिता जीवित है ?

मोरेनज़ो

हाँ! तुम में जीवित है। तुम क़द, गढ़न, चाल, ढाल और सभी प्रकार देखने में उसी की तरह हो। मुझे विश्वास है उसी की भाँति ऊँचे विचार भी तुम्हारे होंगे।

गाइडो

अजी, मेरे पिता की बात कहो; इसी को सुनने के लिये मैं अभी तक जीवित हूँ।

मोरेनज़ो

एकान्त में चलो।

गाइडो

ये मेरे परम मित्र हैं, केवल स्नेह वश पडुआ तक मेरे साथ आये हैं। हम दोनों में भाई भाई की भाँति कोई परदा नहीं है।

मोरेनज़ो

पर एक बात तुम्हें उनसे छिपानी ही पड़ेगी। उनसे कहो कि यहां से अलग चले जाँय।

गाइडो

[अस्केनियो से]

थोड़ी देर में आना। इसे क्या पता कि संसार में कोई भी वस्तु हमारी मैत्री के आईने को मैला नहीं कर सकती! एक घंटे में आ जाना।

अस्केनियो

गाइडो! उसके पास न फटकना। उसकी आँखें भयानक दीखती हैं।

गाइडो

[हँसता है]

नहीं! नहीं! निस्संदेह वह मुझ से यही बतलाने आया है कि मैं इटाली के किसी भारी ख़ानदान का हूँ। हम लोग अब बहुत दिनों तक मज़े में रहेंगे। थोड़ी देर में— भाई अस्केनियो!

[अस्केनियो जाता है]

हाँ! तो मेरे पिता के बारे में बतलाओ।

[पत्थर के आसन पर बैठता है]

क्या वह लाँबा था ? मैं बद के कहता हूँ, वह अपने घोड़े पर लाँबा दिखाई पड़ता था। क्या उसके केश काले थे, अथवा कदाचित सोनहले ? क्या उसकी आवाज़ धीमी थी ? बहादुर आदमियों की वाणी मधुर और गंभीर होती ही है ; अथवा क्या यह कड़कड़ाती हुई थी जिसे सुनकर वैरियों के पैर आगे न बढ़ते थे ? क्या वह अकेला घोड़े पर चलता था, अथवा उसके साथ उसके ज़िमीदार और उसके बहादुर साथी भी रहते थे ? मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि मेरी नसों में राजा का रक्त बह रहा है। क्या वह राजा था ?

मोरेनज़ो

हाँ! मनुष्यों में वह राजा ही के समान था।

गाइडो

[गर्व से]

और जब तुमने मेरे पिता को पिछली बार देखा था तो उसका औरों से अधिक आदर था ?

मोरेनज़ो

हाँ! औरों से अधिक आदर हुआ था—

[गाइडो के पास पहुँच कर उसके कंधे पर हाथ रखकर]

और रक्तमय सूली पर, जल्लाद के कुल्हाड़े से—

गाइडो

[उछल कर]

अजीब भयानक आदमी हो तुम—मन्हूस घुग्घू की तरह जान पड़ता है तुम क़ब्र से मुझे यह भीषण समाचार सुनाने आये हो!

मोरेनज़ो

मुझे यहां लोग कौन्ट मोरेनज़ो कहते हैं। उजाड़ पहाड़ी पर मेरा कोट है, आस पास कुछ बीघे बंजर ज़मीन और मेरे पास दो ही चार नौकर हैं। परन्तु मैं 'पारमा' के कुलीन कुमारों में से हूँ। इसके अतिरिक्त मैं तुम्हारे पिता का मित्र था।

गाइडो

[उसका हाथ पकड़ कर]

तो मुझसे उसका हाल कहो।

मोरेनज़ो

तुम प्रसिद्ध राजा लोरेंज़ो के पुत्र हो, वह पारमा के वंश का था और लोम्बारडी से लेकर फ़्लोरेन्स तक के समग्र सुन्दर प्रदेश का वह अधिपति था—नहीं! नहीं! फ़्लोरेंस भी उसे कर दिया करता था—

गाइडो

उसकी मृत्यु की बात पर आओ।

मोरेनज़ो

उसे भी कहता हूँ। युद्ध छिड़ा था—वह समर का शेर क्या इटाली में अन्याय होने देता था? वह चुने हुए वीरों को लेकर रिमनी के राजा गीवोनी मालाटेस्टा के विरुद्ध चल पड़ा। उस दुष्ट का सत्यानाश हो! उसने धोके

से उसे गिरफ़्तार कर लिया और वह हत्यारे अथवा साधारण अभियुक्त की भाँति बाज़ार में सूली पर चढ़ा दिया गया।

गाइडो

[अपनी खंजर पर हाथ रख कर]

क्या मालाटेस्टा जीता है ?

मोरेनज़ो

नहीं, वह मर गया है।

गाइडो

क्या कहा ?—मर गया है ? ऐ द्रुत-गामी दूत ! ऐ मृत्यु ! क्या तू क्षण भर मेरे लिए नहीं रुक सकती थी ? मैं तेरी आज्ञा का पालन स्वयं कर देता !

मोरेनज़ो

तुम अब भी कर सकते हो। वह व्यक्ति—जिसने तुम्हारे पिता को बेचा था—अब भी जीता है।

गाइडो

बेचा था ! मेरा पिता बेचा गया था ?

मोरेनज़ो

हाँ—इसी हेतु लाया गया। तुच्छ वस्तु की भाँति मूल्य के लिए लोगों ने उससे विश्वासघात किया। एक व्यक्ति से उसका मोलभाव हुआ—उसका मूल्य लिया गया। और यह सब किसके हाथों ?—उसके जिसे वह अपना परम मित्र समझता था, जिस पर उसका पूर्ण विश्वास था, जिस पर उसका अगाध स्नेह था, जिसके ऊपर उसके अनुग्रह का भारी भार था—

गाइडो

और वह जीता है जिसने मेरे पिता को बेचा था ?

मोरेनज़ो

मैं तुम्हें उसके पास पहुँचा दूँगा।

गाइडो

ख़ैर ! जूडा तू जीता है ! अच्छा, मैं इस पृथ्वी को तेरी मृत्यु का स्थल बनाऊँगा, ख़रीद ले इसे तुरन्त, यहीं तुझे मरना होगा ।

मोरेनज़ो

जूडा ? क्या कहा, लड़के ? हाँ, जूडा अपने विश्वास-घात में, परन्तु—वह जूडा से अधिक बुद्धिमान था, उसने तीस चाँदी के टुकड़ों को बहुत नहीं समझा ।

गाइडो

हाँ ! उसे मिला क्या मेरे पिता की जान के लिए ?

मोरेनज़ो

उसे मिला क्या ? क्यों ? नगर, जागीर, इलाक़ा, अंगूर की बारियाँ और भूमि—

गाइडो

जिसमें से वह केवल साढ़े तीन हाथ अपने सड़ने के लिए रख सकेगा । है कहां वह, नारकी दुष्ट, नीच, शैतान ?

है कहाँ ? दिखा दो बस उसे मुझे और चाहे वह लोह में मढ़ के आये, चाहे उसके साथ लड़ाई के सारे शस्त्र हों, इतना ही नहीं—चाहे हजारों योद्धाओं से वह घिरा हो, पर मैं उसके पास उनके भालों को पार कर के पहुँचूँगा और अपनी तलवार की धार पर उसके कलुषित हृदय का अन्तिम काला रक्त बहते हुए देखूँगा। बस, दिखा दो मुझे उस व्यक्ति को, मैं कहता हूँ न, उसकी जान लेकर ही दम लूंगा।

मोरेनज़ो

[उदासीनता से]

मूर्ख! बदले की इसमें कौनसी बात है? 'मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्' और यदि मृत्यु एकाएक आये तो और भी अच्छी बात है।

[गाइडो के समीप जाकर]

सुनो, तुम्हारे पिता के प्रति विश्वासघात किया गया था, अब तुम्हारी बारी है; अब तुम उसके बेचनेवाले को बेंचो। मैं उसके समीप तुम्हें पहुँचाये देता हूँ। तुम उसके साथ रहना, उसी के मेज़ पर उसके साथ खाना-

गाइडो

अरे दुश्मन की रोटो !

मोरेनज़ो

तेरी ज़बान तीखी है। प्रतिहिंसा उसे मधुर बना देगी। रात में तू उसका हमप्याला होगा, उसके पात्र से मदिरा पीयेगा और उसका मुँह लगा बनेगा। वह तेरी खुशामद करेगा, तुझसे स्नेह करेगा और अपनी भेद की बातों में तुझ पर विश्वास करेगा। यदि वह तुझे प्रसन्न रहने के लिए कहे, तो तू हँसना; अगर उसकी मरज़ी उदास रहने की हो तो तू घोड़े सा मुँह लटकाना ; और जब समय आ जाय—

[गाइडो तलवार पकड़ता है]

नहीं ! नहीं ! तुझ पर विश्वास नहीं, तेरा गर्म ख़ून, चंचल स्वभाव, और अति प्रबल क्रोध इस भारी बदले के लिए ठहरेंगे नहीं, वरन् प्रेम पर जा मरेंगे।

गाइडो

तू जानता नहीं मुझे—बस बतला दे मुझे उस आदमी को और मैं हर बात में तेरे इशारे पर चलूँगा।

मोरेनज़ो

अच्छा, जब मौक़ा आ जायगा, तेरा शिकार तुझपर विश्वास करने लगेगा, अवसर पक्का होगा, तो मैं एकाएक गुप्त दूत से तेरे पास संकेत भेजूंगा।

गाइडो

उसे मारूंगा कैसे, यह तो बतला दो ?

मोरेनज़ो

उस रात को तू उसके शयनागार में छिपकर जाना और स्मरण रहे—यदि वह सोता हो—पहले उसे जगाना और उसके गले पर हाथ रखकर, देखा! इस तरह—तब उससे कहना कि तू इस वंश का है, तेरे पिता का यह नाम है और क्यों तू बदला ले रहा है—उससे कहना क्षमा की भिक्षा मांगे—और जब वह मांगे, उससे कहना अपने जीवन का मूल्य निर्धारित करे, और जब वह अपना सारा धन तुझे देने पर राज़ी हो जाय तब उससे कहना तुझे धन की आवश्यकता नहीं, तेरे पास क्षमा है ही नहीं—

और चटपट अपना काम समाप्त कर देना। शपथ लो मेरे सामने, कि जब तक मैं न कहूँ—तू उसे मारेगा नहीं—नहीं तो मैं अपना रास्ता लेता हूँ और तुझे अंधकार में और तेरे पिता को बदले बिना छोड़ जाऊँगा।

गाइडो

अच्छा, पिता की तलवार की क़सम!—

मोरेनज़ो

तलवार की? उसे तो साधारण सूली चढ़ानेवाले ने सरे बाज़ार टुकड़े टुकड़े किया था।

गाइडो

तब, अपने पिता की क़ब्र की क़सम!—

मोरेनज़ो

क़ब्र? कैसी क़ब्र? तेरा पूज्य पिता क्या किसी समाधि में रखा गया था? मैंने इन्हीं आँखों देखा था उसकी मिट्टी मैदान में फेंकी गई थी, उसकी अस्थियां

सड़कों पर ठीकरे की भांति ठुकराती फिरीं, जिन्हें देखकर भिखमंगे भी आँख फेर लेते थे और उसका सिर—वह साधु सिर—कारागार की सलाख़ पर रखा गया था जिसमें लुच्चे लफंगे उसे अपनी गालियों का निशाना बनावें।

गाइडो

सच? ऐसी बात? ख़ैर, अपने पिता की कलंक-रहित स्मृति की शपथ, उसके लज्जाजनक बध की शपथ, उसके नीच मित्रों के घृणित विश्वासघात की शपथ—क्योंकि ये ही शेष हैं, मैं इन सब की क़सम खाकर कहता हूँ—मैं उसके प्राणों पर तब तक हाथ न लगाऊँगा जब तक तेरी आज्ञा न होगी। फिर—परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे, वह इस प्रकार मरेगा जैसा कुत्ता भी अब तक न मरा होगा। अच्छा संकेत? वह संकेत क्या होगा?

मोरेनज़ो

यही ख़ंजर, लड़के! यह तेरे पिता का है।

गाइडो

ओह ! मुझे देख लेने दो इसे। अब मुझे अपने प्रसिद्ध चचा की बात याद आई—उसी नेक बूढ़े की जिसे मैं घर छोड़ आया हूँ—उसने मुझ से कहा था कि बचपन में मैं जिस लबादे में लपेटा जाता था उस पर ऐसे ही दो पीले तेंतुए सोने के तारों से बने थे। इस ख़ंजर पर खुदे हुए वे मुझे भले मालूम होते हैं। उनके यहाँ होने से मेरा मतलब भी अच्छा निकलता है। अच्छा, जनाब ! मेरे लिये पिता का कोई सन्देश आप के पास है ?

मोरेनज़ो

बच्चे ! तब तेरा जन्म भी न था। जब तेरा पिता अपने कपटी मित्रों द्वारा बेंचा गया था उस समय उसके सरदारों में से अकेला मैं ही 'पारमा' में रानी के कानों तक ख़बर पहुँचाने को बच निकला था।

गाइडो

मेरी माता का ही हाल बतलाओ।

मोरेनज़ो

जब तेरी माता ने मुझसे इस विश्वासघात का समाचार सुना, वह मूर्च्छित हो गई और असामयिक प्रसव पीड़ा से पिड़ित होकर उसने तुझे जन्म दिया। इसके पश्चात् उसकी आत्मा स्वर्ग के द्वार पर तेरे पिता की प्रतीक्षा करने चली गई।

गाइडो

माता मृत्यु के मुख में गई! पिता बेचा गया! उसका मोल भाव हुआ! जान पड़ता है मैं आफ़तों में घिरा हूँ। क्षण क्षण पर भयानक ख़बरें सुन पड़ती हैं। साँस लेने दो मुझे, मेरे कान थक गये हैं।

मोरेनज़ो

जब तेरी माँ मरी, तो शत्रुओं के भय से मैंने यह भी प्रसिद्ध कर दिया कि तू भी मर गया और तुझे चुपके से एक बूढ़े के घर पहुँचा दिया, जो पेरूगिया के पास रहता था। इसके बाद जो कुछ हुआ तू जानता ही है।

गाइडो

इसके उपरान्त क्या तुम पिता जी से मिले ?

मोरेनज़ो

हाँ! एक बार; मलिन भेष में खेतिहर की भांति मैं चोरी से रिमिनी गया था।

गाइडो

[उसका हाथ पकड़ कर]

ऐ उदारात्मा !

मोरेनज़ो

रिमिनी में रुपया सब कुछ करा सकता है और मैंने जेल रक्षकों को घूस देकर मिलाया! जब तेरे पिता ने सुना कि उसके पुत्र उत्पन्न हुआ है तब टोप के भीतर से उसका चेहरा ऐसा चमक उठा मानो समुद्र में दूर पर लगी हुई दवाग्नि दिखाई पड़ती हो। और गाइडो! उसने मेरे दोनों हाथ पकड़ कर मुझे अज्ञा दी थी कि उसके पुत्र को

मैं उसीके योग्य बनाऊँ। इसी लिए मैंने तुम्हें इतना बड़ा किया है कि तुम उसकी मृत्यु का बदला उसके उस मित्र से लो जिसने उसे बेंचा था।

गाइडो

बड़ा उपकार किया आपने; अपने पिता की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। अच्छा, उसका नाम ?

मोरेनज़ो

तुझे देखकर मुझे उसकी याद आ जाती है। तेरी सारी अदाएँ तेरे पिता जैसी हैं।

गाइडो

उस विश्वासघाती का नाम ?

मोरेनज़ो

अभी मालूम हो जायगा। राजा और उसके दरबार के सभ्यगण इधर ही आ रहे हैं।

गाइडो

इससे क्या ? उसका नाम ?

मोरेनज़ो

क्या ये लोग शरीफ़, सच्चे, सभ्य वीर गण नहीं जान पड़ते ?

गाइडो

उसका नाम, जनाब ?

[पडुआ के राजा आते हैं साथ में कौंट बारडी, माफ़ियो, पेटरूसी और उसके दरबार के अन्य सभासद हैं ।]

मोरेनज़ो

[शीघ्रता से]

जिसे मैं प्रणाम करता हूँ यही तेरे पिता का बेचनेवाला है । ग़ौर से देखना मुझे ।

गाइडो

[अपने ख़ंजर को कस कर पकड़ता हुआ]

राजा !

मोरेनज़ो

अपनी छुरी पर से हाथ हटा। इतनी जल्दी तू भूल जाता है !

[राजा को झुक कर प्रणाम करता है]

धर्मावतार !

राजा

स्वागत है, सरदार मोरेनज़ो । बहुत दिनों पश्चात् तुम्हें पडुआ में देखा है । कल हम लोग तुम्हारे कोट के पास शिकार खेल रहे थे—उसीको तुम अपना कोट कहते हो ? उस मनहूस मकान को जिसमें बैठकर तुम माला फेरते हुए भले बूढ़े की भांति अपने पापों का प्रायश्चित्त करते हो ।

[गाइडो को देख लेता है और चौंक कर पीछे हटता है]

यह कौन है ?

मोरेनज़ो

मेरी बहन का लड़का, मेहरबान ! जो हथियार उठाने लायक होने के कारण कुछ दिनों तक आप के दरबार के आश्रय में रहेगा ।

राजा

[अभी तक गाइडो को देखता हुआ]

इसका नाम ?

मोरेनज़ो

गाइडो फेरांटी, सरकार !

राजा

स्थान ?

मोरेनज़ो

मांटूआ का पैदा है।

राजा

[गाइडो की ओर बढ़ कर]

तेरी आँखें तो उसकी भाँति हैं जिसे मैं जानता था, पर वह लावारिस मरा था। लड़के तू इमानदार है ? तो अपनी इमानदारी फ़जूल न ख़र्च करना, उसे अपने ही तक रखना, पडुआ में लोग इसे आडंबर समझते हैं, इस

लिये इसका यहां व्यवहार नहीं करते। इन साहबों को देखो।

कौन्ट बारडी

[स्वगत]

अच्छा, हमारे ऊपर कुछ बौछार है।

राजा

क्यों, इनमें हर एक अपने फ़न का उस्ताद है, पर सच पूछो, उनमें अनेक तो बड़े मंहगे भी हैं।

कौन्ट बारडी

[स्वगत]

यह लो हुई न !

राजा

इस लिये ईमानदार मत होना, विलक्षणता ऐसी वस्तु नहीं है जिसे उत्साहित किया जाय। यद्यपि हमारे इस मंद मूढ़ ज़माने में सब से भारी विलक्षण बात जो मनुष्य कर सकता है वह यह है कि वह बुद्धि रखे। तब तो



लोग उसपर हँसेंगे। और लोगों को घृणा की दृष्टि से देखा—जैसे मैं देखता हूँ। मैं उनकी क्षणभंगुर प्रसंशा और साररहित कृपा को इस दृष्टि से देखता हूँ, कि सर्व प्रियता ही एक अनादर है जिसका मैं अभी तक पात्र नहीं हो सका।

माफ़ियो

[स्वगत]

घृणा के तो खूब हुए, जी भरके।

राजा

दूरदर्शिता से काम लेना, लोक व्यवहार में जल्दबाज़ी न करना, सदा अपने दूसरे विचारों पर चलना, पहले बहुधा अच्छे होते हैं।

गाइडो

[स्वगत]

ज़रूर इसके मुंह में साँप है, तभी यह ज़हर उगल रह है।

राजा

सदा याद रखो तुम्हारे भी शत्रु हैं, नहीं तो संसार तुम्हारा कुछ भी ख्याल न करेगा—यही उसकी शक्ति की परीक्षा है। फिर भी ध्यान रहे कि सदा सब को बनावटी मुसकराहट से मैत्री भाव दिखाते रहो जब तक वे तुम्हारी मुट्ठी में भली भाँति न आ जायँ। और जब आ जायँ तुम मज़े में उन्हें मिट्टी में मिला सकते हो।

गाइडो

[स्वगत]

ज्ञानी दार्शनिक! अपने ही लिये इतनी गहरी क़ब्र खोद रहा है?

मोरेनज़ो

[गाइडो से]

उसकी बातों पर ध्यान दे रहो है न?

गाइडो

हाँ! निश्चिन्त रहिये! खूब!

राजा

और अधिक संकोची न होना ! खाली हाथ दुनिया में दुर्गति है। यदि तू जीवन में सिंह का भाग चाहता है तो तुझे लोमड़ी का बाना पहनना पड़ेगा। निश्चय, यह तेरे योग्य होगा। यह सभी को ठीक उतरता है।

गाइडो

श्रीमान् ! मैं याद रक्खूंगा।

राजा

ठीक लड़के, बहुत ठीक। मैं उन ओछे मूर्खों को अपने पास नहीं रखना चाहता, जो नीच संकोच के बटखरे से जीवन के सोने को तोला करते हैं और लड़खड़ा कर अन्त में असफल हो जाते हैं। असफलता—यही अपराध मुझ से अभी तक नहीं हो पाया है। मैं अपने पास मर्दों को रखना चाहता हूँ। अन्तःकरण—आत्मा—उसका नाम है जो कायरता संग्राम से भागती हुई अपनी ढाल पर

अंकित कर जाती है। मेरी बात समझ में आ रही है, लड़के ?

गाइडो

हाँ, श्रीमान् ! समझ रहा हूँ और प्रत्येक कार्य्य में मैं उसी नीति का व्यवहार करूँगा जो आपने अभी मुझे सिखाई है।

माफ़ियो

श्रीमान् ! आप ने तो आज .खूब उपदेश दिया। धर्मगुरु तो बस नाम भर के रह गये।

राजा

धर्मगुरु ! लोग चलते हैं मेरे धर्म पर, और नाम लेते उनका हैं। धर्माध्यक्ष की मैं अधिक परवा नहीं करता। धार्मिक पुरुष हैं और मैं उनकी मूढ़ता स्वीकार करता हूँ। अच्छा जनाब, आज से आप की गिनती हमारे खास लोगों में होगी।

[अपना हाथ गाइडो के चूमने के लिए बढ़ाता है।
गाइडो डर से पीछे हट जाता है पर मोरेनज़ो
का इशारा पाकर झुकता और चूमता है।]

अच्छा, तुम्हारे पद और हमारी मर्य्यादा के योग्य तुम्हारे लिए सारी व्यवस्था की जायगी।

गाइडो

मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ, श्रीमान्!

राजा

फिर तो बतलाना तुम्हारा नाम क्या है?

गाइडो

गाइडो फेरांटी, श्रीमान्!

राजा

और तुम मंडुआ निवासी हो? अपनी पत्नियों को संभालियेगा, साहबान! जब कहीं ऐसा रसिक पडुआ में आ जाय। आप ख़ूब हँस रहे हैं, नवाब बारडी! मुझे मालूम है वे पति बड़े आनन्द में रहते हैं जिनके घर कुरूप स्त्री होती है।

माफ़ियो

श्रीमान्! स्मरण रखें पडुआ की स्त्रियां संदेह से परे हैं।

राजा

क्या कहा? क्या वे ऐसी बदक़िस्मत हैं! अच्छा, अब चलना चाहिए। यह धर्मगुरु हमारी धर्मात्मा रानी को देर से रोके है। उसकी दाढ़ी और उसके उपदेश दोनों को तराशने की ज़रूरत है। क्यों, जनाब? क्या आप हमारे साथ धर्मपुस्तक सुनने चलते हैं?

मोरेनज़ो

[प्रणाम करके]

सरकार! कुछ आवश्यक कार्य्य है—

राजा

[बात काटकर]

उपासना से बचने के लिए कोई बहाना न चलेगा। आइये, चलिये साहब!

[दरबारिओं के साथ गिरजा में प्रवेश]

गाइडो

[कुछ चुप रहकर]

अच्छा, राजा ने मेरे पिता को बेचा ? और मैंने उसी का हाथ चूमा।

मोरेनज़ो

तुझे ऐसा अनेकों बार करना पड़ेगा।

गाइडो

क्या यह जरूरी है ?

मोरेनज़ो

हाँ ! तू ने शपथ ली है।

गाइडो

वह शपथ मुझे पत्थर बना देगी ?

मोरेनज़ो

आशीर्वाद, लड़के ! मैं तब तक न आऊँगा जब तक समय न आयेगा।

गाइडो

परमात्मा करे तुम जल्दी आओ !

मोरेनज़ो

मैं तो आऊँगा ही जब समय आयेगा। तय्यार रहना—

गाइडो

मेरी ओर से निश्चिन्त रहना।

मोरेनज़ो

यह है तेरा मित्र ; स्मरण रहे उसे हृदय और पडुआ दोनों से दूर रखना।

गाइडो

पडुआ से, हृदय से नहीं।

मोरेनज़ो

नहीं, अपने हृदय से भी। मैं तब तक तेरा पिंड न छोड़ूँगा जब तक तू यह कार्य्य नहीं कर लेता।

गाइडो

क्या मुझे मित्र को भी छोड़ना पड़ेगा ?

मोरेनज़ो

बदला तेरा मित्र होगा। तुझे और किसकी ज़रूरत है ?

गाइडो

अच्छा, तब ऐसा ही होगा।

[अस्केनियो क्रिस्टोफ़ेनो आता है]

अस्केनियो

आओ, गाइडो, मैं सदा तुम्हारा सब बातों में साथी था। मैंने कुप्पा भर शराब पी, ख़ूब कबाब उड़ाया और उस हसीना के बोसे लिये जो परोसने आई थी। यह क्या ? तुम इस तरह उदास जान पड़ते हो जैसे कोई स्कूल का लड़का जो सेब नहीं ख़रीद सका अथवा कौंसिल का मेम्बर जो अपना 'वोट' नहीं बेच पाया। क्या बात है, गाइडो ? बात क्या है ?

गाइडो

कुछ नहीं हम दोनों को अलग होना पड़ेगा, अस्केनियो !

अस्केनियो

हो सकता है, पर यह सच नहीं है।

गाइडो

बिल्कुल सच है, तुम्हें यहाँ से जाना पड़ेगा, अस्के-नियो। और फिर मुझ से कभी न मिल पाओगे।

अस्केनियो

नहीं ! कभी नहीं ! गाइडो, तुमने मुझे पहचाना नहीं। यह सच है कि मैं साधारण सिपाही का लड़का हूँ, मुझे अधिक सौजन्य दिखाना नहीं आता। पर यदि तुम अमीर के लड़के हो—तो क्या मैं तुम्हारा सेवक नहीं बन सकता ? मैं और सेवकों की अपेक्षा अधिक प्रेम से तुम्हारी सेवा करूँगा।

गाइडो

[उसका हाथ पकड़कर]

अस्केनियो !

[मोरेनज़ो को अपनी ओर देखते देख अस्केनियो का हाथ छोड़ देता है]

यह असम्भव है।

अस्केनियो

क्यों, क्या ऐसी बात है ? मैं समझता था कि पुराने समय की मित्रता अभी मरी नहीं है। और कदाचित् इस कलियुग में भी वह प्राचीन मैत्री प्रेम के प्रतिरूप में प्रकट हो सके। और ऐसे ही प्रेम से प्रेरित होकर—जो हमारे हृदयों के बीच ग्रीष्म के समुद्र की भाँति हिलोरे लेता है—क्या मैं तुम्हारे दुखसुख में हाथ नहीं बटा सकता ?

गाइडो

हाथ बटाना ?

अस्केनियो

हाँ !

गाइडो

नहीं ! कदापि नहीं !

अस्केनियो

क्या तुम्हें कोई विरासत मिल गई है किसी शानदार महल या किसी गड़े हुए ख़ज़ाने की ?

गाइडो

[रुखाई से]

हाँ ! मुझे अपनी विरासत मिल गई है—ख़ूनी पैतृक सम्पत्ति और घातक तहसील जिसे चतुर सूम की भाँति जमा कर मैं केवल अपने ही पास रखूँगा। इस लिए तुम से कह रहा हूँ—हम यहीं से अलग हो जाँय।

अस्केनियो

क्या, फिर कभी हम उस भाँति हाथ में हाथ डाल कर न बैठ पायेंगे जैसे पहले—जब हम पाठशाला से छिप कर सच्ची छुट्टी मनाते हुए किसी प्राचीन वीरगाथा को लेकर बैठते थे, और शिकारियों के पीछे बसन्त के बनों में

चक्कर लगाते हुए बहरियों को फुंदनेदार लंगरों को तोड़कर झाड़ी से निकलते ही खरगोशों पर झपटते देखते थे।

गाइडो

अब कभी नहीं।

अस्केनियो

क्या मैं चला जाऊँ और तुम प्रेम के एक शब्द भी न कहो ?

गाइडो

हाँ, जाओ और अभी ; प्रेम को भी अपने साथ लेते जाना।

अस्केनियो

तुम्हारा आचरण वीरोचित नहीं है, उदार नहीं है।

गाइडो

अच्छा, ऐसा ही सही। तो व्यर्थ बकवाद से लाभ ? अब तुम जाओ।

अस्केनियो

कोई संदेसा कहते हो, गाइडो ?

गाइडो

कुछ नहीं, अभी तक मेरा जीवन विद्यार्थी का स्वप्न था आज से मेरे जीवन का आरंभ होता है।

अस्केनियो

प्रणाम ! मैं भी चला।

[धीरे-धीरे जाता है]

गाइडो

अब तुम संतुष्ट हुए ? क्या देखा नहीं ? अपने परम मित्र और अत्यन्त प्रिय साथी को मैं ने कुत्ते की भाँति अपने पास से दुत्कार दिया। हा ! मुझे ऐसा करना पड़ा ! —क्या आप संतुष्ट नहीं हुए ?

मोरेनज़ो

हाँ ! मैं संतुष्ट हुआ। अब मैं चला। संकेत मत भूलना—तुम्हारे पिता का ख़ंजर ! तभी काम करना जब वह तुम्हारे पास पहुँच जाय।

गाइडो

निश्चिन्त रहिये, ऐसा ही करूँगा।

[मोरेनज़ो जाता है]

ऐ अनन्त आकाश! यदि मेरी आत्मा में तनिक भी सौम्य करुणा अथवा मूढ़ दया की मात्रा हो तो तू उसे सुखा कर, जलाकर खाक़ कर दे। और यदि तू न करेगा तो मैं अपने हाथों तेज छुरे से करुणा को अपने हृदय से काट फेंकूँगा और दया का रात में सोते समय गला घोंट दूँगा। जिसमें फिर वह मुझ से कुछ न कह पाये। प्रतिहिंसा! तू मुझे मिल गई। मेरे साथ रह, तू मेरे साथ सो, मेरे पास बैठ, और मेरे साथ घोड़े पर शिकार को चल। जब मैं थक जाऊँ मेरी मधुर संगीत तू मुझे सुना। जब मैं प्रसन्नचित्त रहूँ तू मुझसे परिहास कर, और जब मैं स्वप्न देखने लगूँ तू मेरे कानों में धीरे धीरे मेरे पिता की हत्या का भीषण रहस्य सुना। क्या कहता हूँ! हत्या?

[अपनी तलवार खींच लेता है]

सुन ले! ऐ भीषण दैव! शपथ तोड़नेवालों पर क़हर ढानेवाले! किसी फ़िरिश्ते को आज्ञा दे कि वह मेरे इस शपथ को अग्नि के अक्षरों में लिख ले—कि इस घड़ी से

जब तक मैं अपने पिता की हत्या का बदला .खून से नहीं ले लेता तब तक मैं हराम समझूँगा—आदरणीय मित्रता के पवित्र बन्धनों को, दोस्ती के पाक मज़े को, प्रेम की स्वर्णशृंखला को, और राजा के प्रति कृतज्ञता को—इतना ही नहीं, इसी घड़ी से मैं पाप समझूँगा स्त्री-प्रेम को और उस निस्सार वस्तु को जिसे लोग सौन्दर्य्य कहते हैं—

[गिरजा का ऑरगन ज़ोर से बजता है, और ज़री के चंदवे के नीचे जिसे चार लाल वस्त्रधारी नौकर लिये जा रहे हैं, पडुआ की रानी सीढ़ियों के नीचे उतरती है; जैसे वह उधर जाती है गाइडो और उसकी आँखें चार होती हैं, और रंगमंच से जाते समय वह गाइडो को मुड़कर देखती है, और गाइडो के हाथ से ख़ंजर गिर पड़ता है।]

ऐं ! यह कौन ?

एक नागरिक

पडुआ की रानी !

अंक दूसरा ।

अंक दूसरा ।

दृश्य

राजमहल की बैठक, दीवाल पर परदे लटके हुए जिस पर मदन देवता के चेहरे बने हुए हैं ; बीच में एक बड़ा दरवाज़ा बरामदे की ओर खुलता है जो लाल पत्थर का बना है जिसमें से पडुआ का दृश्य दिखाई पड़ता है, दाहनी ओर कोने में एक बड़ा चँदवा जिसमें तीन सिंहासन रखे हैं उनमें एक औरों से कुछ नीचा है ; छत में सोनहरी शहतीरें लगी हैं, उसी काल के सब असबाब हैं, कुरसियों पर सोनहला चमड़ा जड़ा है, और तिपाइयों में सोना जड़ा हुआ । अलमारियों पर पौराणिक दृश्य अंकित हैं। कुछ सभासद गण बरामदे से नीचे सड़क की ओर देख रहे हैं, सड़क से जनता की आवाज और 'मौत हो इस राजा की' चिल्लाहट सुनाई पड़ती है । थोड़ी देर के बाद राजा बड़े इतमीनान से आता है, वह गाइडो फेरान्टी के कंधे पर झुका हुआ है । उसके साथ लार्ड कार्डिनल (धर्माध्यक्ष) आता है, जनता अभी तक चिल्ला रही है ।

राजा

नहीं, धर्माध्यक्ष जी, मैं ऊब गया हूँ उससे। क्यों, उसमें यही तो दोष है कि वह अच्छी है।

माफ़ियो

[घबड़ाहट से]

श्रीमान्, यहाँ दो हज़ार आदमी इकट्ठे हैं। ये क्षण पर क्षण अधिक शोर गुल करते जा रहे हैं।

राजा

हटो, जी, वे व्यर्थ गला फाड़ रहे हैं! सभासद गण! जो लोग इस प्रकार चिल्लाते हैं कुछ नहीं कर सकते; मुझे डर केवल चुप्पे लोगों का रहता है।

[लोगों की चिल्लाहट सुनाई पड़ती है]

आप देख रहे हैं धर्माध्यक्ष जी, मेरी प्रजा मेरा कैसा मान करती है।

[फिर शोर सुनाई पड़ता है]

जाओ पेट्रूसी, और नीचे सिपाहियों के सरदार से कहो कि हाते से हटा दे इन लोगों को। क्यों, सुनाई नहीं पड़ा ? जैसा कहता हूँ जाकर करो।

[पेट्रूसी जाता है]

धर्माध्यक्ष

श्रीमान् ! मेरी प्रार्थना है उनकी फ़रियाद सुन ली जाय।

राजा

[अपने सिंहासन पर बैठता हुआ]

हाँ ! सफ़तालू इस साल तो उतने बड़े नहीं हुए जैसे पार साल थे। क्षमा कीजियेगा, धर्माध्यक्ष जी ! मैंने समझा था आप सफ़तालुओं की बात कर रहे हैं।

[जनता का जयघोष सुनाई पड़ता है]

यह क्या ?

गाइडो

[खिड़की की ओर झपटता है]

रानी साहबा आंगन में पहुँच गई हैं, और जनता और सिपाहियों के बीच पड़कर उन्हें तीर नहीं चलाने देतीं।

राजा

जहन्नुम में जाय वह !

गाइडो

[अभी तक खिड़की पर]

और कुछ नागरिकों को लेकर महल में आ पहुँची हैं।

राजा

[चौंक कर]

ईश्वर जानता है! रानी का साहस बढ़ता ही जा रहा है।

बारडी

आ रही हैं रानी साहबा !

राजा

वह दरवाजा बन्द तो कर देना ; सवेरे की हवा ठंढी चल रही है।

[बरामदे की ओर का द्वार बन्द कर दिया जाता है]

[रानी आती है उसके पीछे कुछ नागरिक हैं जिनके कपड़े तक ठिकाने के नहीं हैं।]

रानी

[अपने घुटनों पर झुक कर]

श्रीमान् ! आप से बिनती है कि हमारी सुनवाई हो ।

राजा

क्या फ़रियाद है ?

रानी

हा ! राजा साहब ! ऐसी साधारण बात है जिस पर आप का या इनमें से किसी महाशय का ध्यान भी न जाता होगा । उनका कहना है रोटी—रोटी जो वे खाते हैं—रद्दी चोकर की होती है ।

पहला नागरिक

सरकार ! सचमुच बिलकुल चोकर की ।

राजा

बड़ा ही अच्छा भोजन, ये तो मैं अपने घोड़ों को खिलाता हूँ ।

रानी

[अपने को रोक कर]

उनका कहना है पानी जो उनके हेतु शहर की टंकियों में भरा रहता है जल कल के टूट जाने के कारण गंदे और मैले हो गये हैं।

राजा

उन्हें शराब पीनी चाहिये, जल सचमुच अस्वास्थ कर है।

दूसरा नागरिक

हा ! श्रीमान् ! चुंगी जो शहर के फाटक पर ली जाती है इतनी बढ़ गई है कि हम शराब खरीद ही नहीं सकते।

राजा

तब तो तुम्हें चुंगी को धन्यवाद देना चाहिए जिसके कारण तुम लोग शराब नहीं पी पाते।

रानी

ज़रा सोचिए, हम यहाँ शान से बैठ कर मौज करते हैं वहाँ घोर दरिद्रता अंधेरी गलियों से होती हुई चुपके से बच्चों के गलों पर छुरी चलाती है। हम सांस तक नहीं लेते ! हमारे कानों पर जूँ तक नहीं रेंगता।

तीसरा नागरिक

हाँ, सच तो है ! बिलकुल ठीक ! मेरा छोटा लड़का कल रात को भूख से मर गया, केवल छः साल का था। मेरे पास कौड़ी नहीं, उसे दफ़न भी नहीं कर सकता।

राजा

यदि तुम दरिद्र हो, तो क्या तुम भाग्यवान नहीं हो ? क्यों ? दरिद्रता तो इसाई मत के अनुसार एक पुण्य है।

[धर्माध्यक्ष की ओर फिर कर]

क्यों ऐसा ही है न ? मैं जानता हूँ धर्माध्यक्ष महोदय, आपके पास बड़ी तहसीलें हैं, पैदावार गिरजे की ज़मीनें हैं, इसके अतिरिक्त दशाँश और बड़ी ज़मीदारियां अलग से

यह सब इसी लिए कि आप लोगों को दरिद्रता में प्रसन्न रहने का उपदेश दें।

रानी

नहीं ! राजा साहब ! उदारता से काम लीजिए। हम यहाँ इस शानदार महल में मजे से बैठे रहते हैं जिसके बरामदों से धूप भीतर नहीं आ पाती और जिसकी दीवाल और छतें सर्दी को बाहर ही रोक रखती हैं—यहां पडुआ के कितने नागरिक ऐसे जीर्ण झोपड़ियों में रहते हैं जिनके अनेक छिद्रों से होकर ठंढी हवा, पानी और पाला उनके साथी हो जाते हैं। कितने ऐसे हैं जो पुलों के नीचे शरद् की रातों में सोते हैं उसके बाद शीत में उनके अंग अकड़ जाते हैं और वे ज्वर के शिकार होते और—

राजा

वे परमात्मा की शरण में पहुँच जाते हैं ? यही न—रानी साहबा, उन्हें चाहिये मुझे धन्यवाद दें कि मैं उन्हें स्वर्ग पहुँचाता हूँ—क्योंकि उन्हें यहां कष्ट है।

[धर्माध्यक्ष की ओर देखकर]

क्या यह धर्म ग्रंथ में नहीं लिखा हुआ है कि हर मनुष्य को अपनी दशा से संतुष्ट रहना चाहिए जिसमें उसे ईश्वर ने रख दिया है ? मैं क्यों उसमें परिवर्तन करूं और उस सर्वज्ञ परमात्मा की बातों में हाथ डालूं, जिसने यह विधान कर दिया है कि कुछ लोग भूखों मरें और कुछ पेट फट के मरें ? मैं ने क्या संसार की रचना की है ?

पहला नागरिक

उसका कलेजा पत्थर का है !

दूसरा नागरिक

नहीं, चुप रहो, पड़ोसी ; मेरे जान धर्माध्यक्षजी हमारी ओर से कुछ कहेंगे ।

धर्माध्यक्ष

सच है, कष्ट सहना ईसाई का धर्म है, पर दया करना भी ईसाई धर्मसम्मत है । इस नगर में अनेक बुराइयां दिखाई पड़ती हैं जिनका श्रीमान् सुधार करें ।

पहला नागरिक

सुधार क्या चीज़ है ? इसका क्या अर्थ है ?

दूसरा नागरिक

निस्संदेह ! इसका अर्थ है जो जैसा है उसे वैसा ही रहने देना । नहीं, यह तो ठीक नहीं ।

राजा

सुधार, धर्माध्यक्षजी, आपने कहा सुधार ? जर्मनी में एक व्यक्ति है जिसका नाम है लूथर । वह पवित्र कैथलिक धर्म का सुधार करना चाहता है । क्या आपने उसे धर्म द्रोही नहीं घोषित किया और उसके विरुद्ध अभिशापों का उच्चारण नहीं किया ?

धर्माध्यक्ष

[अपने आसन से उठकर]

वह भेड़ों को बाड़े से बाहर ले जा रहा था । हम तो आप से उन्हें केवल भोजन देने की प्रार्थना करते हैं ।

राजा

हाँ ! उन्हें भोजन दूँगा पर उनके ऊन उतार कर। और इन विद्रोहियों के लिए—

[रानी बिनती करती है]

पहला नागरिक

यह तो कृपा के शब्द हैं। जान पड़ता है कुछ देगा हम लोगों को।

दूसरा नागरिक

सच ?

राजा

ये चिथड़े लपेटे हुए बदमाश जो पेट में राजद्रोह भरे यहां खड़े हैं।

तीसरा नागरिक

ग़रीब परवर ! हमारे पेट भर दीजिए; हम मुंह बन्द कर लेंगे।

राजा

तुम्हें मुंह बन्द करना पड़ेगा चाहे पेट भरे या न भरे। साहबान ! अब जमाना ऐसा ढीठ हो गया है कि साधारण किसान तब तक हाथ तक नहीं उठावेगा जब तक उसे मार का डर न हो। और उजड्ड कारीगर सड़कों पर शरीफ़ों को धकियाते जायेंगे।

[नागरिकों से]

फिर भी, हमारी रानी साहबा हमसे विनती करती हैं और ऐसे सुन्दर याचक की प्रार्थना अस्वीकार करनी सज्जनता और प्रेम दोनों का अभाव दिखाना होगा। अतः तुम्हारी शिकायतों के बारे में मैं बचन देता हूँ कि—

पहला नागरिक

ज़रूर टैक्स कम करने वाला है !

दूसरा नागरिक

या सब को रोटी बंटवायेगा !

राजा

अगले रविवार को, धर्माध्यक्ष जी, पवित्र प्रार्थना के पश्चात्, तुम्हें आज्ञापालन के गुणों पर उपदेश देंगे—

[नागरिक भुन भुनाते हैं]

पहला नागरिक

सच पूछो तो इससे थोड़े ही पेट भरने का !

दूसरा नागरिक

पहिले आत्मा तब परमात्मा। जब पेट खाली रहता है तब धर्म भी अच्छा नहीं लगता।

रानी

नगर-निवासियो ! तुम देख रहे हो राजा पर मेरा बस नहीं है, पर तुम्हारे बाहर जाने पर मेरा भण्डारी मेरी ओर से तुम्हें सौ रुपये बाँट देगा।

पहला नागरिक

मैं आशीर्वाद देता हूँ 'ईश्वर रानी की रक्षा करें' !

दूसरा नागरिक

ईश्वर उसे अच्छी तरह रखे !

रानी

और हर सोमवार को प्रातःकाल उनके लिये रोटी का प्रबंध होगा जिनको उसकी कमी होगी।

[नागरिक प्रशसा करते हैं और चले जाते हैं]

पहला नागरिक

[बाहर जाता हुआ]

एक बार फिर बोलो 'ईश्वर रानी की रक्षा करें' !

राजा

[उसे बुला कर]

सुनो जी, सुनो ! तुम्हारा नाम क्या है ?

पहला नागरिक

डोमीनिक, सरकार !

राजा

अच्छा नाम है ! तुम्हें डोमीनिक क्यों कहते हैं ?

पहला नागरिक

[सिर खुजलाता है]

हाँ ! क्योंकि मैं सेन्टजार्ज के दिन पैदा हुआ था ।

राजा

ठीक है! यह लो एक रुपया! क्या तुम मेरे लिए यह न कहोगे 'ईश्वर राजा की रक्षा करें'?

पहला नागरिक

[धीरे से]

ईश्वर राजा की रक्षा करें!

राजा

नहीं जी! ज़ोर से, ज़रा ज़ोर से।

पहला नागरिक

[कुछ जोर से]

ईश्वर राजा की रक्षा करें!

राजा

ज़रा और ज़ोर से। ज़रा और मन लगा कर! यह लो दूसरा रुपया।

पहला नागरिक

[उत्साह से]

ईश्वर राजा की रक्षा करे !

राजा

[मज़ाक उड़ाता हुआ]

क्यों सज्जनो ! इस बेचारे के प्रेम का मुझ पर बड़ा असर हुआ है।

[नागरिक से डाँटकर]

जाओ !

[नागरिक सलाम करके जाता है]

यही हाल है, सज्जनो, आज कल आप लोक-प्रियता ख़रीद सकते हैं। सच है हम कुछ न हुए यदि लोकप्रिय न हुए।

[रानी से]

कहिए, श्रीमती, आप हमारे नागरिकों में विद्रोह फैलाती फिरती हैं ?

रानी

श्रीमान् ! गरीबों को भी कुछ हक होता है जिसमें आप दखल नहीं दे सकते—वह हक़ है दया या करुणा का ।

राजा

अच्छा, अच्छा ! आप हमसे बहस करती हैं ? यह हैं शरीफ़ रानी साहिबा जिन के पाणिग्रहण के लिये मुझे ईटाली के तीन सुन्दर नगर दे डाले—पीसा ; जेनोआ और ओरवीटो दे दिये ।

रानी

केवल वादा किया, श्रीमान् ! दिया नहीं—उसमें भी आपने सदा की भांति अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी ।

राजा

तुम व्यर्थ हम पर आक्षेप करती हो । श्रीमतीजी ! इस में अनेक राष्ट्रीय कारण थे ।

रानी

राष्ट्र के प्रति बचन तोड़ने के लिये राष्ट्र के कौन से कारण हो सकते हैं ?

राजा

पीसा नगर के समीप जंगल में जंगली सुअर हैं। तुम्हारे भोले भाले पिता से पीसा देश देने का वादा करते समय मुझे यह स्मरण न था कि वहाँ शिकार मिलते हैं। जेनोआ में लोग कहते हैं, और निश्चय वे ठीक कहते हैं, कि उस नगर के बन्दरगाह में जितनी मछलियां लगती हैं उतनी ईटाली में और कहीं नहीं।

[एक सभासद की ओर मुँह कर के]

जनाब ! आपकी तो राक्षसी भूख ही आराध्य देवी है, आप ही रानी साहिबा के मामले में संतुष्ट कर सकते हैं।

रानी

और ओरवीटो ?

राजा

[जम्हाई लेकर]

मुझे इस समय ठीक याद नहीं आ रहा है कि क्यों मैंने अपने एकरारनामे के अनुसार ओरवीटो नहीं दिया। हो सकता है कदाचित् इस लिए कि मेरी मरज़ी न थी।

[रानी के पास जाकर]

देखो इधर श्रीमती आप यहाँ अकेली हैं, तुम्हारा बूढ़ा फ़ान्स यहां से नज़दीक नहीं है। और वहाँ भी तुम्हारे पिता के पास मुशकिल से सौ टुटरूं टूं जवान होंगे। तुम किस के भरोसे कूद रही हो ? मैं पूछता हूँ इनमें कौन साहब और कौन पडुआ का शरीफ़ आदमी तुम्हारा साथ देता है ?

रानी

कोई नहीं।

[गाइडो चौंक पड़ता है, पर अपने को रोक लेता है]

राजा

और न कोई देगा जब तक मैं पडुआ में राज करता हूँ। सुनिये, श्रीमती ! आप मेरी स्त्री हैं इस लिए आप को मेरे इच्छानुसार चलना पड़ेगा, और यदि—मेरी इच्छा है कि तुम घर पर रहो तो यह प्रासाद तुम्हारा कारागार होगा। और यदि मेरी इच्छा वह है कि आप हवा खाँय, आप तो सुबह से शाम तक ख़ाक छानती फिरेंगी।

रानी

महोदय, किस अधिकार से ?—

राजा

श्रीमती ! ऐसा ही प्रश्न एक बार मेरी दूसरी रानी ने किया था। उसकी समाधि बारथालोमी के गिरजे में बनी है और लाल पत्थरों से ; समझीं। गाइडो आना तो ! आइये साहबो ! दोपहर के शिकार के लिए हम बाज़ों को तय्यार करें। हाँ, सोच लीजिए, रानी साहबा, आप यहां अकेली हैं।

[गाइडो का सहारा लेता हुआ राजा अपने दरबारियों के साथ जाता है।]

रानी

[उनकी ओर देखती हुई]

राजा साहब ठीक कहते हैं मैं अकेली हूँ। असहाय, बदनाम और अपमानित। क्या कभी कोई नारी इस प्रकार हुई है ? पुरुष जब हम से प्रेम करते हैं हमें सुन्दरी कहते हैं, कहते हैं कि हम अपने पैर पर खड़ा होना नहीं जानतीं और—हमारे हेतु वे स्वार्थ-त्याग करते हैं। क्या कहा मैंने—प्रेम करते हैं ? नहीं ! हम उनकी सम्पत्ति हैं, उनकी गुलाम हैं—उन नीच कुत्तों से भी कम प्यारे, जो उनके हाथ चाटते हैं, उन बाजों से भी कम दुलारे जिनको

वे हाथों पर लिये रहते हैं। प्रेम करते हैं मैं कहती हूँ? नहीं, खरीदते हैं, बेचते हैं और सौदा करते हैं—हमारा शरीर उनका सम्पत्ति है। मैं जानती हूँ यह नारीमात्र की अवस्था है। प्रत्येक किसी न किसी पुरुष के गले मढ़ी जाकर उसके स्वार्थ के लिए अपना जीवन नष्ट करती है। यह नित्य का धन्धा है अतः कम खटकता है। मुझे स्मरण नहीं आता कि मैंने कभी किसी स्त्री को केवल आनन्द के लिए हँसते देखा हो—हाँ, एक को छोड़कर, वह भी रात में, राज मार्ग के ऊपर। बेचारी शृंगार किये और आनन्द की आकृति बनाये फिरती थी। मैं तो ऐसी हँसी हँस नहीं सकती—नहीं, इससे तो मरना अच्छा!

[गाइडो पीछे से छिपकर आता है। रानी मरियम के चित्र के सामने गिर पड़ती है।]

मेरी माता मरियम! क्या तेरे पास मेरे लिए कोई उपाय नहीं है।

गाइडो

अब मुझसे बरदाश्त नहीं होता। मेरा प्रेम विवश कर रहा है। मैं उससे बोलूंगा ज़रूर। देवी! क्या अपनी प्रार्थनाओं में तुम मुझे भूल गईं?

रानी

[उठती है]

केवल अभागों ही को मेरी दुआओं की जरूरत है।

गाइडो

तब तो मुझे भी चाहिए, देवी !

रानी

क्यों ? क्या राजा साहब तुम्हारी काफ़ी इज्जत नहीं करते ?

गाइडो

श्रीमती ! मुझपर राजा की कम मेहरबानी नहीं है, पर मेरी आत्मा उससे ऐसी घृणा करती है जैसे साक्षात् दुराचार से। मैं तो बड़ी नम्रता से आजन्म अपनी सेवाओं को तुम्हें समर्पण करने आया हूँ।

रानी

हा ! मैं इतनी दुखिया हूँ कि तुम्हें देने को मेरे पास धन्यवाद के शब्द तक नहीं हैं।

गाइडो

[उसका हाथ पकड़ कर]

मुझे देने को क्या तुम्हारे पास प्रेम नहीं है ?

[रानी चौंक पड़ती है । गाइडो उसके
चरणों में गिरता है ।]

देवी ! यदि मुझ से ढिठाई हुई है तो क्षमा करना ! तुम्हारी सुन्दरता ने मेरे नये खून में उबाल पैदा कर दिया है, और जब मेरे नम्र ओष्ठ तेरे सुन्दर हाथों को छूते हैं, तो मेरे प्रत्येक नसों में ऐसा तूफ़ान आ जाता है कि तुम्हारे प्रेम को पाने के लिए मैं सब कुछ करने पर उतारू हो जाता हूँ ।

[उठ खड़ा होता है]

इस सम्मान के लिए मुझे शेर को पछाड़ने को कह दो, मैं अकेला उस भयानक जन्तु से भिड़ने को तय्यार हूँ । अपने हाथों से एक छल्ला, एक नाचीज़ मुरझाया हुआ फूल, फेंक दो । मैं लड़ाई के जोखिम मैदान से उसे ले आऊँगा चाहे समस्त ईसाई राष्ट्र की सारी सेनाएं मेरा विरोध करने को खड़ी हों । यदि कह दो तो इंग्लैण्ड के विकट तट पर चढ़ाई कर उसके हाथों से तुम्हारे फ्राँस का झंडा

छीन लाऊं जो उस समुद्र के शेर ने फ्राँस से छीन लिया है। प्यारी बिट्रीस ! मुझे अपने से दूर न करो। तुम्हारे बिना मुझे प्रत्येक पल युग सा जान पड़ता है। तुम्हारा सुन्दर मुखड़ा सामने रहते, मेरे दिन सिर पर पैर रख कर भागते जान पड़ते हैं और मैं अपने जीवन को सफल समझता हूँ।

रानी

मुझे ख्याल भी न था कि मुझे कोई प्यार करेगा। क्या तुम सचमुच मुझे उतना ही प्यार करते हो जैसा तुम कहते हो ?

गाइडो

हंस से पूछना कि क्या उसे मानसरोवर से प्रेम है ! गुलाब से पूछना कि क्या उसे ओसकणों से प्रेम है ! रात्रि में मौन रहने वाले लवा पच्ची से यह पूछना कि क्या उसे ऊषा से प्रेम है !—नहीं ! यह सब तो व्यर्थ की बातें हैं। इनसे मेरे प्रेम की छायामात्र का पता चलेगा। मेरा प्रेम उस दवाग्नि के समान है जिसे समुद्र का सारा जल भी बुझाने में असमर्थ रहता है। बोलो ! क्या कहती हो ?

रानी

मैं क्या कहूँ कुछ समझ ही में नहीं आता।

गाइडो

क्या तुम यह न कहोगी कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ ?

रानी

क्या यही कहलाना चाहते हो ? क्या मैं बेधड़क कह दूं ? अच्छा होता यदि मैं तुम से प्रेम करती, गाइडो ! पर यदि मैं नहीं करती तो मैं क्या कहूँ ?

गाइडो

यदि तुम नहीं करती तो भी यही कहो कि तुम करती हो, क्योंकि तुम्हारे मुँह से झूठ मारे शर्म के सच होकर निकलेगा।

रानी

यदि मैं कुछ भी न कहूँ ? लोग कहते हैं संकल्प विकल्प में प्रेमियों को बड़ा आनन्द आता है।

गाइडो

नहीं ! संकल्प विकल्प मेरी जान ले लेगा और यदि मरना ही है तो संकल्प विकल्प में क्यों मरें ? आनन्द में न मरें। बिटीस ! बोलो मैं ठहरूँ या चला जाऊँ ?

रानी

मैं न रोकूंगी न जाने को कहूँगी। रुक कर तुम मेरा दिल चुरा लेते हो: जाते हो तो उसे तुम लिये जाते हो। गाइडो ! प्रभात के नक्षत्र भले ही गा सकते हों पर वे मेरे प्रेम का माधुर्य्य प्रकट करने में असमर्थ हैं। मैं तुमसे प्रेम करती हूँ, गाइडो !

गाइडो

[अपना हाथ फैला कर]

बिट्रीस ! कहती चलो ! मैं समझता था कि बुलबुल केवल रात्रि ही में गला खोलता है। यदि तुम चुप ही रहना चाहती हो तो मेरे ओष्ठों को उन अधर पल्लवों को स्पर्श करने दो जिन से यह संगीत निकली है।

रानी

मेरे अधरों को छूना, मेरे हृदय को स्पर्श करना नहीं है।

गाइडो

क्या उसके लिए तुम मुझे रोकती हो ?

रानी

हा गाइडो ! मेरे पास वह है कहाँ ? पहले ही दिन जब मैंने तुम्हें देखा, तुमने उसे मुझसे छीन लिया और मैं चुप रह गई। संकोची चोर की भाँति अनजान में तुम मेरे सुरक्षित खज़ाने में घुसे और मेरे पास से मेरा रत्न चुरा ले गये। कैसी अद्भुत चोरी है ! इससे तुम धनी हो गये यद्यपि तुम्हें मालूम नहीं। और मैं निर्धन होकर भी सुखी हूं !

गाइडो

[उसे अपने बाज़ुओं में कसकर]

ओह ! प्यारी ! प्यारी ! प्यारी !—नहीं प्रियतमे ! तनिक सिर उठाओ और मुझे उन ललित अधर पुटों को खोलने

दो जिनमें मधुर संगीत है, उस अमृत का अलौकिक स्वाद लेने दो जो इन अधर पुटों में भरा पड़ा है, और मुझे उस स्वर्गीय आनन्द का अनुभव करने दो जिसकी तुलना इस संसार की सारी सम्पत्ति नहीं कर सकती।

रानी

तुम मेरे आराध्य देव हो, और मेरा जो कुछ है तुम्हारा है। जो मेरे पास नहीं है तुम्हारा स्नेह मुझे उस भाँति देता जैसे कोई फजूल खर्च व्यर्थ वस्तुओं पर धन लुटाता हो।

[उसे चूमती है]

गाइडो

मैं समझता हूँ तुम्हें इस दृष्टि से देखकर मैंने धृष्टता की। कुमुदिनी प्रतापी सूर्य्य की ओर देखने में सकुचाती है और अपने कोमल पलकों को बन्द कर लेती है, परन्तु मेरी आँखें-इन दुष्ट आँखों की इतनी हिम्मत बढ़ गई है, कि अचल नक्षत्रों की भाँति एक टक तुम्हारी ओर देखती रहती हैं और तुम्हारी रूप माधुरी का भर पेट आनंद लेती हैं।

रानी

प्रियतम ! मैं तो चाहती हूँ तुम सदा मेरी ओर देखा करो। तुम्हारी निर्मल आरसी सी आँखों को जब मैं देखती हूँ तो उनमें अपना प्रतिविम्ब देखकर मैं समझ लेती हूँ कि मैं तुम्हारे दिल में घर पा गई हूँ।

गाइडो

[गोद में उठाकर]

ठहर जाइये ! सात घोड़ों के रथ पर चलनेवाले सूर्य्य देव ! और इस शुभ घड़ी को अमर कर दीजिए।

[दोनों चुप रहते हैं।]

रानी

थोड़ा नीचे। हाँ ! ठीक है, यहाँ बैठो, जिसमें कि मैं तुम्हारे बालों को हटा कर तुम्हारे सुन्दर मुखड़े को अपनी ओर घुमाकर चूम सकूँ।

रानी

क्या तुमने नहीं देखा है ? जब हम बहुत दिनों के बन्द किसी ऐसी कोठरी को खोलते हैं जिसमें सालों से किसी ने

पैर नहीं रखा, जिसकी फर्श पर मनों धूल पड़ी है, जिसमें से सीड़ की बू आ रही है—और उसकी ज़ंग खाई हुई सिटखनियों को हटा कर उसकी टूटी खिड़कियों को हवा के लिए खोल देते हैं तो कैसे सूर्य्यदेव अपनी सुन्दर किरणों से उन गन्दे धूल के कणों को नाचते हुए स्वर्ण रेणुओं में परिणत कर देते हैं ? गाइडो ! मेरा हृदय भी ऐसी कोठरी की भांति था—तुम ने अपने प्रेम की ज्योति उसमें पहुँचा कर मेरे जीवन को स्वर्णमय बना दिया। क्या तुम नहीं जानते कि प्रेम ही जीवन का सार है ?

गाइडो

और इसकी अनुपस्थिति में जीवन उस पत्थर की शिला की भांति है जो पहाड़ों में पड़ी रहता है—इसी को गढ़ कर मूर्त्तिकार देवता की मूर्त्ति बनाता है। प्रेम के बिना जीवन, नदी किनारों और दलदलों में उगनेवाले बाँस की भांति संगीत-रहित है—

रानी

और जिस प्रकार उनसे संगीतकार बांसुरी बनाकर अद्भुत राग अलापता है, उसी तरह क्या प्रेम किसी के जीवन को आनन्दमय नहीं बना सकता ?

गाइडो

प्रिये ! नारी ही उसे संभव कर सकती है। बहुत से पुरुष हैं, जो चित्र बनाते हैं मूर्त्ति बनाते हैं—एक से एक सुन्दर। पर मैं तो कहता हूँ स्त्रियाँ ही सच्ची कलाकार हैं, क्योंकि ये ही मनुष्यों के इस युग की धन लालसा में सने हुए जीवन को अपने प्रेम से सुन्दर बनाती हैं।

रानी

आह, प्यारे ! अच्छा होता हम तुम दोनों निर्धन होते दरिद्र जिनमें प्रेम है बड़े सुखी हैं।

गाइडो

एक बार फिर तो कहना, बिट्रीस ! कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।

रानी

[उसके कालर में उँगली फेरती है]

यह कालर तो तुम्हारे गले में बड़ा अच्छा लगता है।

[लार्ड मोरेंज़ो बरामदे में से दरवाज़े के छेद से झाँकता है।]

गाइडो

हाँ ! एक बार फिर तो कहो 'मैं तुमसे प्रेम करती हूँ' ।

रानी

मुझे याद आती है बचपन में जब मैं फ्रांस में थी, तो मैंने फ़ॉटीनबले के दरबार में राजा को ऐसा ही कालर पहने देखा था ।

गाइडो

तुम न कहोगी कि 'तुम मुझसे प्रेम करती हो ?'

रानी

[मुसकराती है]

राजा फ्रांसिस बड़ा ही राजसी आदमी था, पर वह तुमसे अधिक शानदार न था। क्यों ? गाइडो ! क्या इसे कहने की ज़रूरत है कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ ?

[उसका हाथ अपने हाथों में लेती है और उसका मुख अपनी ओर घुमा लेती है ।]

क्या तुम्हें नहीं मालूम कि सदा के लिए मैं तुम्हारी हूँ—मेरा हृदय तुम्हारा है, मेरा शरीर तुम्हारा है ?

[उसे चूमती है और मोरेनज़ों को देख लेती है और उछल पड़ती है ।]

ऐं, वह क्या ?

[मोरेनज़ों ग़ायब हो जाता है ।]

गाइडो

क्या है, प्रिये ?

रानी

मुझे ऐसा जान पड़ा कोई दरवाज़े से हमारी ओर ताक रहा था। उसकी आँखें अंगारे सी लाल थीं।

गाइडो

नहीं, कुछ नहीं ! पहरे पर के सिपाही की परछाईं होगी।

[रानी खड़ी खिड़की की ओर देखती है ।]

कुछ नहीं है, प्रिये !

रानी

अजी ! अब हमारा कोई क्या बिगाड़ सकता है ? हम तो अब प्रेम देवता की संरक्षा में हैं। मुझे परवा नहीं, चाहे दुष्ट संसार अपने लोकापवाद से हमारे जीवन को कुचल कर नष्ट कर दे। मैं परवा ही क्यों करूँ ? लोग कहते हैं मेंहदी पिसने पर और रंग लाती है। यही हाल युवक युवतियों का भी है। यह दुष्ट संसार उन्हें पीस डालना चाहता है, पर इससे उनका रंग और चोखा निकलता है और प्रायः वे और भी निखर जाते हैं। हाँ, जब तक हमारे पास प्रेम है हमारा जीवन स्वर्गतुल्य है। क्यों ?—क्या इसमें सन्देह है ?

गाइडो

प्रिये, हम आनन्द मनायें या गायें ?—मैं समझता हूँ, मैं अब गा सकता हूँ।

रानी

चुप रहो, कभी-कभी ऐसा होता है की सारी बातें एक ही आनन्द में लीन हो जाती हैं, और प्रेम मुँह पर मुहर लगा देता है।

गाइडो

ओह! मैं तोड़े देता हूँ उस मुहर को! तुम मुझसे प्रेम करती हो न, बिट्रीस ?

रानी

हाँ! क्या यह आश्चर्य्य की बात नहीं है कि मैं अपने शत्रु से प्रेम करती हूँ ?

गाइडो

वह कौन ?

रानी

क्यों, तुम—तुमने ही तो अपनी निगाहों से मेरे हृदय को घायल किया है। बेचारा पहले मज़े में रहता था।

गाइडो

और, प्रिये, तुमने तो मुझे ऐसा घायल किया है कि मैं तड़फड़ा रहा हूँ, मेरी रक्षा तुम्हारे ही हाथों में है। प्यारी! तुम्हीं इस मरज़ की दवा दे सकती हो।

रानी

मैं क्या दवा दूँगी ?—मैं तो स्वयं इसी रोग का शिकार हूँ ।

गाइडो

बिट्रीस ! मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ । यदि मेरे पास पपीहे का गला होता तो मैं इसी की रट लगाये रहता ।

रानी

कहते चलो, गाइडो ! इसमें जो मज़ा मिलता है पपीहे की 'पी' 'पी' में क्या मिलेगा !

गाइडो

बिट्रीस ! एक बार मुझे चूम तो लो !

[वह उसके मुख को हाथों में लेकर चूमती है । इसके बाद दरवाज़े पर कोई खटखटाता है, गाइडो उठ खड़ा होता है ; एक नौकर आता है ।]

नौकर

आपके लिए एक पारसल है, महाशय !

गाइडो

[लापरवाही से]

अच्छा, लाना इधर।

[नौकर लाल रेशमी कपड़े में लपेटा पार्सल देकर चला जाता है, गाइडो जैसे ही उसे खोलने लगता है, रानी पीछे से आकर मज़ाक में उससे छीन लेती है।]

रानी

[हँसती हुई]

अच्छा, मैं बदकर कहती हूँ यह जरूर किसी युवती ने भेजा है। वह चाहती है उसका उपहार तुम पहनो। मैं ऐसी ईर्षालु हूँ कि मैं तुम्हें कृपण की भाँति सहेज कर रखूँगी। और क्या इसमें किसी को तनिक भी हिस्सा मिल सकता है? संभव है इस प्रकार रखने में मैं तुम्हारा अनिष्ट ही क्यों कर दूँ।

गाइडो

उसमें कुछ नहीं है, जी!

रानी

यह किसी छोकरी का भेजा हुआ है !

गाइडो

देख लेना तुम, यह बात नहीं है।

रानी

[पीछे घूमती है और खोलती है]

अच्छा, यह चाल ! बतलाइये जनाब ! इस संकेत का क्या अर्थ—ख़ंजर जिसकी धार पर दो तेन्दुए बने हों ?

गाइडो

[उसके हाथ से ख़ंजर लेकर]

अरे ! बाप रे !

रानी

अच्छा, मैं दौड़ कर खिड़की से देखती हूँ न उस आदमी को जो इसे अभी देकर गया है। जब तक पता न लगा लूँगी दम न लूँगी।

[हँसती हुई बरामदे में चली जाती है।]

गाइडो

अरे, परमात्मन्! इतनी जल्दी मैं अपने पिता की हत्या भूल गया, इतनी जल्दी मैं ने प्रेम को अपने हृदय में प्रवेश करने दिया ! क्या इस प्रेम को उससे दूर करना पड़ेगा कि हत्या उसमें स्थान पावे, हत्या जो उसके द्वार पर खटखटाती और चिल्ला रही है ? हाँ! निश्चय यही करना पड़ेगा ! क्या मैंने शपथ नहीं ली थी ? फिर भी आज रात को नहीं ! नहीं, आज ही रात को ! अच्छा, नमस्कार है जीवन के सारे गौरव और सुखों को, नमस्कार है सारी मधुर स्मृतियों को और नमस्कार है सारे प्रेम को ! क्या रक्तरंजित हाथों से मैं उसके निष्कलंक करपल्लवों से क्रीड़ा कर सकता हूँ ? क्या मैं इन खूनी आँखों को उसकी सुन्दर आँखों से मिला सकता हूँ जिसका तेज लोगों को चकाचौंध करता और उनकी आँखों को सदा के लिए अंधकारमय बनाता है ? नहीं ! हमारे बीच हत्या ने दीवाल खड़ी कर दी है, उसे लाँघ कर हमारा मिलना असंभव है।

रानी

गाइडो !

गाइडो

बिट्रीस ! तुम भूल जाओ इस नाम को, और मुझे अपने हृदय से सदा के लिए निकाल दो ।

रानी

[उसकी ओर जाकर]

प्यारे !—!—!

गाइडो

[पीछे हट कर]

हम दोनों के मिलन में एक बाधा है ! हम उसे हिटा नहीं सकते !!

रानी

मैं सब कुछ करने को तय्यार हूँ जिसमें तुम मेरे पास रहो ।

गाइडो

आह ! यही तो बात है, मैं तुम्हारे पास फटक नहीं सकता । अब मैं कभी तुम्हारे सौन्दर्य के सम्मुख नहीं खड़ा

हो सकता—यह मेरे डाँवाडोल मन को परास्त कर देता है, और मेरे जान पर खेलने वाले हाथों को अपने कर्तव्य-पालन से विमुख करता है। मेरी बात मानो, जाने दो मुझे यहां से, और भूल जाओ इसे बिल्कुल कि कभी तुमने मुझे देखा था।

रानी

क्या ? भूल जाऊँ उन प्रेमपूर्ण चुम्बनों को ? भूल जाऊँ उन प्रेम की प्रतिज्ञाओं को जो अभी तुमने मेरे सन्मुख किया है ?

गाइडो

मैं लौटाये लेता हूँ उन्हें।

रानी

शोक ! तुम नहीं कर सकते ऐसा !—गाइडो ! वे प्रकृति में व्याप्त हो गई हैं। वायु उनके संगीत से गूँज रही है और बाहर पक्षिगण उन्हें मधुर स्वर से गा रहे हैं।

गाइडो

हमारे तुम्हारे मिलन मे बाधा है, बिट्रीस ! इसे मैं पहले नहीं जानता था — शायद मुझे स्मरण न था।

रानी

कोई वाधा नहीं है, गाइडो ! मैं भिखारिन बन कर तुम्हारे साथ सारे संसार में चक्कर लगाऊँगी ।

गाइडो

[चिल्ला कर]

संसार इतना विस्तृत नहीं है कि हम दोनों उसमें समा सकें !—नमस्कार !—विदा !

रानी

[चुप—और अपने आवेग को रोकती हुई]

तब क्यों तुमने मुझे छेड़ा, क्यों तुमने मेरे दिल की उजड़ी हुई बाटिका में प्रेम का पौदा रोपा ?—

गाइडो

हा बिट्रीस !

रानी

जिसे तुम अब खोद डालना चाहते हो, उखाड़ डालना चाहते हो, नष्ट कर देना चाहते हो—इसने मेरे हृदय में इस

प्रकार जड़ पकड़ लिया है कि उसे उखाड़ते समय तुम मेरे हृदय को टूक टूक कर दोगे ? क्यों तुम मेरे बीच में आये ? क्यों तुमने मेरे प्रेम के उन गुप्त स्रोतों को खोला जिन्हें मैंने कष्ट से रोक रखा था ? क्यों खोल दिया तुमने उन्हें ?—

गाइडो

हा परमात्मन् !

रानी

[अपनी मुट्ठी कस के बांध कर]

और क्यों तुमने मेरे प्रेम के बंधनों को अस्तव्यस्त कर उसके प्रबल वेग में मेरे जीवन को बह जाने दिया ? क्या बूंद बूंद इकट्ठा कर अब मैं उन्हें पुनः बन्द करूँ ? हा ! प्रत्येक बूंद आँसू होंगे और अपने खारेपन के साथ मेरे जीवन को किरकिरा कर देंगे।

गाइडो

ईश्वर के लिए अब चुप रहो ! मुझे तुम्हारे जीवन और प्रेम को छोड़ कर ऐसे पथ पर चलना है जिस पर तुम मेरा साथ नहीं दे सकतीं।

रानी

मैंने मल्लाहों को समुद्र में प्यासों मरते सुना है बेचारे बयाबान समुद्र में हरे भरे खेतों और मीठे झरनों का स्वप्न देखते हुए सो जाते हैं। जब आंखें खुलती हैं तो प्यास से परेशान होकर और भी बुरी मौत मरते हैं। वे अपने स्वप्न को कोसते हैं। मैं तुम्हें न कोसूंगी—यद्यपि तुमने उन्हीं मल्लाहों की भाँति मुझे नैराश्य के समुद्र में फेंक दिया है!

गाइडो

हरे! हरे!

रानी

ठहरो! अच्छा सुन लो, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, गाइडो!

[थोड़ी देर तक चुप रहती है]

क्या प्रतिध्वनि सोती है? मैं कहती हूँ मैं तुमसे प्रेम करती हूँ—और इसका उत्तर ही नहीं!

गाइडो

सब मृत्यु की गोद में सोते हैं, विट्रीस! केवल एक बचा है, वह आज रात को उसकी गोद में सोयेगा।

रानी

अगर तुम जाते हो, तो चले आओ!

[गाइडो जाता है]

बाधा ! बाधा! क्यों कहा था बाधा? हमारे बीच तो कोई बाधा नहीं है! झूठ ही कहा था मुझसे, इसके लिए क्या मैं उससे द्वेष करूँ—जिसे मैं प्यार कर चुकी हूँ? उसे घृणा की दृष्टि से देखूं जिसकी पूजा कर चुकी हूँ! हम स्त्री जाति इस प्रकार का प्रेम नहीं करतीं। अपने हृदय से यदि मैं उसकी मूरत उखाड़ कर फेंक दूँगी तो मेरा घायल दिल उसे सारे संसार में ढूंढता फिरेगा और अपनी मंद आहों से उसे पुकारता फिरेगा।

[शिकार की तय्यारी किये हुए राजा आता है, साथ में बाजेवाले और शिकारी कुत्ते हैं।]

राजा

रानी साहबा! हम देर से ठहरे हुए हैं। हमारे कुत्ते बड़ी देर से इन्तज़ार कर रहे हैं।

रानी

मैं तो आज न जाऊँगी।

राजा

यकायक यह क्या ?

रानी

महाराज ! मैं आज न जा सकूँगी।

राजा

क्या कहती हो, तुम हमारी मरज़ी के खिलाफ़ चलोगी ? समझती हो, मैं तुम्हें गधे पर चढ़ा कर शहर में घुमवा सकता हूँ और उन्हीं लफंगों से तुम्हारी बेइज्ज़ती करा सकता हूँ जिन्हें तुम नित्य भोजन दिया करती हो ?

रानी

क्या मेरे लिए आप के मुंह से कभी प्रेम के शब्द न निकलेंगे ?

राजा

तुम तो हर व.क्त हो मेरी मुठ्ठी में। तुम्हारे लिए इसकी ज़रूरत ?

रानी

अच्छा, मैं चलूंगी।

राजा

[कोड़े से अपने जूते को थपथपाता हुआ]

नहीं ! मैंने अपना विचार बदल दिया है। तुम यहीं रहो और सती साध्वी की भाँति खिड़की से हमारी राह देखती रहो। क्यों, यह बुरा ही न होगा यदि तुम्हारे प्यारे पति पर कहीं कोई विपत्ति आ पड़ी ? आइये, साहब ! मेरे कुत्ते उकता रहे हैं और मैं भी ऐसी संतोषी रानी पाकर ऊब गया हूँ। गाइडो कहाँ है ?

माफ़ियो

श्रीमान् ! मैंने एक घंटे से उसे नहीं देखा।

राजा

ख़ैर, कोई हर्ज नहीं। मैं कहता हूँ वह आता ही होगा। अच्छा, श्रीमती ! आप घर पर रहिये और चर्ख़ा कातिये।

साहबो ! मैं कहता हूँ न कि किसी किसी में घर पर पड़े रहने की आदत हद को पहुंच जाती है।

[जाता है—साथ उसके सब दरबारी भी।]

रानी

मेरे सारे नक्षत्र मेरे विरुद्ध हैं, बस और कुछ नहीं ! आज रात को जब मेरे स्वामी आनन्द से सोते रहेंगे, मैं अपने ख़ंजर के घाट उतरूँगी और बस—छुट्टी ! मेरा हृदय ऐसा कठोर है कि केवल ख़ंजर की धार ही उस तक पहुँच सकती है। जाने दो उसे इस हृदय में और अपने नाम को सार्थक करने दो। हाँ ! आज की रात मौत मुझे राजा से मुक्त कर देगी। ऐ, आज की रात को वह भी तो मर सकता है ! बुड्ढा तो है ही, वह क्यों न मरे ? अभी कल कमज़ोरी से उसका हाथ काँप रहा था, लोग कमज़ोरी से मर गये हैं, वह क्यों नहीं मरा ? क्यों, क्या ज्वर, सर्दी, जूड़ी और अनेक दूसरे रोग बुढ़ापे में नहीं होते ? नहीं! नहीं ! उसे मौत नहीं है—उसने बड़े पाप किये हैं। अच्छे लोग ही जल्दी चल बसते हैं। पुण्यात्मा मरेंगे—जिनके सामने यह राजा अपने दुराचारों से अछूत की

भाँति जंचेगा। स्त्री बच्चे मरेंगे, पर यह—यह राजा न मरेगा, वह पापी है जो।

ओह! क्या पुण्य से अधिक पाप की सेवा में अमरत्व है? क्या ये दुष्ट, जहरीले पौदों की भांति उन्हीं बुराइयों पर पनपते हैं जिनसे औरों का नाश होता है? नहीं! नहीं!! परमात्मा ऐसा न होने देगा। नहीं! कुछ भी हो यह राजा न मरेगा, यह बड़ा पापी है जो। अच्छा तो मैं ही मरूँगी, और इसी रात को। भीषण मृत्यु मेरा दूलह बनकर मुझे ले जायगी। क़ब्र मेरी फूलशय्या होगी। पर इससे क्या? सारा संसार ही क़ब्रिस्तान है, और हम सभी ताबूत हैं जिसमें हमारी आत्मा मुरदे की भांति पड़ी है।

[लार्ड मोरेनज़ो काला कपड़ा पहने आता है। वह पीछे की ओर से मंच को पार करता है और इधर उधर देखता है।]

मोरेनज़ो

ऐं! गाइडो? यहां तो नहीं दिखाई पड़ता।

रानी

[उसे देख लेती है]

अरे! तूही तो है जिसने मेरे प्रियतम को मुझसे छीना है।

मोरेनज़ो

क्या ? क्या वह यहां से चला गया ?

रानी

क्या जानता नहीं तू ? सुन ! लौटा दे उसे । मैं कहती हूँ लौटाल दे उसे मुझको, नहीं तो मैं तेरी बोटी बोटी अलग कर दूँगी, तुझे ज़मीन में गड़वा कर कौओं और कुत्तों से नुचवा डालूंगी । मेरे और मेरे प्रियतम के बीच पड़ना तूने खेल समझा था ? तूने शेरनी को छेड़ा है । सुनता है लौटाल दे उसे मेरे पास । तुझे क्या मालूम मैं उसे कितना प्यार करती हूँ । यह कुरसी है जिसपर आध-घंटे पहले वह बैठा था, यह स्थान है जहां वह खड़ा था, यहीं से उसने मेरी ओर देखा था, यही हाथ उसने चूमा था और यही कान हैं जिन्हें उसने अपने मधुर प्रेम की संगीत-मय गाथा सुनाई थी जिसे सुन पत्तियों ने लज्जा से गाना रोक दिया था । ओह ! लौटाल दे उसे मुझको ।

मोरेनज़ो

वह तुझे नहीं प्यार करता, औरत—

रानी

तेरी ज़बान नहीं गल कर गिर जाती ऐसा कहते हुए ! लौटा दे उसे !

मोरेनज़ो

रानी ! सुन रख अब उससे तेरी कभी भेंट न होगी, न इस रात को, न और फिर कभी।

रानी

तू है कौन ? तेरा नाम ?

मोरेनज़ो

मेरा ? मुझे—'बदला' कहते हैं।

[जाता है]

रानी

बदला ! मैंने तो किसी बच्चे तक को कभी दुख नहीं दिया है। बदला ! उसे मेरे दरवाज़े पर आने का काम ? ख़ैर, कोई हर्ज नहीं, मौत मेरे लिए प्रतीक्षा कर ही रही है। मौत ! तुझे लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं ज़रूर, पर मुझे

विश्वास है कि तू मेरे प्रियतम की भांति निठुर न होकर शीघ्र अपना दूत मेरे पास भेजेगी। कृपा कर—सूर्य्य के लद्धड़ घोड़ों को शीघ्र हांक जिससे रात—तेरी बहन—जल्दी से आकर संसार को अंधकार में ढँक दे, और अपने वज़ीर उल्लू को मीनार पर बैठकर चिल्लाने की आज्ञा दे दे जिसमें चिमगादड़ सन्नाटे में चक्कर लगाना आरंभ करें। जगा दे झिल्लियों को आनंद मनाने के लिए और बिज्जुओं को ज़मीन चालने के लिए, क्योंकि आज रात को मैं तेरी गोद में सुख की नींद सोऊंगी।

[परदा गिरता है।]

अंक तीसरा ।

अंक तीसरा ।

दृश्य १

महल का एक बड़ा बरामदा, बाएँ कोने में एक खिड़की जिसमें से चाँदनी रात में पडुआ नगर दिखाई पड़ता है। दाहिने कोने में एक ज़ीना दरवाज़े तक जाता है जिसपर लाल मख़मल का परदा पड़ा है जिस पर सोने के तारों में शाही चिह्न बना है। ज़ीने की आख़िरी सीढ़ी पर एक व्यक्ति काला वस्त्र पहने बैठा है। कमरे में पीतल का दीवट रखा है जिसमें बत्ती जल रही है। बाहर मेघ गर्जन करता है और बिजली चमकती है। समय रात का।

[गाइडो खिड़की से घुसकर आता है।]

गाइडो

हवा बढ़ती जा रही है, मेरी कमंद कैसी डगमगा रही है, जान पड़ता है हवा के झोंके में अब टूटी अब टूटी।

[नगर की ओर देखता है]

उफ़! कैसी भयानक रात है! आसमान में बादल उमड़ते आ रहे हैं, बिजली इस कोने से उस कोने तक इस ज़ोर से कड़कती है मानो शहर के सारे मकान अंधेरे में गड़गड़ा के गिर पड़ेंगे।

[रंगमंच पार कर ज़ीने की ओर जाता है।]

ऐं! कौन! कौन है तू ज़ीने पर जो मौत की तरह पापियों की प्रतीक्षा में बैठा है?

[चुप रहता है]

बोलता क्यों नहीं? क्या इस आंधी में तेरी ज़बान ऐंठ गई जो तेरे मुंह से बात नहीं निकलती?

[वह व्यक्ति उठता है और अपने मुंह पर से कपड़ा उठाता है।]

मोरेनज़ो

गाइडो फ़ेरान्टी! तेरा मृत पिता आज प्रसन्नता से हँस रहा है।

गाइडो

[घबरा कर]

क्यों खड़ा है तू यहाँ ?

मोरेनज़ो

क्यों ? तेरी प्रतीक्षा में।

गाइडो

[उसकी ओर से मुंह फेरकर]

मुझे नहीं ख्याल था कि तू यहाँ भी पहुँचेगा। ख़ैर, अच्छा ही हुआ, अच्छा सुन ले मेरी क्या मंशा है।

मोरेनज़ो

नहीं ! सुन लो पहले मैंने क्या क्या ठीक कर रखा है। पारमा की ओर जानेवाली सड़क पर मैंने घोड़े तय्यार रखे हैं, जैसे ही तुम अपना काम ख़तम कर लो, बस हम लोग चलते बनेंगे और रात ही रात—

गाइडो

ऐसा हो नहीं सकता।

मोरेनज़ो

नहीं ! ऐसा ही होगा।

गाइडो

सुनो लार्ड मोरेनज़ो ! मैंने निश्चय कर लिया है उसे मारूंगा नहीं।

मोरेनज़ो

ज़रूर, मेरे कान मुझे धोखा दे रहे हैं। फिर तो कहना ! जान पड़ता है बुढ़ापे के कारण मैं ठीक सुन नहीं पाता। क्या कहा तुमने अभी ? यही न—कि अपने बग़ल में लटकती हुई तलवार से तुम अपने बाप का बदला लोगे ? क्यों, यही न कहा था तुमने अभी ?

गाइडो

नहीं, जनाब ! मैंने कहा है—मैं राजा को मारूंगा नहीं।

मोरेनज़ो

हरगिज़ नहीं यह कहा तुमने। मेरे कान ज़रूर भटका रहे हैं मुझे, या तो इस तूफ़ान में तेरी बात मुझे उलटी सुनाई पड़ती है।

गाइडो

नहीं, नहीं। ठीक सुना है तुमने; मैं इस आदमी की हत्या नहीं करूंगा।

मोरेनज़ो

और अपनी शपथ का क्या करेगा? विश्वासघाती! अपनी उस क़सम का?

गाइडो

उस क़सम को मैं नहीं निबाहूँगा।

मोरेनज़ो

अपने मरे हुए पिता को क्या जवाब देगा?

गाइडो

क्यों? तू समझता है इस बूढ़े आदमी का ख़ून करने पर मेरा पिता मुझसे प्रसन्न होगा?

मोरेनज़ो

प्रसन्न? वह फूला न समायेगा?

गाइडो

यह तेरा ख़्याल है। स्वर्ग में लोग इस प्रकार नहीं सोचते। बदला लेना ईश्वर का काम है। वही समझेगा इससे।

मोरेनज़ो

तू ही वह है जिसके हाथों ईश्वर बदला ले रहा है।

गाइडो

नहीं! ईश्वर अपने हाथों बदला लेता है। मैं यह काम नहीं कर सकता।

मोरेनज़ो

तो आया क्यों यहां यदि तेरी इच्छा उसे मारने की नहीं है?

गाइडो

लार्ड मोरेनज़ो! मैंने सोचा है कि राजा के कमरे में जा कर सोते में उसकी छाती पर यह ख़त और यह खंजर रख आऊँ जिसमें जगने पर उसे मालूम हो कि किसी के क़ाबू

में वह था और उसने उसकी जान नहीं ली। इससे बढ़कर और बदला कौन सा होगा?

मोरेनज़ो

तो तुम उसे मारोगे नहीं?

गाइडो

नहीं!

मोरेनज़ो

लायक़ पिता के नालायक़ लड़के! तू उसे क्षण भर भी ज़िन्दा छोड़ता है जिसने तेरे पिता को बेचा था?

गाइडो

तुमहीं ने तो मुझे ऐसा करने से रोका। मैंने तो उसी दिन खुले मैदान उसकी जान ली होती—जिस दिन वह मेरे सामने पहले पहल आया था।

मोरेनज़ो

तब समय नहीं था, और अब जब अवसर आया है तब तू लड़कियों की भाँति क्षमा का दम भरता है।

गाइडो

क्षमा ? बदला ! अपने पिता की मृत्यु का उचित बदला ।

मोरेनज़ो

कायर है तू ! निकाल ले अपना छुरा ! घुस जा राजा के कमरे में और ला कर रख दे मेरे सामने उसका ताज़ा कलेजा । जब यह कर चुको तो मुझसे क्षमा के गुणों का बखान करना ।

गाइडो

तुझे अपनी क़सम, मेरे पिता के प्रति तेरे प्रेम की क़सम । तू सच सच बता दे, क्या मेरा पिता—वह महान् आत्मा, वह सिपाही आदमी, वह वीर पुरुष, इस भाँति रात में चोरों की भाँति घर में घुस कर बूढ़े आदमी को सोते में मारना पसंद करता—चाहे उसने कितना ही उसका अपकार क्यों न किया होता ?

मोरेनज़ो

[कुछ हिचक के बाद]

तूने शपथ ली है, उसे निबाहना तेरा धर्म है। लड़के! तू मुझसे उड़ रहा है। रानी के साथ तेरा सम्बन्ध क्या मुझ से छिपा है?

गाइडो

चुप, झूठे! पूर्णिमा का चाँद उससे अधिक निष्कलंक नहीं है और न नक्षत्र उससे अधिक निर्दोष।

मोरेनज़ो

फिर भी तुम उससे प्रेम करते हो। मूर्ख लड़के! तूने प्रेम को अपने जीवन में ऐसी प्रधानता दी जिसे केवल विनोद समझना चाहिए था।

गाइडो

ठीक कहते हो तुम। बुड्ढे! तेरे निःशक्त नसों में अब क्या गर्म रक्त बहता है? तेरी कीचड़ भरी आँखों में सौन्दर्य देखने की शक्ति कहाँ? तेरे कान क्या अब इस योग्य हैं कि तू स्वर्गीय संगीत का सुख अनुभव कर सके?

तू प्रेम की चर्चा करता है ? क्या जाने तू यह किस चिड़िये का नाम है ?

मोरेनज़ो

ओह ! अपने समय में, लड़के, मैंने भी आसमान की हवा खाई है । मैं भी इसकी क़समें खाया करता था कि मैं चुम्बनों और आलिंगनों पर जीवित रहूँगा । मैं भी इसकी शपथ लेता था कि मैं प्रेम के लिए प्राण दे दूँगा । पर कभी दिया नहीं । ओह ! मैंने ये सब खेल खेले हैं, बहुत देखा है मैंने संयोग और वियोग का स्वांग । यह सब पशुवृत्ति है—प्रेमवासनामात्र है । हाँ ! नाम उसका अवश्य पवित्र है ।

गाइडो

हाँ ! अब मालूम हो गया तुमने कभी प्रेम नहीं किया है । प्रेम जीवन का संस्कार है, यही पुण्य के अभाव में उसी की पूर्त्ति करता है । यही सांसारिक बुराइयों से जीवन को सुरक्षित रखता है । प्रेम वह अग्नि है जो तपा कर सोने को सोना प्रमाणित करती है । यह वह है जो दूध का दूध और पानी का पानी करती है । यह वह वसन्त है जो मरुभूमि में भी फूल खिलाता है । वह दिन गये

जब ख़ुदा मनुष्यों में रहता था। उसका स्थान अब प्रेम ने लिया है जो उसका रूप है। जब पुरुष स्त्री से प्रेम करता है तभी उसे विधाता तथा सृष्टि का रहस्य मालूम होता है। संसार में गरीब से गरीब के घर भी यदि उनका हृदय स्वच्छ है—प्रेम अवश्य प्रवेश करता है, परन्तु महलों से भी—यदि वहाँ भीषण हत्या का स्वागत होता हो तो प्रेम घायल की भांति बाहर भाग कर मर जाता है। पापियों के लिए परमात्मा ने यही दण्ड रखा है, कि वे प्रेम नहीं कर सकते।

[राजा के कमरे से कराहने की आवाज़ आती है।]

ऐं! यह क्या ? क्या तुमने नहीं सुना ? नहीं, कुछ नहीं है। मैं तो समझता हूँ स्त्रियों का यह काम है कि वे अपने प्रेम से पुरुषों की आत्माओं की रक्षा करें। और इसी लिए उससे—रानी से—सुन्दर बिट्रीस से प्रेम कर मैंने देखा कि—उस रात का भीषण काण्ड—उसे रात को मारने या उसके रोगी गले को घोटने से—कहीं अधिक उत्तम और पवित्र बदला तो यह है कि मैं उसे जीता ही छोड़ दूँ। मेरा तो विचार है कि प्रेम ही के लिए प्रभु ने—जो स्वयं प्रेम के अवतार थे—यह आदेश दिया है कि शत्रु को क्षमा करो।

मोरेनज़ो

[ठठ्ठा करके]

वह सब दूर की बातें हैं, यहाँ की नहीं। यह सब महात्माओं के लिए था, हमारे तुम्हारे लिए नहीं।

गाइडो

वह सब के लिए था।

मोरेनज़ो

और तुम्हारी रानी, तुम्हारे इस उपकार के लिए तुम्हें कैसे धन्यवाद देगी ?

गाइडो

रानी ! अब तो मैं उससे मिलता नहीं। बारह घंटे हुए होंगे जब मैं उससे ऐसी रुखाई और ऐसी जल्दी में अलग हुआ था कि अब वह मुझे अपने दिल में जगह भी न देगी। अब मैं उससे कभी मिलूँगा भी नहीं।

मोरेनज़ो

क्या करोगे तुम ?

गाइडो

यह खंजर जब मैं वहाँ रख लूँगा, तो तुरन्त पडुआ छोड़ कर उसी रात को चला जाऊँगा।

मोरेनज़ो

और तब ?

गाइडो

तब मैं वेनिस के राजा के यहां नौकरी कर लूँगा और उसी से कहूँगा कि मुझे लड़ाई पर भेज दे। और वहाँ अपने इस निराश जीवन को किसी के भाले का शिकार बनाऊँगा। बात सच यह है मैं इससे ऊब गया हूँ।

[राजा के कमरे से फिर कराहने की आवाज़]

क्या तुम्हें कुछ सुनाई पड़ा ?

मोरेनज़ो

मैं तो सदा ही सुनता रहता हूँ—उस प्रेतात्मा की आवाज़ सदा मेरे कानों में गूंजा करती है—बदला! बदला! हम व्यर्थ समय खो रहे हैं, अब सवेरा होना ही

चाहता है; क्यों, क्या तुमने निश्चय कर लिया है कि तुम राजा को मारोगे नहीं?

गाइडो

हां! निश्चय कर लिया है।

मोरेनज़ो

अभागे पिता! तेरा बदला लेनेवाला कोई नहीं है।

गाइडो

और भी अभागा यदि उसका पुत्र हत्या करे।

मोरेनज़ो

क्यों, हत्या कैसी?

गाइडो

मैं कुछ नहीं जानता, जनाब, मैं प्राण न दे सकता हूँ, न उसे लेने का साहस करता हूँ।

मोरेनज़ो

मैं ईश्वर को कभी धन्यवाद नहीं देता, पर मुझे इस पर अवश्य देना चाहिए कि उसने मुझे कोई पुत्र नहीं

दिया ! और तुममें न जाने किसका खून है कि अपने शत्रु को अपने काबू में पाकर भी तुम उसे जाने देते हो ? अच्छा होता कि मैं उन्हीं गँवारों के साथ तुम्हें छोड़ आता ।

गाइडो

अच्छा ही होता यदि ऐसो हुआ होता । और भी अच्छा होता यदि इस दुःखमय संसार में मैं पैदा ही न होता ।

मोरेनज़ो

अच्छा, चला मैं ।

गाइडो

जाओ, लॉर्ड मोरेनज़ो, किसी दिन मेरे इस बदले का महत्व समझोगे ।

मोरेनज़ो

कभी नहीं, लड़के !

[खिड़की से होकर कमन्द से उतर जाता है ।]

गाइडो

पिताजी ! मुझे विश्वास है तुम मेरे इस संकल्प को समझते होगे और मेरे इस पवित्र बदले से संतुष्ट होगे। पिताजी ! मैं समझता हूँ इस मनुष्य को जीता छोड़ कर मैंने वही किया है जो तुम स्वयं करते। पिता ! मुझे पता नहीं कि मनुष्य की वाणी मृत व्यक्तियों तक पहुँचती है अथवा पंचत्व प्राप्त प्राणी अपने प्रति हमारे कर्म्मों के विषय में बिल्कुल अंधकार में रखे जाते हैं—पर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मेरे आस पास कोई छाया खड़ी है जिसके अदृश्य चुम्बन मेरे होँठों को छूकर उसे पवित्र बना रहे हैं।

[घुटने टेकता है।]

ऐ पिता ! यदि यह तू ही है, क्यों तू मृत्यु के विधान को छिन्न भिन्न कर साक्षात् मुझे दर्शन नहीं देता, जिसमें मैं तुम्हारे चरणों को छू सकूं। नहीं, कुछ नहीं है।

[उठता है।]

यह रात है जो मुझे धोखा दे रही है, और जादूगर की भांति हमारे सामने झूठ को सच बना रही है।

अब तो देर हो रही है—चल कर अपना काम करना चाहिए।

[अपनी जेब से खत निकालता और पढ़ता है]

जब वह जागेगा और इस पत्र को पढ़ेगा और साथ ही साथ इस खंजर को देखेगा तो क्या उसे अपने जीवन के प्रति घृणा न होगी, क्या वह पश्चात्ताप न करेगा और ठिकाने से रहने न लगेगा? अथवा क्या वह इसका मज़ाक उड़ायेगा कि एक छोकरे ने अपने सहज शत्रु को अपने हाथ से जाने दिया? कुछ भी हो, मैं परवा नहीं करता। पिता! यह तेरी ही आज्ञा है जिसका मैं पालन कर रहा हूँ। यह तेरा आदेश है और मेरे प्रेम का भी, जिसकी शिक्षा से मैं तुझे यथार्थ रूप से जानने में समर्थ हुआ हूँ।

[चुपके से ज़ीने पर चढ़ता है, जैसे वह अपना हाथ परदा हटाने को बढ़ाता है—रानी सफ़ेद पोशाक में दिखाई पड़ती है। गाइडो भय से पीछे हट जाता है।]

रानी

गाइडो! इतनी रात को यहां कहाँ?

गाइडो

ऐ मेरे जीवन की निष्कलंक, श्वेतवस्त्रधारिणी देवी ! जान पड़ता है तू स्वर्ग से मेरे लिए यह संदेश लाई है कि दया प्रतिहिंसा से बढ़कर है।

रानी

अब हम दोनों के बीच कोई अड़चन नहीं है।

गाइडो

प्रिये ! न कोई है, न होगा।

रानी

मैंने उसका उपाय कर दिया।

गाइडो

ठहरना यहीं, मैं अभी आया।

रानी

तुम जाते कहाँ हो ? क्या पहले की भांति तुम मुझे फिर छोड़कर भागना चाहते हो ?

गाइडो

मैं क्षणभर में आता हूँ—मैं ज़रा राजा के कमरे में जाकर यह ख़त और यह खंजर तो रख आऊं जिसमें जब वह सोकर उठे—

रानी

कौन कब सो कर उठे ?

गाइडो

क्यों, राजा ?

रानी

वह अब क्या उठेगा।

गाइडो

क्यों, वह क्या मर गया ?

रानी

हाँ! वह मर गया है।

गाइडो

परमात्मन्! तेरी लीला विचित्र है! कौन कह सकता था कि आज ही रात को तेरे हाथों में इसके इंसाफ़ का भार छोड़ते ही तू न्याय करने के लिए उसे अपने निकट बुला लेगा ?

रानी

मैंने ही उसे अभी वहाँ भेजा है।

गाइडो

[भय से कांप कर]

अरे!—

रानी

वह बेखबर पड़ा था; जरा पास आओ, प्रियतम, मैं सब बतलाती हूँ। मैंने निश्चय कर लिया था कि आज रात को अपनी हत्या कर लूंगी। करीब १ घंटे हुए मैं सोकर उठी और मैंने तकिये के नीचे से अपना ख़ंजर निकाला—पहले ही से उसे यहाँ छिपा रखा था—मैंने उसकी म्यान उतारी और उसकी धार देखी, तुम्हारा ध्यान

किया, और सोचने लगी, गाइडो ! तुम्हारे प्रति अपने उस प्रेम को। फिर जैसे ही तय्यार हुई अपना काम तमाम करने को कि मेरी दृष्टि उस सोते हुए बुड्ढे पर पड़ी जो न जाने कितने वर्षों से पाप के पंक में पड़ा था। वह स्वप्न में भी पड़ा कोस रहा था और ज्योंही मैंने उसके मनहूस चेहरे का देखा यकायक मुझे ध्यान आया—यही अड़चन है जिसका जिक्र तुम कर रहे थे। क्यों, तुमने कहा था न—हमारे बीच एक अड़चन है ? कौन सा अड़चन सिवा उसके ? मुझे मालूम नहीं फिर क्या हुआ परन्तु मेरे उसके बीच एक ताजे खून का फौआरा ज़रूर उठा।

गाइडो

अरे ! अरे !

रानी

और उसके मुँह से अस्फुट एक आह निकली, फिर वह भी न निकली ! मुझे सुनाई पड़ा मानो फर्श पर टपाटप ख़ून चू रहा है।

गाइडो

बस ! बस !

रानी

क्या अब तुम मुझे प्यार न करोगे ? तुम ने कहा था नारी का प्रेम पुरुष को देवता बना देता है। ठीक, पर पुरुष का प्रेम नारी को शहीद बनाता है, उसके लिए हम लोग सब कुछ सहते हैं।

गइडो

उफ़ !

रानी

बोलते क्यों नहीं ?

गाइडो

क्या कहूँ मैं ?

रानी

अच्छा जाने भी दो इसे। चलो यहाँ से, आओ ! हमारे बीच का अड़चन अब दूर हुआ या नहीं ? अब और क्या चाहते हो ? आओ चलो, सबेरा होना चाहता है।

[गाइडो के ऊपर अपना हाथ रखती है।]

गाइडो

[झटक कर अलग होते हुए]

ऐ पिचाशिनी ! पातकी नारी ! किस पाजी शैतान ने तुझे यह कर्म करने को शिक्षा दी ? तूने पति की हत्या की ? कुछ नहीं किया—नरक स्वयं उसे निगलने को तय्यार था—पर तूने प्रेम की हत्या कर डाली और उसके स्थान में तूने एक भीषण, कलंकपूर्ण वस्तु खड़ी कर दी जिसकी प्रत्येक साँस संसार में विष उगल कर प्रेम का गला घोंट रही है।

रानी

[आश्चर्य से आँख फाड़ कर देखती हुई]

यह सब तो मैंने तुम्हारे लिए किया। अगर तुम खुद ऐसा करना चाहते तो मैं तुम्हें कभी न करने देती—मैं नहीं चाहती कि तुम अपने ऊपर कलंक लो, मैं तुम्हें कलंकरहित, दोषरहित, लाञ्छनारहित रखना चाहती हूँ। पुरुषों का क्या पता कि स्त्री प्रेम के लिए क्या नहीं कर डालती ? क्या तुम्हारे लिए मैंने अपनी आत्मा

की हत्या नहीं कर डाली ? क्या तुम्हारे ख़ातिर मैंने अपना लोक परलोक नहीं बिगाड़ा ?

गाइडो

नहीं, दूर हो यहाँ से। तेरे और मेरे बीच खून की लाल दरिया बहती है जिसे पार करना मेरे साहस के बाहर है। जब तुमने उसको हत्या की—तुमने स्वयं प्रेम के कलेजे में छुरी भोंकी। अब हमारा तुम्हारा मिलना असम्भव है।

रानी

[हाथ मलती हुई]

तुम्हारे लिए ! केवल तुम्हारे लिए, गाइडो ! मुझे यह सब करना पड़ा—क्या तुम भूल गये ? तुम्हीं ने तो कहा था हमारे तुम्हारे बीच एक अड़चन है। वही अड़चन अब ऊपर के कमरे में—छिन्न भिन्न, विध्वंस, विनष्ट और पराजित पड़ा हुआ है—अब वह हमें एक दूसरे से कभी अलग नहीं कर सकता।

गाइडो

नहीं, बिट्रीस ! तुम भ्रम में पड़ी हो, पाप—वह अड़चन था—जिसे तुम ने जगा दिया, दुष्कर्म—वह अड़चन था जिसे तुमने अचल कर दिया। हत्या—वह अड़चन थी जिसे तुमने अपने हाथों इतने ऊपर उठा दिया कि उसके कारण हमसे स्वर्ग ओझल हो गया—परमात्मा दूर हो गया।

रानी

मैंने जो किया, गाइडो, तुम्हारे कारण ! तुम मुझे त्याग नहीं सकते। सुनो गाइडो ! घोड़े को तैयार करा लो, और हम इसी रात भाग चले यहां से। बीते पर रोना व्यर्थ है, भुला दो उसे। हमारे सामने भविष्य पड़ा है। क्या हम अब प्रेम का मधुर स्वाद लेते हुए आनन्द की हँसी न हँसेंगे ? नहीं ! नहीं ! हम न हँसेंगे, पर क्या रोते समय भी हम साथ न रोयेंगे। मैं अत्यन्त विनम्र और विनीत रहूँगी, गाइडो। तुमने मुझे अभी पहचाना नहीं।

गाइडो

खूब पहचाना मैंने अब तुम्हें। दूर हो यहाँ से, मैं कहता हूँ हट जा मेरे सामने से।

रानी

[दो चार कदम आगे पीछे चलकर]

उफ़ ! मैं इस पुरुष से कितना प्रेम करती थी !

गाइडो

तू ने कभी नहीं किया प्रेम, यदि ऐसा होता तो तेरा हाथ इस दुष्कर्म के हेतु उठता ही नहीं। हम अब कैसे प्रेम की मदिरा साथ पी सकते हैं ? तू ने इस पवित्र सुरा में विष घोल दिया और अपनी खून भरी उंगलियों से उसे अशुद्ध कर दिया !

रानी

[अपने घुटनों पर गिरकर]

तो अन्त कर दो मेरा, अब इसी समय ! मैं ने एक हत्या की, तुम भी कृपा कर एक करो जिसमें हम दोनों—

स्वर्ग या नर्क में साथ ही साथ पहुँचें। खींच लो अपनी तलवार गाइडो! देरी न करो, मेरे हृदय में पैठ कर देख लो—वहाँ उसके आराध्य देव की मूर्ति तुम्हें दिखाई पड़ेगी। यदि तुम मुझे अपने हाथों नहीं मारते, तो आज्ञा दो, मैं स्वयं इसी रक्त भरी छुरी से अपना काम तमाम कर दूँ।

गाइडो

[उसके हाथों से छुरी छीन कर]

छोड़ो इसे। अरे! तुम्हारे हाथ तक खून में सने हैं। यह स्थान तो नरक तुल्य है, मैं तो एक क्षण यहां नहीं ठहर सकता। हटो, फिर कभी अपना मुँह मुझे न दिखाना।

रानी

मैंने खुद तुम्हारा मुँह न देखा होता तो अच्छा था।

[गाइडो पीछे हटता है, रानी उसका हाथ पकड़ती है और घुटनों पर गिरती है]

नहीं, गाइडो, तनिक सुन लो, पडुआ में तुम्हारे आने के पूर्व मैं यद्यपि दुखी थी पर मेरे मन में हत्या का विचार कभी नहीं आया था, मैं उस क्रूर कठोर स्वामी का सब सहन

करती थी, उसकी अनुचित आज्ञाओं का पालन करती थी—उसी भांति निष्कपट, उसी भांति पवित्र जैसे और सब स्त्रियाँ जो अब मुझ से भय से दूर भागती हैं।

[खड़ी हो जाती है]

तुम्हारा यहाँ आना, आह ! गाइडो ! फ्रांस से आने के बाद यदि किसी के मुख से मैं ने मधुर बचन सुने तो तुम्हारे। खैर ! कुछ नहीं, यह कोई बात न थी। तुम से भेट होने पर तुम्हारी रसभरी आंखों में मैं ने प्रेम का रूप देखा, तुम्हारी बातों से मेरी आत्मा की बीणा बज उठी—मैं तुमसे प्रेम करने लगी—फिर भी मैंने यह प्रेम तुमसे गुप्त रखा। तुम्हीं ने मुझे छेड़ा, मेरे पैरों पर गिरे—इसी भांति जैसे मैं आज तुम्हारे गिर रही हूँ।

[झुकती है]

और अपनी प्रेम भरी प्रतिज्ञाओं से—जिन की मधुर झंकार अभी तक मेरे कानों में गूंज रही है। तुम ने शपथ लेकर कहा था कि तुम मुझे प्यार करते हो—मैंने इस पर तुम्हारा विश्वास किया। संसार में कितनी ऐसी औरतें होंगी जो तुम्हें उस पुरुष की हत्या का प्रलोभन देतीं पर मैंने ऐसा नहीं किया। और यदि

मैंने खुद भी ऐसा न किया होता तो आज मैं इस भांति न ठुकराई जाती।

[उठती है]

हां! तुम ने तो खूब अपना प्रेम निबाहा।

[उसके समीप डरती हुई जाती है]

तुमने शायद समझा नहीं गाइडो! तुम्हारे ही हेतु मुझे यह कर्म करना पड़ा जिस की भीषणता मेरी जान ले रही है। यह सब तुम्हारे ही लिए गाइडो!

[अपना हाथ बढ़ाती है]

क्या तुम मुझसे बोलोगे नहीं? तनिक तो मुझे प्यार कर लो। लड़कपन से मैं प्रेम के लिए तरस गई हूँ और कृपा मुझ पर किसी ने भूले से भी नहीं दिखाई है।

गाइडो

तुम्हारी तरफ़ देखने की मेरी हिम्मत नहीं होती। खूब! मेरे ऊपर बड़ी कृपा दिखला रही हो। जाओ! हटो यहाँ से।

रानी

अच्छा, अब मालूम हुआ! यह है पुरुष! मैं कहती

हूँ यदि तुम मेरे पास कोई भारी पाप करके आते, कोई हत्या ही—धन के लिए, प्रेम के लिए नहीं—करके आते तो जानते हो मैं क्या करती ? मैं रात भर तुम्हारे बिस्तर के पास बैठी जागती और इसका प्रयत्न करती कि पश्चात्ताप तुम्हारे पास आकर तुम्हारी नींद न खराब करने पावे ! पापियों को ही तो दीन होने के कारण प्रेम की अधिक आवश्यकता है।

गाइडो

जहां पाप वहां प्रेम कहां ?

रानी

क्यों पापियों के लिए प्रेम नहीं है ? परमात्मन् ! पुरुषों के और हमारे प्रेम में कितना अंतर है ! यहीं पडुआ में कितनी स्त्रियाँ हैं—कोई मज़दूर की, कोई कारीगर की—जिन के पति देव अपनी कमाई कलवरिया या किसी अड्डे पर फूंक कर शाम को नशे में चूर घर आते हैं और घर पर चूल्हे में आग जली न पाकर बीबी को भूखे बच्चों को बहलाते

देख इस लिए उसे पीटना शुरु कर देते हैं कि बच्चों को अब तक खाना क्यों नहीं मिला और चूल्हे में आग क्यों न जली। इतने पर भी पत्नी उन्हें प्यार करती है! और दूसरे दिन उठकर कराहती हुई अपना काम धन्धा करती है और इसी का धन्य मनाती है कि दूसरे दिन फिर न कहीं उसे पिटना पड़े!—देखा, इस प्रकार स्त्रियां प्रेम करती हैं।

[रानी चुप रहती है। गाइडो चुप रहता है]

कृपा कर मुझे दुत्कारो नहीं, गाइडो! तुम्हारे छोड़ मुझे कहां शरण है? तुम्हारे ही लिए मैं ने ये हाथ खून में रंगे हैं, तुम्हारे ही ख़ातिर मैंने यह घोर पाप किया है जिसका प्रायश्चित्त नहीं हो सकता।

गाइडो

भाग जा यहाँ से। वह तो मर कर भूत हूआ ही और उस के साथ हमारा प्रेम भी भूत की भांति अपनी क़ब्र पर चक्कर लगाता और इस पर रोता है कि तूने अपने पति की हत्या के साथ साथ उसका भी ख़ून किया। क्यों! बात समझ में आई?

रानी

समझती हूँ। पुरुष जब स्त्री से प्रेम करते हैं उसे अपने जीवन का थोड़ा सा भाग देते हैं पर जब स्त्री पुरुष से प्रेम करती है वह उसे अपना सर्वस्व अर्पण कर देती है। अब बात मेरे समझ में आई, गाइडो !

गाइडो

अच्छा, जा ! जा यहां से ! जब तक उसे जिला न लेना मेरे पास न फटकना—

रानी

मैं तो मनाती हूँ परमात्मा से कि मैं उसे जिला सकूँ, उसकी आखों में ज्योति डाल दूँ, उसकी ज़बान से आवाज़ निकाल दूँ और उस के हृदय में गति का संचार कर दूँ— पर यह होता कब है ! जब तीर हाथ से निकल गया वह लौटता नहीं, जो मर गया वह कभी लौट कर आता नहीं— उसे न कोई आराम पहुँचा सकता है न कोई तकलीफ़। निकल गया पक्षी पींजरे से। लाख सिर पटको अब वह बोलता नहीं, लाख कोशिशें करो अब वह हंसता नहीं, उस

के गले पर छुरी चलाओ वह उफ़ नहीं कर सकता। मैं तो बहुत चाहती हूँ वह लौटकर आ जाय! दयामय! तनिक पलट दो प्रकृति के विधान को, लौटा दो तनिक सूर्य्य के रथ को और मिटा दो इस रात्रि को समय के लेखे से और बना दो मुझे फिर वैसी ही जैसे मैं थोड़ी देर पहले थी! नहीं! नहीं! यह कब संभव है? कहीं समय की गति रुक सकती, कहीं सूर्य्य का रथ रुक सकता है? चाहे पश्चात्ताप अपना गला ही क्यों न फाड़ डाले। परन्तु क्यों प्रियतम! क्या तुम्हारे पास भी मेरे सान्त्वना के लिये शब्द नहीं हैं? गाइडो! प्यारे गाइडो! क्या एक बार भी तुम मुझे प्यार न करोगे? बहुत हुआ, प्यारे! अब नहीं। जानते हो इस व्यवहार पर स्त्रियां पागल हो जाती हैं और फिर उनके हाथों जो न हो जाय थोड़ा है? क्यों! क्या तुम एक बार भी मुझे प्यार न करोगे?

गाइडो

[छुरा हाथ में उठाकर]

नहीं! न करूँगा प्यार तुम्हें जब तक तुम अपने इस ख़ून का प्रायश्चित्त न कर लोगी।

[झल्लाकर]

जा अपने उस मरे हुए स्वामी के पास !

रानी

[ज़ीने के ऊपर जाते हुए]

अच्छा, मैं जाती तो हूँ—पर तुम्हारे इस व्यवहार पर .खुदा तुम से समझे !

गाइडो

हाँ ! अगर मैं भी रात में तेरी भांति हत्या करूं तो .खुदा-मुझसे ज़रूर-समझे ।

रानी

[कुछ नीचे उतरते हुए]

हत्या तुम कहते हो ! हत्या अभी भूखी है और और भोजन चाहती है । मौत उसका भाई अभी पास ही चक्कर लगा रहा है—बिना किसी को लिए वह अकेला जाने का नहीं ! ठहर जा मौत ! मैं तुझे अच्छा सा साथी देती हूँ ! हत्या ! फिर न निकालना ज़बान से यह शब्द । मैं तुम्हें इसका मज़ा

चखाती हूँ। सवेरा होने के पहले ही इस मकान पर ऐसी आफ़त आयेगी कि उसके डर से चाँद अभी पीला पड़ा जाता है, हवा चारों ओर हाय हाय करती हुई फिर रही है। बेचारे सितारे घबराहट में अपनी जगह से गिरे जा रहे हैं मानों रात होनेवाली घटना पर अग्निमय आँसू टपका रही है। रो ले! दुखिया आकाश, रो ले भर पेट! चाहे तू रो रोकर सारा संसार भर दे पर अब कुछ होने का नहीं।

[बिजली कड़कती है]

क्यों सुनाई पड़ता है! आसमान में गोले गरज रहे हैं। प्रतिहिंसा जग उठी है और उसने अपने कुत्तों को संसार पर छोड़ दिया है। अब हम दोनों में उसी के सिर सब बीतेगा जो इस से भागने की चेष्टा करेगा।

[बिजली चमकती है और गर्जन होता है।]

गाइडो

भाग! भाग यहां से!

[रानी आती है, लाल परदे को उठाते समय वह गाइडो की ओर देखती है वह चुप रहता है। गर्जन होता है]

अब जीवन व्यर्थ है। प्रेम पृथ्वी से उठ गया और उसके स्थान में हत्या, खूनी हत्या चुपके से आ बैठी। आह! यह सब जिसने किया—कुछ भी हो, वह मुझ से प्रेम करती थी और मेरे ही लिए उसने यह भीषण कर्म्म किया। मैंने उसके प्रति अत्याचार किया। बिट्रीस! बिट्रीस! लौट आओ! लौट आओ!

[ज़ीने पर चढ़ना आरंभ करता है, इसी समय सिपाहियों का शोर गुल सुनाई पड़ता है।]

अरे! यह क्या? मशाल लिए लोग दौड़ रहे हैं। परमात्मा की दया से उसे अभी पकड़ नहीं पाये हैं।

[शोर बढ़ता जा रहा है]

बिट्रीस! बिट्रीस! अभी भी मौक़ा है भागने का। नीचे आजाओ! बाहर निकल आओ!

[रानी की आवाज़ बाहर सुनाई पड़ती है।]

उसी तरफ़ गया है हत्यारा! मेरे स्वामी की हत्या करने वाला!

[ज़ीने के नीचे दो चार सिपाही घबराये हुए दौड़े आते हैं। गाइडो नहीं दिखाई पड़ता है। रानी नौकरों के साथ मशाल लिए ज़ीने के

ऊपर खड़ी दिखाई देती है और गाइडो की ओर इशारा करती है जो तुरन्त गिरफ़्तार कर लिया जाता है। एक सिपाही उसके हाथ से छुरा लेकर अपने कप्तान को सामने जाकर दिखाता है सब ठक से रह जाते हैं।]

परदा गिरता है।

अंक चौथा ।

अंक चौथा ।

दृश्य १

[दिवालों पर छपे हुए मख़मल के परदे, उनके ऊपर दीवाल का रँग लाल, छत्त में साँकेतिक सुनहले चित्र अंकित हैं जिसकी कड़ियाँ लाल रंग की हैं उनमें फूल बादामी रंग के बने हैं। एक सफ़ेद साटन का बना चन्दवा ज़री के काम का रानी के लिए लगा है, उसके नीचे एक लम्बा बेंच, जिस पर लाल कपड़ा बिछा है न्यायाधीशों के लिए, उसके नीचे एक मेज़ न्यायालय के पेशकार के लिए। दो सिपाही चन्दवे के दोनों ओर खड़े हैं और दो दर्वाज़े पर, कुछ नागरिक वहाँ एकत्र हो गये हैं और कुछ आ रहे हैं एक दूसरे को सलाम करते हैं। दो कानिष्टबुल बैगनी रंग के वर्दी पहने भीड़ का प्रबंध कर रहे हैं उनके हाथों में दो सफ़ेद डण्डे हैं।]

पहला नागरिक

अरे भाई अन्टानी, राम ! राम !

दूसरा नागरिक

राम ! राम ! भाई डामिनिक ।

पहला नागरिक

पडुआ के लिए यह नई बात है, कभी ऐसा भी हुआ था ? राजा की हत्या हो !

दूसरा

सच तो कहते हो भाई, जब से पुराने राजा मरे तब से तो ऐसी बात कभी न हुई ।

पहला

हाँ ! तो पहले उस पर मुकद्दमा चलेगा बाद को सज़ा होगी । क्यों, ऐसा ही न ?

दूसरा

न—कहीं सज़ा से बच जाय तो ? सुनो पहले वह दोषी ठहरा दिया जायगा जिसमें बच निकलने की सूरत न रहे, बाद को उसका विचार होगा कि जिसमें ऐसा न हो कि उसके साथ अन्याय हो जाय। समझे ?

पहला

नहीं जी ! यह तो सचमुच उसके साथ अन्याय होगा।

दूसरा

और राजा का ख़ून भी क्या मामूली बात है ?

तीसरा नागरिक

लोग तो कहते हैं राज-वंश का ख़ून सफ़ेद होता है।

दूसरा

पर हमारे राजा के वंश का तो उसके दिल की भाँति काला था।

पहला

ज़रा संभाल के भाई अन्टॉनी, सिपाही तुम्हारी ओर देख रहा है।

दूसरा

देख के क्या करेगा ? क्या खा जायगा मुझे ?

तीसरा

इस लौंडे के बारे में तुम्हारी क्या राय है जिसने राजा को छुरी भोंकी है ?

दूसरा

क्यों, वह सुशील है, समझदार है, उसकी क़द्र है—बस पाजीपन उसने इतना ही किया कि उसने राजा को छुरी भोंकी है।

तीसरा

यह उसका पहला अपराध है, कौन जाने उसके साथ रियायत की जाय। अजी, यह तो उसका पहला ही क़सूर है।

दूसरा

हो सकता है।

कानिस्टबुल

चुप, पाजी !

दूसरा

क्यों जमादार साहब, क्या मैं आईना हूँ जो आपको मुझमें पाजी दिखाई पड़ता है।

पहला

यह लो राजा की बांदी आ रही है। क्यों लूसी दाई ! तुम तो महल ही में रहती हो, बेचारी रानी का क्या हाल है ? बड़ी भली है बेचारी ?

लूसी

बाप रे बाप ! अपना दुर्भाग ! अपना अभाग्य ! यह विपद् का पहाड़ ! बीते जून में मेरी शादी हुए १९ साल हुए और यह अगस्त है उसमें राजा की हत्या हो जाय ! यह भी संयोग की बात है।

दूसरा

अगर संयोग ही है तब तो उसको फांसी न होनी चाहिये। संयोग पर भी किसी का बस है ?

पहला

पर रानी का क्या हाल है ?

लूसी

हाँ, हाँ! मैं तो कहती हूँ इस घर पर कोई आफ़त आनेवाली है। अभी ६ हफ़्ते पहले मेरी रोटियां सब एक तरफ़ जल गई थीं। अभी उस दिन दीपक में एक बड़ा सा पतिंगा उड़कर पड़ गया था—बड़े बड़े थे उसके पंख—मैं तो बिलकुल डर गई थी !

पहला

अजी, रानी की बात कहो तुम तो न जाने कहां की हाँक रही हो—बतलाओ तो रानी का क्या हाल है ?

लूसी

पूछना ही चाहिए रानी का हाल। बेचारी लुट गई! रात को भी उसकी आँख नहीं लगी, पागल सी फिर रही थी, बहुत समझाया मैंने, कुछ खा लो, तनिक दूध ही पीलो, ज़रा सा लेट जाओ, नहीं तो जी ख़राब हो जायगा— पर उसने एक न माना, कहती थीं 'नहीं' सोऊँगी नहीं, सोने पर मुझे भयानक स्वप्न दिखाई पड़ते हैं। विचित्र बात है यह! तुम्हीं कहो—है कि नहीं?

दूसरा

ये बड़े लोग हैं इनमें दिल थोड़े ही है। ईश्वर ने खाली इन्हें बड़ा आदमी बना दिया है।

लूसी

ईश्वर न करे हमें ऐसे दिन देखने पड़ें।

[जल्दी से लार्ड मोरेनजो आता है]

मोरेनज़ो

क्या! राजा की मृत्यु हो गई?

दूसरा

उसके कलेजे में छुरी पाई गई, लोग कहते हैं उससे कोई बचता नहीं !

मोरेनज़ो

किसने किया यह काम ?

दूसरा

क्यों ? वही जो पकड़ा गया ।

मोरेनज़ो

पर पकड़ा कौन गया ?

दूसरा

जिस पर राजा की हत्या का अपराध लगाया गया है ।

मोरेनज़ो

अजी, मैं नाम पूछता हूँ उसका ।

दूसरा

नाम ? नाम वही होगा जो उसके मां बाप ने रक्खा होगा—और हो ही क्या सकता है ?

कानिस्टबुल

उसका नाम गाइडो फ़ेरान्टी है, जनाब !

मोरेनज़ो

मैं तुम्हारे कहने के पहले ही भांप गया था—

[आप ही आप]

आश्चर्य की बात है कि उसने राजा की हत्या की ! उसके रंग ढंग से तो यह बात नहीं टपकती थी। जान पड़ता है अपने पिता के बेचनेवाले उस राक्षस को देखकर—उसके हृदय के उस भाव ने ज़ोर मारा और उसके प्रेम के सिद्धान्तों को हवा बता दिया, पर आश्चर्य है वह भागा नहीं !

[भीड़ की ओर मुड़कर]

कैसे पकड़ा गया वह, कुछ बतला सकते हो ?

तीसरा

वाह ! लोगों ने उसका पीछा किया और पकड़ लिया।

मोरेनज़ो

पर पकड़ा किसने ?

तीसरा

क्यों वही लोग जिन्होंने उसका पीछा किया।

मोरेनज़ो

पर शोर ग़ुल किसने मचाया ?

तीसरा

यह तो नहीं कह सकता, जनाब !

लूसी

रानी ही ने तो उस हत्यारे को दिखलाया था।

मोरेनज़ो

[आप ही आप]

रानी ? कुछ जरूर दाल में काला है।

लूसी

हाँ ! उसके हाथ में ख़ंजर था, रानी ही का ख़ंजर।

मोरेनज़ो

क्या कहा ?

लूसी

यही तो कि रानी के ख़ंजर से राजा का ख़ून हुआ।

मोरेनज़ो

[आप ही आप]

इसमें कुछ रहस्य है।

दूसरा

बड़ी देर हो रही है। अभी वे लोग आते नहीं दिखाई पड़ते।

पहला

मैं तो कहता हूँ आते ही होंगे।

कानिस्टबुल

चुप रहो !

पहला

जनाब जमादार साहब, आप तो ख़ुद शोर मचा रहे हैं।

[प्रधान न्यायाधीश अन्य न्यायकर्त्ताओं के साथ आते हैं]

दूसरा

यह लाल पोशाक में कौन है ? क्या यही जल्लाद है ?

तीसरा

नहीं जी, यह प्रधान न्यायाधीश महोदय हैं।

[सिपाहियों के साथ गाइडो आता है]

दूसरा

जान पड़ता है यही क़ैदी है।

तीसरा

देखने में तो सीधा जान पड़ता है।

पहला

यही तो पाजीपना है। आजकल पाजी लोग ऐसे सीधे दिखाई पड़ते हैं कि सीधे लोगों को विवश होकर पाजी बनना पड़ता है। इनमें और उनमें कुछ भेद तो होना ही चाहिए।

[जल्लाद आता है और गाइडो के पीछे खड़ा हो जाता है]

दूसरा

अच्छा! यह ही है जल्लाद शायद! क्यों उसका कुल्हाड़ा बड़ा तेज़ है?

पहला

हाँ! तुम्हारी अक्ल से भी ज़्यादा। देख रहे हो न उसकी धार उसकी ओर नहीं है।

दूसरा

[अपनी पीठ खुजलाकर]

ईश्वर जाने। उसका इतना पास होना तो ठीक नहीं है।

पहला

तुम भी खूब हो, इसमें डरने की क्या बात। वे मामूली लोगों का सिर थोड़े ही काटते हैं हम ऐसे लोगों को तो वे सिर्फ फांसी देते हैं।

[बाहर तुरही बजती है]

तीसरा

यह तुरही क्यों बजी ? क्या मुक़द्दमा ख़तम हो गया ?

पहला

नहीं जी, रानी साहबा आ रही हैं।

[रानी काले मख़मली पोशाक में आती है, उसका काले मख़मल का लबादा दो बैंगनी रंग की वर्दी पहने हुए नोकर उठाये हैं। उनके साथ में धर्माध्यक्ष जी हैं उनका पहनावा लाल है, उसके साथी काले लिबास में हैं। वह न्यायकर्त्ताओं के ऊपर वाले सिंहासन पर बैठती है, उसके आते ही न्यायाधीश लोग अपने आसन से खड़े हो जाते हैं और अपनी टोपी उतार लेते हैं। धर्माध्यक्ष रानी के

बग़ल में कुछ नीचे बैठते हैं, दरबारी सिंहासन के आस पास खड़े हो जाते हैं ।]

दूसरा

देखो न रानी को, बेचारी कैसी पीली पड़ गई है ?

पहला

कुछ देखा, अब तो वह राजा के स्थान में बैठी है ।

दूसरा

पडुआ के लिए तो यह ख़ुशी की बात है । रानी बड़ी ही दयालु और धर्मात्मा रानी है । तुम्हें मालूम है न—उसने मेरे बच्चों को एक बार बीमारी से अच्छा किया था ।

तीसरा

इतना ही क्यों हम लोगों को रोटी नहीं बँटवाई थी । रोटी की बात क्यों भूल जाते हो ?

एक सिपाही

पीछे हट के खड़ो हो, भले आदमी !

दूसरा

अगर हम भले आदमी हैं तो पीछे क्यों खड़े हों ?

कानिस्टबुल

चुप ! चुप !

प्रधान न्यायाधीश

महामान्या श्रीमती रानी साहबा यदि आपकी आज्ञा हो तो राजा की हत्या के अभियोग का विचार आरम्भ किया जाय ?

[रानी सिर झुका कर स्वीकृति प्रकट करती है]

क़ैदी को पेश करो ! क्या है तेरा नाम ?

गाइडो

क्या कीजिएगा पूछ कर साहब !

प्रधान न्यायाधीश

पडुआ में तुझे गाइडो फेरान्टी कहते हैं क्यों ?

गाइडो

जब मरना ही है तो चाहे यह नाम हो चाहे कोई और हो।

प्रधान न्यायाधीश

तुम्हें मालूम ही होगा कि तुम पर किस भीषण अपराध का अभियोग लगाया गया है—यानी तुमने अपने स्वामी पडुआ के राजा श्री सिमोन जेसो-की सोते समय हत्या की है। इसकी सफ़ाई में तुम्हें क्या कहना है ?

गाइडो

मुझे कुछ नहीं कहना है।

प्रधान न्यायाधीश

[उठकर]

गाइडो फेरान्टी—

मोरेनज़ो

[भीड़ से निकलकर]

ठहरिये प्रधान न्यायाधीश महोदय !

प्रधान न्यायाधीश

कौन हो तुम, जो न्याय को रोकते हो !

मोरेनज़ो

अगर न्याय हो, तो कोई बात नहीं, पर यदि यह अन्याय हो—

प्रधान न्यायाधीश

कौन है यह आदमी ?

कौंट बारडी

बड़े ही सज्जन पुरुष। आपको राजा साहब अच्छी तरह जानते थे।

प्रधान न्यायाधीश

जनाब, बड़े मौक़े से आये हैं आप, वह राजा की हत्या करने वाला व्यक्ति खड़ा है। इसीने यह नीच कर्म किया है।

मोरेनजो

मैं पूछता हूँ, इसका प्रमाण क्या है ?

प्रधान न्यायाधीश

[ख़ंजर हाथ में उठाकर]

यह खंजर, जिसे सिपाहियों ने ख़ून में तर उसके ख़ून भरे हाथों से रात को छीना था। इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है ?

मोरेनज़ो

[हाथ से ख़ंजर लेकर रानी के समीप जाता है ।]

क्यों मैं ने ऐसा ही ख़ंजर आपके कमर से कल लटकते हुए नहीं देखा था ?

[रानी काँप उठती है और कुछ उत्तर नहीं देती ।]

प्रधान न्यायाधीश जी ! मुझे कृपा कर आज्ञा दें कि मैं इस लड़के से क्षण भर बात कर सकूँ, जो बड़े संकट में है।

प्रधान न्यायाधीश

हाँ, खुशी से और आप उसे समझा दें कि अपना क़सूर सच सच बता दे।

[लार्ड मोरेनज़ो गाइडो के पास जाता है जो दाहने कोने में खड़ा है और उसका हाथ पकड़ता है।]

मोरेनज़ो

[धीरे से]

रानी की करतूत है! मैं ने उसकी आँखों से भाँप लिया था। लड़के! क्या तू समझता है मैं राजा लारेंज़ो के पुत्र को इस दुष्टा के हाथों मरने दूंगा? पति ने तेरे पिता की जान ली। पत्नी अब तुझ पर चोट करना चाहती है।

गाइडो

लार्ड मोरेनज़ो! यह मेरा काम है, निश्चय जानो, मैं ने ही बाप का बदला लिया है।

प्रधान न्यायाधीश

क्या वह अपराध स्वीकार करता है?

गाइडो

हुज़ूर, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं ने यह हत्या की है।

पहला

यह देखो। बेचारा बड़ा दयालु है, हत्या से वह भागता है। अब यह छुटा ही जाता है।

प्रधान न्यायाधीश

और कुछ कहना है ?

गाइडो

हाँ हुज़ूर, इतना और कहता हूँ कि .... कि हत्या करना घोर पाप है।

दूसरा

वाह ! यह तो उस जल्लाद से कहना चाहिए। क्या ही अच्छी बात कही !

गाइडो

और महोदयगण ! मुझे खुल्लम खुल्ला इसकी आज्ञा मिले कि मैं निडर होकर इस हत्या का रहस्य प्रकट करूँ और उस आदमी का नाम बतलाऊं जिसने इस ख़ंजर से रात को राजा की हत्या की है।

प्रधान न्यायाधीश

आज्ञा दी जाती है तुमको कहने की।

रानी

[उठते हुए]

मैं कहती हूँ, उसे आज्ञा नहीं मिलेगी। अब जरूरत ही क्या है हमें और प्रमाण की ? क्या रात को वह रंगे हाथों नहीं पकड़ा गया ?

प्रधान न्यायाधीश

[कानून दिखाकर]

श्रीमती, आप स्वयं इसे पढ़ लें।

रानी

[पुस्तक अलग हटा कर]

आप ही सोच लें, न्यायाधीश महोदय! क्या यह संभव नहीं है कि इस जैसा आदमी यहाँ सब लोगों के सामने, हमारे स्वर्गीय स्वामी, इस नगर तथा यहां के निवासियों की शान के विरुद्ध—हो सकता है मेरे भी विरुद्ध—कोई भद्दी वा अनुचित बात कह बैठे।

प्रधान न्यायाधीश

श्रीमती जी—पर कानून ?

रानी

कुछ नहीं कहने पायेगा वह यहां, उसे मुंह बंदकर चुप चाप फाँसी पर चढ़ना होगा।

प्रधान न्यायाधीश

श्रीमती! पर क़ानून को क्या किया जायगा ?

रानी

हम क़ानून से नहीं बंधे हैं। उससे हम केवल औरों को बांधते हैं।

मोरेनज़ो

प्रधान न्यायाधीश महोदय! यहाँ अन्याय न होने पावे।

प्रधान न्यायाधीश

तुम्हारे कहने की आवश्यकता नहीं है, लार्ड मोरेनज़ो। श्रीमती! दण्डविधान से बँधे हुए मार्ग के विरुद्ध चलना बहुत बुरा होगा। चाहे ऐसा करना उचित ही क्यों न हो, पर इसका सदा भय रहेगा कि अराजकता इसके बहाने न्याय के आसन पर बैठ कर कहीं अन्यायियों के पक्ष में न्याय न करने लगे।

कौंट बारडी

मेरे विचार से श्रीमती! आप न्याय-विधान में हस्त-क्षेप नहीं कर सकतीं।

रानी

हाँ, ठीक है। दूसरों के लिये न्याय की दुहाई देना आसान है। पर साहबान! अगर कहीं धुर भर आपकी ज़मीन दब जाय, कहीं आपकी तहसील में कौड़ी भर की कमी पड़ जाय, तो आप लोग न्यायविधान के लिए इस निश्चिन्तता से कभी न ठहरेंगे जिससे इस समय आप मुझे सलाह दे रहे हैं।

कौंटबारडी

श्रीमती, आप हम लोगों का अनादर कर रही हैं।

रानी

कभी नहीं! कौन है आप लोगों में से जो अपने घर में चोर को पाकर उससे न्याय करने के लिए बैठा रहेगा? क्या आप उसे सीधे जेल का रास्ता नहीं दिखाते? अगर आप लोगों में पुरुषत्व होता तो आप उस दुष्ट—मेरे स्वामी के हत्या करनेवाले—को न्यायालय से घसीट ले जाते और उसका सिर धड़ से अलग कर देते।

गाइडो

हाँ—!

रानी

कहिए, क्या कहते हैं, न्यायाधीश महोदय ?

प्रधान न्यायाधीश

श्रीमती, ऐसा कैसे हो सकता है ? पडुआ का क़ानून साफ़ कहता है कि साधारण हत्या का अपराधी भी स्वयं अपनी सफ़ाई और अपनी वकालत कर सकता है।

रानी

यह साधारण हत्या नहीं है, न्यायाधीश महोदय ! यह भारी विद्रोह, घोर देशशत्रुता और राष्ट्र के विरुद्ध हथियार उठाना है। किसी राष्ट्र के शासक की हत्या करना उस राष्ट्र की हत्या करनी है। इस हत्या से प्रत्येक स्त्री विधवा होती है, हर बच्चे यतीम होते हैं। ऐसे हत्यारे से उससे कम देश की हानि नहीं पहुँचती जितना उसके सशस्त्र आक्रमण से। सशस्त्र आक्रमण से केवल ऐसी ही हानि हो

सकती है जिसका प्रतीकार हो सकता है। टूटे हुए क़िले बन सकते हैं, उजड़े हुए गांव बस सकते हैं। पर कौन जिला सकता है मेरे इस मरे हुए स्वामी को ? है कोई जो उसे उठाकर खड़ा कर दे अब ?

माफ़ियो

ईश्वर की क़सम ! जान पड़ता है, उसे बोलने न देंगे।

जेप्पो विटीलोजो

अजी, अभी और सुनो।

रानी

अगर नहीं, तो पडुआ के सिर पर खाक़ फेंको, सुनसान सड़कों पर काले झंडे लगा दो और प्रत्येक नागरिक को काली पोशाक पहनने दो—पर इस मातम के मनाने के पहले उस हत्यारे से हमें ज़रूर समझ लेना चाहिए जिसने अपने भीषण कर्म से हमारे ऊपर यह आफ़त ढाई है और उसे सीधा जहन्नम में भेज कर ही हमें दम लेना चाहिए।

गाइडो

खोल दो मेरी इस हथकड़ी को बदमाशो ! न्यायाधीश महोदय ! मैं चिल्लाकर कहता हूँ आप चाहे समुद्र को शान्त कर दें, चाहे नदी की गति रोक दें, तूफ़ान की ज़बान बन्द कर दें—पर मेरे मुंह को आप नहीं बन्द कर सकते ! मेरा गला घोंट दीजिये, मुझे टुकड़े टुकड़े कर डालिये पर मेरी आत्मा—मेरी एक एक बोटी चिल्ला चिल्ला कर कहेगी—गला फ़ाड़ कर पुकारेगी—

'जो चुप रहेगी ज़बाने ख़ंजर, लहू पुकारेगा आस्तीं का।'

प्रधान न्यायाधीश

ठहरिये ! इस शोर गुल और उजडपन से क्या लाभ ? जब तक अदालत तुम्हें कुछ कहने की आज्ञा न दे तब तक तुम्हारा कुछ नहीं सुना जा सकता।

[रानी मुसकराती है और गाइडो हताश होकर पीछे की ओर गिर पड़ता है।]

रानी साहबा ! मैं और ये विद्वान् न्यायकर्त्ता लोग

इस मुशकिल मसले पर विचार करते हैं और सब क़ानून और नज़ीरों को ढूंढ़ते हैं।

रानी

जाइये ! न्यायाधीश महोदय जाइये और अच्छी तरह से क़ानून को उलटिये पुलटिये। किसी तरह इस अधर्मी दुष्ट की न चलने पावे।

मोरेनज़ो

जाइये, न्यायाधीश महोदय, और अपनी आत्मा को ख़ूब टटोलिये—एक ज़बान बन्द क़ैदी सूली पर न चढ़ने पावे।

[प्रधान न्यायाधीश और अन्य न्यायकर्त्ता लोग जाते हैं।]

रानी

चुप रह, मेरे सुख चैन के शत्रु ! तू फिर आया हमारे बीच में पड़ने। जान पड़ता है इस बार मेरी बारी है।

गाइडो

बिना सब कह डाले मैं मरनेवाला नहीं।

रानी

तू मरेगा और बिना सब कहे। तेरी बातें तेरे साथ जायँगी।

गाइडो

क्या तू वही बिट्रीस है ?—वही पडुआ की रानी !!

रानी

मैं वही हूँ जैसा तुमने मुझे कर दिया है। देख तो ले मज़े में अपनी करतूत !

माफ़ियो

देखो तो ! कैसी भयानक दीखती है—जैसे कोई शेरनी ही हो !

जेप्पो

चुप रहो जी ! कहीं सुन लेगी तो आफ़त आ जायगी।

जल्लाद

भाई, क्यों परेशान हो सफ़ाई देने के लिए ? देखते नहीं मेरा कुल्हाड़ा अब तुम्हारी गर्दन पर है ? क्या सफ़ाई देने

से तेरी जान बच सकती है ? यदि ऐसा ही है तो उस गिर्जा में चलकर पादरी के सामने अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा माँग लेना। बड़ा ही अच्छा पादरी है, लोग कहते हैं बड़ा ही दयालु है !

गाइडो

इस जल्लाद में औरों से अधिक शराफ़त है।

जल्लाद

ईश्वर तुम्हारा भला करे ! मैं ही तुम्हारा अन्तिम संस्कार करूँगा।

गाइडो

दयालु धर्मपुरोहित जी ! क्या ईसाइयों के देश में—जहाँ स्वयं प्रभु ईसा उस ऊँचे न्यायासन से दया की व्यवस्था करते हैं—यह अंधेर होगा कि एक आदमी को बिना पाप स्वीकार किये, बिना उसकी फ़रियाद सुने सूली पर चढ़ा दिया जाय। यदि नहीं होना है ऐसा तो क्या मैं अपने उस पाप की भीषण कथा कहूँ ?—यदि मैं ने सचमुच कोई पाप किया है।

रानी

क्यों व्यर्थ समय नष्ट कर रहा है ?

धर्माध्यक्ष

अफ़सोस है, लड़के ! सांसारिक प्रपंचों में मेरा कोई बस नहीं। मेरा काम तब आरंभ होता है जब न्याय हो चुकता है और तब मैं हिचकिचाते हुए अपराधियों को अपना पाप स्वीकार करने पर बाध्य करता हूँ।

रानी

हाँ ! इनके सामने तू भर पेट कह लेना—तब तक अपनी गाथा गाना जब तक तेरी ज़बान न थक जाय, पर यहाँ तू ज़बान तक न हिलाने पायेगा !

गाइडो

धर्माध्यक्ष महोदय ! आप मेरे काम के नहीं।

धर्माध्यक्ष

ऐसी बात नहीं, पुत्र ! हमारी सहायता केवल यहां ही

समाप्त नहीं हो जाती वरन् उस लोक तक काम देती है। यहाँ अगर पापी अपने पापों पर पछता कर मर रहा हो तो हमारी प्रार्थनाओं की सहायता से उसकी आत्मा को नरक से छुटकारा मिल जाता है।

रानी

हाँ! नरक में जब तू मेरे स्वामी से मिलना तो उससे कह देना कि मैं ने ही तुझे वहाँ भेजा है।

गाइडो

उफ़्!

मोरेनज़ो

यही वह स्त्री है न, जिससे तुम प्रेम करते थे?

धर्माध्यक्ष

श्रीमती, आप इस आदमी से बड़ी कठोरता का व्यवहार कर रही हैं।

रानी

अधिक नहीं, जितना उसने श्रीमती के साथ किया है।

धर्माध्यक्ष

कुछ भी हो, दया राजाओं की शोभा है।

रानी

दया न मुझे मिली है, न मैं देती हूँ। इसने मेरे हृदय को पत्थर बना दिया है, इसने इसकी सुन्दर बाटिका में बबूल बोये हैं, इसने मेरे हृदय के दया के कुंड में विष मिलाया है, इसने सारी अनुकंपा की जड़ उखाड़ फेंकी है, और मेरा जीवन अब वीरान बियाबान है जिसमें अब कुछ बच नहीं रहा। मैं तो वही हूँ जो इसने मुझे कर रखा है।

[रानी रोती है]

जेप्पो

बड़े आश्चर्य्य की बात है! यह राजा को इतना प्यार करती है!

माफ़ियो

स्त्रियां अपने स्वामी को प्यार करें तो आश्चर्य की बात है और न करें तो और भी आश्चर्य की बात है।

जेप्पो

तुम तो बड़े भारी ज्ञानी हो, पेटरूसी !

माफ़ियो

हाँ ! दूसरों की बुराई मैं बरदाश्त कर सकता हूँ—यही तो मेरा ज्ञान है।

रानी

बड़ी देर लगा रहे हैं—ये बूढ़े न्यायकर्त्ता लोग ! कहो आयें अब, जल्दी आवें—नहीं तो जान पड़ता है मेरा दिल ऐसा धड़क रहा है मानो मेरी जान निकल जायगी। मुझे जीने की बड़ी पर्वा है—यह बात नहीं। ईश्वर ही जानता है, मेरा जीवन जैसा सुखमय है ! परन्तु, फिर भी, मैं अकेले थोड़ी मरूँगी, यदि नरक में जाना ही है तो किसी को साथ लेकर जाऊँगी।

धर्माध्यक्ष जी ! ज़रा इधर देखिये मेरे भाल में क्या लिखा है ? यही न—'बदला'। लाल अक्षरों में लिखा है 'बदला' ? थोड़ा पानी मंगवाइए, मैं धो डालूं इसे। कल रात को यह लिख गया था। अब दिन में क्या आवश्यकता है उसकी ? धर्माध्यक्ष जी ! ठीक है न ? अरे !

यह तो मेरे हृदय को जलाये जा रही है, देना तो कोई छुरा एक—वह नहीं—मैं काट कर निकाल दूं इसे।

धर्माध्यक्ष

ऐसा होता ही है। अपने स्वामी की हत्या करनेवाले के प्रति इस प्रकार कुपित होना ठीक ही है।

रानी

धर्माध्यक्ष जी, मैं तो चाहती हूँ कि उसके हाथों में आग लगा दूँ। वह जलेगा अवश्य।

धर्माध्यक्ष

नहीं श्रीमती! हमारे धर्म की आज्ञा है कि शत्रुओं पर भी क्षमा करो।

रानी

क्षमा! क्षमा कौन सी बला है? मुझे तो कभी क्षमा मिली नहीं। अच्छा आख़िर आये तो यह लोग! कहिए प्रधान न्यायाधीश महोदय! कहिये।

[प्रधान न्यायाधीश आते हैं ।]

प्रधान न्यायाधीश

रानी साहबा, हम लोगों ने इस मामले पर बहुत देर तक ग़ौर किया और श्रीमती के विचारपूर्ण कथन पर बहुत विचार किया जो आपके श्रीमुख से इस सुन्दरता से निकले थे—

रानी

कहिये भी तारीफ छोड़िये—

प्रधान न्यायाधीश

—और हमें उस बात का प्रमाण मिला जैसा श्रीमती ने अभी कहा है कि कोई भी पडुआवासी, जो बल से, चालाकी से, राजा के शरीर पर आक्रमण करेगा, वह तुरन्त राज्यद्रोही समझा जायगा और उसके सारे अधिकार ज़ब्त समझे जायंगे। वह देशद्रोही माना जायगा और उसे कोई भी व्यक्ति निडर होकर मार डाल सकता है। और यदि उस पर मुकदमा चलेगा तो उसे मुँह बन्द कर चुपचाप अपनी सजा सुननी पड़ेगी। उसे किसी भी तरह बोलने का अधिकार न मिलेगा।

रानी

धन्यवाद, प्रधान न्यायाधीश महोदय ! धन्यवाद ! ठीक है आप का कानून। अब शीघ्रता से इस—इस देश के शत्रु का निपटारा कीजिए ! अब और क्या सुनना है ?

प्रधान न्यायाधीश

श्रीमती ! अभी थोड़ा और धीरज रखें। यह अभियुक्त विदेशीय है—यह पडुआ का रहनेवाला नहीं है और न तो यह राजा की अधीनता में अभी नियमानुसार आया है, इस लिए चाहे उस पर कितने भी भारी विद्रोह का अभियोग क्यों न लगा हो पर उसे अदालत में अपनी सफ़ाई देने का अधिकार देना ही पड़ेगा—इतना ही नहीं, उससे यह भी प्रार्थना करनी पड़ेगी कि वह अपने को निर्दोष प्रमाणित करने का पूरा प्रयत्न भी करे। नहीं तो सम्भव है कि उसके देश की सरकार हम पर क्रुद्ध होकर अन्याय करने का दोष लगावे और व्यर्थ में हमसे लड़ाई ठान बैठे। इस लिए विदेशियों के लिए पडुआ का क़ानून बड़ा ही दयालु है।

रानी

मेरे स्वामी का निजी नौकर होकर भी क्या वह विदेशी समझा जायगा ?

प्रधान न्यायाधीश

जब तक सात साल उसे नोकरी करते न हो जाय तब तक वह पडुआ का रहनेवाला न समझा जायगा, श्रीमती !

गाइडो

धन्यवाद है प्रधान न्यायाधीश जी ! आपका क़ानून बहुत ही अच्छा है ।

दूसरा नागरिक

क़ानून ! इससे मुझे बड़ी घृणा है । अगर क़ानून न हो तो कानून तोड़नेवाले भी न हों । मज़े में सब भले आदमी बने रहें ।

पहला नागरिक

हाँ, और क्या—ठीक तो कहते हो तुम । बड़ी दूर पहुँचे यार !

कानिस्टबुल

सच ! बड़ी दूर। फांसी के तख़्ते तक, बदमाश !

रानी

क्या यही क़ानून है ?

प्रधान न्यायाधीश

हाँ ! यही क़ानून है, श्रीमती !

रानी

देखूँ तो आप का क़ानून। क्या यह साफ़-साफ़ लिखा है ?

जेप्पो

ज़रा रानी को तो देखना।

रानी

धत्तेरे कानून की ! मेरा बस चलता तो मैं तुझे उतनी ही आसानी से इस देश से निकाल बाहर करती जितनी आसानी से मैं तुझे यहाँ से फाड़ फेंकती हूँ—

[सब फाड़ डालती है।]

कौंट बारडो ! क्यों मेरी बात मानोगे ? जल्दी एक घोड़ा तो तय्यार कराना। मैं अभी वेनिस जाती हूँ।

बारडी

वेनिस, श्रीमती !

रानी

बस बोलिये नहीं जाइये, जाइये !

[कौंट बारडी जाता है।]

ज़रा सुनिये प्रधान न्यायाधीश महोदय ! अगर जैसा आप फ़रमाते हैं—निस्संदेह आप ठीक ही कहते होंगे—कि ऐसा ही कानून में लिखा है, तो क्या मैं रानी होकर भी इस मुक़दमें को कल तक स्थगित नहीं कर सकती ?

प्रधान न्यायाधीश

श्रीमती, ख़ून का मुकदमा कल तक नहीं रुक सकता।

रानी

तो मैं अपने विरुद्ध इस दुष्ट की ऊट पटांग बातें सुनने के लिए रुकना नहीं चाहती। चलिये साहब — !

प्रधान न्यायाधीश

रानी साहबा ! आप तब तक इजलास नहीं छोड़ सकतीं जब तक इस क़ैदी का फैसला न हो जाय।

रानी

'नहीं छोड़ सकती' ? प्रधान जी ! किस अधिकार से आप मुझे रोकते हैं ? क्या मैं पड़ुआ की अधिकारणी नहीं हूँ ? क्या मैं यहां की रानी नहीं हूँ ?

प्रधान न्यायाधीश

इसी लिए तो श्रीमती, न्याय की अधिष्ठातृ होने ही के कारण आप की उपस्थिति यहां अनिवार्य है।

रानी

क्यों ? क्या आप मुझे मेरी मरज़ी के खिलाफ़ रोकेंगे ?

प्रधान न्यायाधीश

हम प्रार्थना करते हैं कि आप की मरज़ी न्याय के विरुद्ध न हो।

रानी

क्या होगा यदि मैं उठकर चली जाऊं यहां से ?

प्रधान न्यायाधीश

आप अदालत को अपना रास्ता रोकने के लिए विवश न करेंगी।

रानी

मैं नहीं ठहरती यहां—

[अपने स्थान से उठती है।]

प्रधान न्यायाधीश

अरदली !

[अरदली आगे आता है।]

देखो अपना काम करो, समझा !

[अरदली बाईं ओर का दरवाजा बन्द कर देता है और जैसे रानी और उसके साथी आते हैं झुक जाता है।]

अरदली

श्रीमती ! हाथ जोड़ कर बिनती करता हूँ कि दया कर मुझे अपने फ़र्ज़ को उद्दण्डता में परिणत न करने दीजिये। ऐसा न कीजिये कि अपना कर्तव्य मुझे कठोर जान पड़े।

रानी

कोई है नहीं जो इस पाजी को सामने से हटा दे ?

माफ़ियो

[अपनी तलवार खींचकर]

मैं—तैयार हूँ।

प्रधान न्यायाधीश

कौंट माफ़ियो ! सावधान ! और जनाब आप भी—

[जेप्पो से]

जिस किसी ने भी यहां के साधारण सेवक पर हाथ उठाया, वह सन्ध्या के पहले अपने को मरा समझे।

रानी

अच्छा ! रहने दीजिये खून खराबा ! यह अत्यन्त उचित है कि मैं इस क़ैदी का बयान सुनूं ।

[अपने सिंहासन पर लौट आती है]

मोरेनज़ो

अब तेरा शत्रु तेरे हाथ में है ।

प्रधान न्यायाधीश

[घड़ी सामने हाथ में लेकर]

गाइडो फ़ेरान्टी ! जब तक इस शीशे के छिद्र से बालू के टुकड़े गिरते हैं तब तक तुझे आज्ञा है कि तू जो चाहे कह सकता है । इससे अधिक पल भर भी नहीं—

गाइडो

इतना काफ़ी है, महोदय !

प्रधान न्यायाधीश

तू अब मौत के बिलकुल पास है । वही कहना जो सच हो । सत्य को छोड़ और कुछ तेरे काम न आवेगा ।

गाइडो

अगर सच न कहूं तो मेरा सिर कटवा लीजिएगा।

प्रधान न्यायाधीश

[घड़ी रख देता है]

शान्ति !

कानिस्टबुल

चुप रहो, लोगो !

गाइडो

प्रधान न्यायाधीश महोदय तथा इस न्यायालय में उपस्थित न्यायकर्त्तागण ! कुछ समझ में नहीं आता कहां से अपनी कथा आरंभ करूं—यह लंबी और भीषण कहानी है। अच्छा सुनिये, मेरी पैदाइश कहां हुई थी। मैं उस राजा लोरेंजो का पुत्र हूं जो इस दुष्ट की धोकेबाजी से मारा गया था, जो अभी कल तक पडुआ पर शासन करता था—

प्रधान न्यायाधीश

ख़बरदार ! राजा के अनादर से अब आप को कुछ लाभ न होगा। वह अब जीवित नहीं है।

माफ़ियो

अच्छा ! यह पारमा के राजा का पुत्र है।

जेप्पो

मैं तो हमेशा से उसे बड़े घराने का समझता था।

गाइडो

मैं स्वीकार करता हूं कि अपने बाप का बदला लेने के लिये मैंने उसकी नौकरी की, और उस के यहां रहने लगा था। इसी हेतु मैंने उससे घनिष्ठता बढ़ाई थी, उसके साथ भोजन करता था, उसके साथ शराब पीता था, उसकी आज्ञाओं का पालन करता था—बस यहां तक मैं स्वीकार करता हूँ और यह भी कहता हूँ कि मैं तब तक यह करता रहा जब तक उसने मुझ पर विश्वास नहीं किया। हाँ—जब तक मैं उसका बिलकुल विश्वासपात्र नहीं

बन गया जैसे वह मेरे पिता का था। बस इसी की मैं प्रतीक्षा कर रहा था।

[जल्लाद से]

देखो! समय के पूर्व मेरी गर्दन पर कुल्हाड़ा न चलाना। तू तो जानता ही है कि मेरा समय कब आयेगा। क्यों जी! इस इजलास में मेरे सिवा और किसी की गर्दन नहीं है?

प्रधान न्यायाधीश

समय हो रहा है, जल्दी राजा की हत्या की बात पर आओ।

गाइडो

बस, अब थोड़े में कहता हूँ। कल रात को बारह बजे के क़रीब मैं एक मजबूत रस्सी के सहारे महल की दीवाल पर चढ़ा—इस लिये कि अपने बाप की हत्या का बदला लूँ—मैं सच कहता हूं न्यायाधीश महोदय! केवल इसी उद्देश से। इतना तो मैं स्वीकार करूँगा और इतना और भी—कि जैसे ही चुपके से मैं उस सीढ़ी पर

चढ़ता हुआ—जो राजा के कमरे में जाती थी, वहां तक पहुँचा—और ज्योंही मैं ने अपना हाथ उस लाल परदे को हटाने के लिए बढ़ाया जो हवा में हिल रहा था—उसके हटते ही—देखा कि आकाश में स्थित चन्द्रदेव की धवलिमा ने अंधेरे कमरे को एकाएक जगमगा दिया है—उस उज्ज्वल प्रकाश में मैंने उस व्यक्ति को सोते हुए देखा जिससे मैं घृणा करता था। अपने पूज्य पिता की हत्या का स्मरण आते ही, और उसके बेचनेवाले—उसके प्राण लेनेवाले उस दुष्ट, पातक को सामने देखते ही—मैं ने इसी खंजर को उसके कलेजे में भोंक दिया—इसे मैंने वहीं उसी कमरे में पड़ा पाया था—

रानी

[अपने स्थान से उठकर]

ऊफ़् !

गाइडो

[जल्दी से]

मैंने राजा की हत्या की। अच्छा प्रधान न्यायाधीश महोदय ! अब मेरी एक ही बिनती है कि मुझे इस दुष्ट

संसार की दुर्गति देखने को दूसरे दिन तक जीवित न रहने दें।

प्रधान न्यायाधीश

तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की जाती है और तू इसी रात को सूली पर चढ़ा दिया जायगा। ले जाओ इसे यहां से! आइये श्रीमती!—

[गाइडो को लोग ले जाते हैं। उसके जाते ही रानी अपने हाथ फैला कर शीघ्रता से रंगमँच के नीचे दौड़ पड़ती है]

रानी

गाइडो! गाइडो!

[मूर्च्छित हो जाती है]

परदा गिरता है।

अंक पाँचवाँ ।

अंक पाँचवाँ।

दृश्य।

[पडुआ के कारागार की एक कोठरी, गाइडो एक चटाई पर सोया पड़ा है जो बाईं ओर कोने में है, पास में एक मेज़ पर एक सुराही पड़ी है, पांच सिपाही कोने में पड़ी हुई पत्थर की मेज पर शराब पीते हुए जुआ खेल रहे हैं। उनमें से एक अपने भाले से लालटेन लटकाये है। गाइडो के सिरहाने एक मशाल दीवाल से जल रही है। पीछे दो सीकचेदार खिड़कियां हैं। बीच में एक दरवाज़ा है जो कोने में है, सामने रास्ता दिखाई पड़ता है। रंगमंच पर कुछ अंधेरा सा है।]

पहला सिपाही

[पासा फेंक कर]

यह आया छः, पीटो !

दूसरा सिपाही

हाँ भाई, है तो सही। मैं तो नहीं खेल सकता अब तुम्हारे साथ। सब खो बैठूंगा।

तीसरा सिपाही

नहीं, तेरी अक्ल तेरे साथ रहेगी, उस पर किसी का दाँव न लगेगा।

दूसरा

हाँ ! हाँ ! उस पर दाँव नहीं लग सकता।

तीसरा

ठीक, भला तेरे पास है भी अक़्ल ?

सब के सब

[ज़ोर से]

हा ! हा ! हा !

पहला

चुप ! कैदी जग पड़ेगा, देखते नहीं वह सो रहा है।

दूसरा

जग पड़ेगा तो क्या बिगड़ जायगा ? अब तो उसे हमेशा के लिए सोना ही है। तब कहीं जगा दिया जाय तो बड़ा खुश होगा।

तीसरा

अरे नहीं ! क़यामत आ जायगी।

दूसरा

समझते हो, उसने बड़ा भारी अपराध किया है, हम जैसे को मार डालना केवल आदमी की हत्या है पर राजा पर हाथ उठाना—राष्ट्र के विरुद्ध हथियार उठाना है।

पहला

अरे ! बड़ा ही दुष्ट था वह राजा।

दूसरा

इसी से तो उसे मारना न था। दुष्टों के फेर में पड़कर भला आदमी भी दुष्ट होजाता है।

तीसरा

हा, यार! ठीक कहते हो। क्या उमर होगी उस कैदी की ?

दूसरा

काफी है शरारत करने के लिए। हाँ, अक्ल के लिए जरूर अभी कम है।

पहला

कुछ भी हो, उमर से वास्ता।

दूसरा

लोग कहते थे—रानी उसे क्षमा कर देना चाहती थी।

पहला

सच—?

दूसरा

हाँ! उसने प्रधान न्यायाधीश से बड़ी सिफ़ारिश की पर वह कब के माननेवाले।

पहला

मैं तो समझता था, पीटो! रानी ही के हाथ में सब कुछ है।

दूसरा

हाँ जी, उसको सब मानते हैं। है भी तो बड़ी भोली।

सब के सब

हा! हा! हा!

पहला

मैं तो समझता था हमारी रानी सब कुछ कर सकती हैं।

दूसरा

नहीं जी, अब तो वह जजों के हाथ में है। वे भरपूर उसके साथ न्याय करेंगे—वे और वह जल्लाद भी।

हाँ!

हाँ ! जब उसका सिर धड़ से अलग हो जायगा, तब ज़रूर रानी साहबा जो चाहे मज़े में कर सकती हैं। चाहें तो माफ़ ही कर दें। तब कोई नहीं रोक सकता उन्हें।

पहला

क्यों, तुम कहते हो उसका सिर अलग कर दिया जायगा—नहीं जी ! ऐसा क्यों होगा ? गाइडो कोई मामूली आदमी तो है नहीं, वह है शरीफ़ खानदान का, कानून के अनुसार वह इच्छानुसार विष पी सकता है।

तीसरा

और अगर वह ज़हर न पीना चाहे ?

पहला

तब क्या, उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जायगा।

[दरवाज़े पर खटखटाने की आवाज़]

पहला

देखना तो कौन है !

[तीसरा सिपाही जाता है और दराज़ से देखता है]

तीसरा

यह तो कोई औरत है !

पहला

है देखने में अच्छी ?

तीसरा

पता नहीं, मुँह पर तो कपड़ा डाले है, जमादार।

पहला

या तो बहुत सुन्दर ही लोग परदा करते हैं या बहुत ही भद्दी सूरतवाले। आने दो उसे भीतर !

[सिपाही दरवाज़ा खोलता है, और रानी सिर से पैर तक नक़ाब डाले आती है।]

रानी

[तीसरे सिपाही से]

क्या तुम्हीं यहाँ पहरे पर हो ?

पहला

[आगे बढ़कर]

मैं हूँ पहरे पर, श्रीमती !

रानी

मैं अकेले में कैदी से मिलना चाहती हूँ ।

पहला

ऐसा तो हुक्म नहीं है ।

[रानी अंगूठी देती है । वह देखकर स्वीकृति सूचक सिर हिलाकर लौटा देता है, और सिपाहियों को इशारा करता है ।]

जाकर बाहर खड़े होते जाओ !

[सिपाही लोग बाहर जाते हैं]

रानी

जमादार, तुम्हारे सिपाही बड़े उजड्ड जान पड़ते हैं ।

पहला

पर, शरारती नहीं हैं ।

रानी

देखो, मैं जल्दी वापस जाऊँगी। लौटते समय जब मैं यहाँ से निकलूँ तो उनसे कहना मुझे पहचानने की कोशिश न करें।

पहला

आप डरिये नहीं, श्रीमती !

रानी

एक ख़ास बात है जिसकी वजह से मैं चाहती हूँ कोई मुझे पहचानने का प्रयत्न न करे।

पहला

श्रीमती ! इस अंगूठी से आप इच्छानुसार आ जा सकती हैं—यह स्वयं रानी की अंगूठी है जो—

रानी

अच्छा, जाओ।

[सिपाही जाने के लिए लौटता है]

ज़रा सुनना तो, किस समय इसका—

पहला

बारह बजे, श्रीमती ! उसे हमें आज्ञा है बाहर निकालने की, परन्तु मुझे विश्वास है वह ऐसा करने न देगा। मेरे जान वह इस जहर ही को पीना अच्छा समझेगा—लोग जल्लाद से डरते हैं न—

रानी

क्या वह जहर रखा है वहां ?

पहला

हां श्रीमती ! जहर—जिससे आदमी बच ही नहीं सकता।

रानी

अच्छा, जाओ !

पहला

[स्वगत]

कसम खुदा की ! बड़ा सुन्दर हाथ है। जाने कौन है ? हो न हो यह कोई औरत है जो उससे प्रेम करती है।

[जाता है]

रानी

[अपना नक़ाब उतार कर]

अच्छा ! अब तो यह मज़े में इस नक़ाब और लबादे को पहन कर निकल जा सकता है—हमारा कद भी तो बराबर ही सा है। वे नहीं पता पा सकेंगे, और मेरे लिए क्या चिन्ता है ? अगर वह जाते समय मेरा अपमान न करे तो और किसी की मुझे रत्ती भर पर्वा नहीं। क्या वह मेरा अपमान करेगा ? उसे पूरा अधिकार है। हाँ, अभी तो सिर्फ़ ग्यारह बजे हैं वे बारह तक तो आते नहीं।

[मेज़ के पास जात है]

अच्छा, यह है ज़हर। वाह ! कैसी विचित्र बात है ! इस थोड़ी सी मदिरा में जीवन का सारा रहस्य भरा पड़ा है।

[प्याला उठाती है]

इसमें तो पोस्ते की बू आती है। मुझे खूब याद आता है, लड़कपन में जब मैं सिसली (Sicily) में थी तो मैं पोस्ते के फूलों को तोड़कर माला बनाया करती थी, मेरे चचा जान इस पर हंसा करते थे। मुझे क्या मालूम था कि इनमें जीवन के सोते को सुखाने की शक्ति है—

ये हृदय के स्पंद को बन्द कर सकते हैं—धमनियों में बहने वाले उस रक्त को ठंडा कर सकते हैं, जिसके पश्चात् लोग इस शरीर को उठाकर गड्ढे में फेक देते हैं। शरीर—और आत्मा ? वह तो तुरन्त चली जाती है स्वर्ग को या नरक को। कहां जायेगी मेरी ?

[दीवाल से मशाल उठाकर शय्या के पास जाती है]

वाह ! कैसी सुख की नींद में है—मानो कोई लड़का खेलते खेलते सो गया हो। अगर कहीं ऐसी नींद मुझे आती—मुझे तो स्वप्न दिखाई पड़ते हैं।

[उसके ऊपर झुककर]

आह ! चूम लूँ इसे ? नहीं ! नहीं ! मेरे पापी ओष्ठ—उसे जला देंगे। बहुत मिला उसे प्रेम का बदला फिर भी, अब तो यह मरने न पायेगा, मैंने ठीक कर लिया है सब। आज ही रात को वह पडुआ से दूर चला जायगा। अच्छा ही होगा ! न्यायकर्ता गण ! बड़े चतुर हैं आप लोग, पर फिर भी मेरी चतुराई को न पहुँच सके। अच्छा ही हुआ—

परमात्मा ! कैसा मैंने इससे प्रेम किया और क्या भीषण परिणाम उस प्रेम का हुआ !

[मेज़ के पास लौट आती है]

क्यों, अगर इस विष को पीकर मर जाऊँ तो कैसा हो ? ठीक तो है, मौत के लिए इन्तज़ार करना, पश्चात्ताप, रोग, बुढ़ापा, और विपत्ति को झेलते हुए यमदूतों का रास्ता देखना—इससे तो यह अच्छा ही है ? जाने क्यों लोग सड़ा करते हैं ? ठीक है, अभी मरनेकी मेरी उमर नहीं, पर क्या हुआ यह तो होना ही है। क्यों क्या ज़रूरी है मैं मरूं ? वह आज रात को बच ही जायगा, और फिर मेरे ऊपर क्या दोष रह जायगा ? नहीं ! मैंने पाप किया है, मरना मुझे ज़रूर पड़ेगा। वह मुझसे प्रेम नहीं करता इसलिए मुझे मरना पड़ेगा—हाँ, खुशी से मरती अगर वह इसके पहले मुझसे प्रेम कर लेता—पर वह क्यों ऐसा करने लगा ? मैंने उसका मतलब न समझा था—मैं जानती थी वह मुझे न्याय के हाथों में देना चाहता है—पर ऐसा तो होता ही आया है। हम स्त्रियां अपने प्रेमियों को तभी पहचानती हैं जब वे हमसे बिछुड़ जाते हैं।

[घंटी बजने लगती है]

दुष्ट घंटी ! तू इस आदमी की अन्तिम घड़ियां बजाती है। चुप रह ! कभी न करने पावेगी ऐसा ! ऐ ! वह

करवट ले रहा है। अब जल्दी करना चाहिए।

[प्याला उठा लेती है]

प्रेम! मैं नहीं जानती थी कि इस भांति मैं तुझे निबाहूँगी!

[विष पी लेती है और प्याले को अपने पीछे मेज़ पर रख देती है। खटके से गाइडो चौंक कर जग पड़ता है। वह नहीं देख पाता कि रानी ने क्या किया है। थोड़ी देर के लिए कमरे में सन्नाटा रहता है। एक दूसरे की ओर देखते हैं।]

तुम से क्षमा मांगने मैं नहीं आई हूँ—मैं जानती हूं मैं इसके योग्य नहीं। जाने दो उसकी चर्चा! गाइडो! मैंने जाकर न्यायाधीशों के सामने अपना अपराध स्वीकार किया, वे सुनते ही नहीं—कुछ तो कहते हैं मैंने तुम्हें बचाने के लिए यह कथा गढ़ ली है और तुमने मुझे मिला लिया है—कुछ कहते हैं मैं दया के साथ भी मज़ाक कर रही हूं जैसे मैं आदमियों के साथ करती हूं। और लोग समझते हैं कि स्वामी की हत्या के शोक से मैं अपनी बुद्धि खो बैठी हूं। वे मेरी सुनते ही नहीं! जब मैं बाइबिल की शपथ खाकर कहती हूं—वे कहते हैं इसको डाक्टर के पास ले जाओ—इसका दिमाग़ ख़राब है!

वे दस हैं मैं अकेली—उनके हाथ में तुम्हारी जान है। लोग मुझे पडुआ की रानी कहते हैं पर मैं नहीं समझती—क्यों? मैंने क्षमा की आज्ञा लिख कर दी—वे उसे स्वीकार ही नहीं करते। तुम्हें वे विद्रोही समझते हैं—कहते हैं मैंने ही यह उन्हें सिखाया है। हो सकता है मैं ही ने कहा हो। घड़ी भर में गाइडो! वे आते ही होंगे और तुम्हारे हाथों को तुम्हारे पीछे बांध कर वे तुम्हें सूली पर खड़ा कर देंगे। मैं उनसे पहले यहां आई हूँ—यह लो मेरी अंगूठी उसे दिखाकर तुम पहरे से साफ़ बाहर चले जा सकते हो, वह है नक़ाब और लबादा—मैंने कह रखा है सिपाहियों से—वे तुम्हें रोकेंगे नहीं। बस चल दो यहां से—देखो, बाईं ओर जाना, दूसरे पुल पर तुम्हें घोड़े तय्यार मिलेंगे। बस, कल सवेरे तुम वेनिस पहुँच जाओगे। साफ़—

[चुप रहती है]

बोलते क्यों नहीं? मुझे श्राप ही दे लो? तुम्हें अधिकार है।

[चुप रहती हैं]

समझते नहीं—तुम्हारी मौत के आने में अब मुश्किल

से गिने गिनाये मिनट हैं। यह लो अंगूठी। मेरे हाथ पवित्र हैं अब, उन पर ख़ून के दाग़ नहीं हैं। तुम्हें डर की कोई बात नहीं। क्यों ? न लोगे अंगूठी ?

गाइडो

[अंगूठी लेकर चूमता है]

ख़ुशी से ! ब्रिट्रीस, बड़ी ख़ुशी से।

रानी

बस चल दो पडुआ से।

गाइडो

पडुआ से चल दें !

रानी

हाँ ! और इसी रात को।

गाइडो

इसी रात को तो जायेंगे।

रानी

धन्यवाद है परमात्मा को।

गाइडो

अच्छा, मेरी जान बच सकती है। इसके पहले मुझे जीवन इतना आनन्दमय न जान पड़ा था।

रानी

देर मत करो, गाइडो, वह है मेरा लबादा, घोड़ा तुम्हें पुल के पास मिलेगा। समझे। दूसरा पुल, घाट के नीचे। देर क्यों कर रहे हो? सुनते नहीं हो? इस घंटे की आवाज़ को? एक एक चोट तुम्हारे जीवन की घड़ियां चुरा रही है। बस, चल दो झट पट।

गाइडो

हाँ! अब तो आता ही होगा वह।

रानी

कौन?

गाइडो

[निश्चिन्त भाव से]

क्यों, जल्लाद !

रानी

नहीं, नहीं ।

गाइडो

वही तो मुझे पडुआ से बाहर ले जायगा ।

रानी

ईश्वर के लिए गाइडो ! ईश्वर के लिए ! मेरी अपराधी आत्मा पर दो हत्या का भार न दो। बस एक ही काफ़ी है, जिसमें जब ईश्वर के सामने मुझे खड़ा होना पड़े तो कम से कम तुम तो मेरे पीछे यह कहने को न रहे कि यह अपराध मैंने किया है ।

गाइडो

मैं तो जाता नहीं ।

रानी

नहीं ! नहीं ! ऐसा न करना। तुम समझते नहीं—मेरा अब पडुआ में साधारण नारी से अधिक अधिकार नहीं है। वे तुम्हें लटका देंगे सूली पर। मैंने आते समय देखा है—मैदान में सूली के चारों ओर लफंगे मज़ाक उड़ाने के लिए एकत्र हो गये हैं—उनके जान मानो वह रंग मंच है मौत का भयानक सिंहासन नहीं। गाइडो ! सुनते हो, गाइडो ! भाग जाओ यहां से !

गाइडो

श्रीमती, मैं तो यहीं रहूँगा।

रानी

गाइडो, ईश्वर के लिए ऐसा न करना। बड़ी भीषण बात होगी—ऐसी भीषण कि नक्षत्र भय से नीचे गिर पड़ेंगे, चन्द्र चकित होकर अपना मुँह छिपा लेगा और प्रतापी सूर्य्य इस अन्यायपूर्ण पृथ्वी पर चमकना छोड़ देगा—जिसने तुम्हारी हत्या होने दी है।

गाइडो

मैं कहे देता हूँ—मैं हटूंगा नहीं यहाँ से ।

रानी

[अपना हाथ मलकर]

क्या एक पाप काफ़ी नहीं है ? क्या यह ज़रूरी है कि वह एक दूसरे उससे अधिक भीषण दुष्कर्म का कारण बने ? अरे ईश्वर ! परमात्मन् ! रोक दे इस पाप की बढ़ती हुई संख्या को, बंध्या कर दे इसे । इससे अधिक हत्या का भार मैं अपने ऊपर नहीं ले सकती—इसी इतने ही भार से मैं दबी जा रही हूँ ।

गाइडो

[उसका हाथ पकड़ कर]

क्या मैं इतना नीच हूँ कि तुम्हारे लिए मरने की मुझे आज्ञा न मिलेगी !

रानी

[अपना हाथ छुड़ाकर]

मरना मेरे लिए ? नहीं, मैं इस संसार की गंदी नाली में पड़े हुए कीड़े के समान हूँ। मेरे लिये तुम क्यों प्राण दोगे ? कभी नहीं गाइडो—मैं पतित नारी हूँ।

गाइडो

पतित—वे कहें जो वासना के दास हैं, वे समझें ऐसा जो हमारी तरह प्रेम की अग्नि में नहीं तपे हैं, वे—जिनका जीवन नीरस और उत्साहहीन है। मैं कहता हूँ वह ही—यदि कोई ऐसा हो जिसने प्रेम नहीं किया है—तुम पर दोषारोपण करने का साहस कर सकता है। मेरे लिए तो—?

रानी

हा ! गाइडो !

गाइडो

[पांव पर गिरकर]

तुम मेरी देवी हो, तुम मेरी प्रियतमा हो। ऐ ? सोनहले

केश कलाप ! ऐ रक्त अधर पल्लवपुट ! ऐ मनुष्य को प्रेम और प्रलोभन में डालने वाला साकार सौन्दर्य्य सा मुखड़ा ! तुम्हारा दर्शन पाकर मैं बीती बातें भूल गया, तेरी अर्चना करके मेरी आत्मा तेरे समीप पहुँच गई और तेरी आराधना कर मैं अपने को स्वर्गीय समझने लगा । मेरे शरीर को वे चाहे सूली पर चढ़ा दें पर मेरा प्रेम अमर होगा ।

[रानी अपने हाथों से मुंह छिपा लेती है गाइडो उसे हटा देता है]

प्रियतमे ! अपने सुन्दर पलकों को तो हटाना—तनिक मैं तुम्हारी आंखों को देख लूं और तुम्हें यह बता दूँ कि तुमसे मैं इस समय प्रेम करता हूँ—जब मृत्यु हमारे बीच साक्षात् खड़ी है । बिट्रीस ! मैं तुम से प्रेम करता हूँ । क्यों बोलती क्यों नहीं ? मैं फांसी पर लटक सकता हूँ पर यह तुम्हारा चुप रहना मेरे सहन के बाहर है । क्यों, क्या तुम न कहोगी कि मैं तुम से प्रेम करती हूँ ? कह दो एक बार और मौत मुझे प्यारी लगेगी—तुम्हारा चुप रहना मेरे लिए लाखों मौत से अधिक यंत्रणा देने वाली है । ओह ! तुम कठोर हो । तुम मुझे प्यार नहीं करती—।

रानी

हाँ! मुझे इसका अधिकार नहीं है। मैंने प्रेम के पवित्र हाथों को रक्त से अपवित्र किया है—मैंने खून किया है।

गाइडो

प्रिये! तुम ने नहीं किया, शैतान ने तुम से यह कर्म कराया।

रानी

नहीं! नहीं! हम स्वयं शैतान हैं। हम स्वयं इस संसार को अपने लिए नरक बनाते हैं।

गाइडो

तो रसातल भेजो ऐसे स्वर्ग को, मैं उसी संसार को थोड़ी देर के लिए अपना स्वर्ग बनाऊँगा। यदि दोष था तो मेरा था। मैंने हत्या को हृदय में स्थान दिया। खाते पीते उठते बैठते मैंने उसका चिन्तन किया और मन में सैकड़ों बार नित्य राजा की हत्या की। यदि वह उसके आधे बार भी मरता जितनी मेरी इच्छा थी तो मौत सदा

इस महल के चारों ओर चक्कर लगाती रहती और हत्या कभी विश्राम न ले सकती। तुम्हीं बतलाओ प्रेम की प्रतिमा! साधारण कुत्ते से भी प्रेम करने वाली! जिसे देखकर बच्चे प्रसन्नता से खिलखिला पड़ते हैं! तुम्ही बतलाओ पवित्रता की साक्षात् देवी! तुम्हीं बतलाओ—यह जिसे लोग तुम्हारा पाप कहते हैं—है क्या वह?

रानी

क्या है वह? कभी कभी मुझे भी यह स्वप्न सा जान पड़ता है—स्वप्न! शैतान का भेजा हुआ बुरा स्वप्न—पर जब मैं उस मरे हुए पुरुष का मुख देखती हूँ मुझे जान पड़ता है यह स्वप्न नहीं है—वरन् मुझ पर पाप का भार है और इस भीषण संसार से परित्राण पाने का प्रयत्न करने वाली मेरी जान पर खेलने वाली अंधी आत्मा ने अपने बेड़े को पाप के पहाड़ से टकरा दिया है। तुम पूछते हो है क्या वह? है क्या? केवल हत्या! घोर हत्या—और क्या!

गाइडो

नहीं! नहीं! नहीं! यह तुम्हारे प्रेम का परिणाम था

जो एकाएक यह भीषण कर्म कर बैठा, और एकाएक हत्या की उपाधि ले बैठा। मैंने इस उपाधि की सहस्रो बार मन में अभिलाषा की थी। मेरी आत्मा हत्या पर तुली थी, पर मेरे हाथ हिचिकते थे। तुम्हारे हाथों ने हत्या अवश्य की पर तुम्हारी आत्मा पवित्र है। इस लिए विट्रीस! मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। तुम्हारे इस दैवी दुर्भाग्य पर जिसे दया न हो—परमात्मा की असीम दया से वह सदा के लिए वंचित रहे। एक बार मुझे प्यार कर लो प्रियतमे!

[चूमने का प्रयत्न करता है]

रानी

नहीं! नहीं! तुम्हारे अधर पवित्र हैं मेरे हैं अपवित्र। खून मेरा जार था—पाप मेरे साथ सोया था। उफ़ गाइडो! यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो चले जाओ यहाँ से—प्रत्येक पल चूहे की भांति तुम्हारे जीवन की रस्सी कुतर रहा है। चले जाओ यहाँ से प्रियतम! बस चले जाओ! और अगर कभी तुम्हें मेरी याद पड़े—यह याद रखना—कि मैं तुम्हें संसार की सारी वस्तुओं से बढ़ कर मानती थी। याद

रखना इतना गाइडो ! कि एक स्त्री थी जो प्रेम के लिए अपने जीवन का बलिदान करना चाहती थी पर प्रयत्न ही में वह प्रेम की हत्या कर बैठी । ओह ! यह क्या ? घड़ी का बजना बन्द हो गया—मुझे जान पड़ता है सिपाही सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं ।

गाइडो

[स्वगत]

सिपाही आना ही चाहते हैं ।

रानी

क्या घंटे का बजना बन्द हो गया ?

गाइडो

हाँ ! इस संसार में मेरे जीवन की अन्तिम घड़ी आ पहुँची । बिट्रीस ! हम वहाँ—

[ऊपर की ओर इशारा करके]

फिर मिलेंगे ।

रानी

नहीं, नहीं, अभी भी खैर है! तुम भाग जाओ यहाँ से। घोड़ा तुम्हें पुल के पास मिलेगा—अब भी समय है! जाओ! जाओ! अब देरी न करो!

[रास्ते में सिपाहियों के आने की आहट]

बाहर से कोई

हटो, पडुआ के प्रधान न्यायाधीश आ रहे हैं!

[खिड़की के सीकचे से प्रधान-न्यायाधीश रास्ते में जाते दिखाई पड़ते हैं—आगे कुछ लोग मशाल लिए हुए हैं।]

रानी

बहुत देर करा दी।

[नेपथ्य से]

जल्लाद आ रहा है।

रानी

[बेबसी में बैठ जाती है]

ओह!—

[जल्लाद कंधे पर कुल्हाड़ा रखे बरामदे में आता दिखाई पड़ता है, पीछे मोमबत्ती लिए संन्यासी लोग हैं।]

गाइडो

विदा लेता हूँ प्रिये ! अब मैं वह विष पीने जाता हूँ। मुझे जल्लाद का डर नहीं पर मैं वहां सूली पर नहीं मरूंगा वरन् यहां तुम्हें चूमते हुए तुम्हारी गोद में—। विदा प्रियतमे !

[मेज़ के पास जाता है और सुराही उठाता है]

क्या ! तू खाली है ?

[उसे जमीन पर फेक कर]

पाजी जेलर, ज़हर में भी कजूंसी—।

रानी

[धीरे से]

नहीं, उसका दोष नहीं है।

गाइडो

अरे ! तुम ने तो नहीं पी लिया इसे ! बिट्रीस ! इसे तो नहीं पीया है न ?

रानी

कह तो देती कि नहीं पीया है पर मेरा कलेजा भस्म हुआ जाता है। मेरे लिए अब इसे छिपाना कठिन है।

गाइडो

ऐ! छलिया! तुमने मेरे लिए इसमें एक बूंद भी नहीं छोड़ा?

रानी

नहीं! उसमें सिर्फ़ मेरे भर की मौत थी।

गाइडो

क्या तुम्हारे अधरों पर इतना भी जहर नहीं है कि जिसे चाट कर मैं मर सकूं?

रानी

तुम क्यों मरते हो? क्या तुमने हत्या की है? क्यों मरोगे तुम? मैंने हत्या की है—मैं मरती हूँ। क्या ख़ून के लिए ख़ून नहीं बहाया जाता है? ऐं! किसने कहा था यह? याद नहीं आता—।

गाइडो

ठहर जाओ ज़रा सा। हमारी आत्माएं साथ चलेंगी।

रानी

नहीं, तुम जीवित रहो। संसार में बहुत सी औरतें हैं जो तुमसे प्रेम करेंगी और तुम्हारे लिए हत्या न करेंगी।

गाइडो

मैं केवल तुमसे प्रेम करता हूँ—

रानी

इसके लिए तुम्हें मरना ज़रूरी नहीं है—

गाइडो

आह! यदि हमें साथ मरना है तो क्या हम एक ही क़ब्र में नहीं सो सकते?

रानी

क़ब्र—हमारे लिए अनुचित फूलशय्या होगी।

गाइडो

नहीं ! नहीं ! उचित होगी हमारे लिए ।

रानी

हमारे फटे कफ़न पर लोग कांटे फेकेंगे । फूल ! फूल, तो सब तभी सूख गये जब मेरे स्वामी क़ब्र में पहुँचे ।

गाइडो

आह बिट्रीस ! तुम्हारे अधर ही फूल हैं जिन्हें मौत भी नहीं सुखा सकती ।

रानी

पर क़ब्र अंधेरी है—बड़ी अंधेरी ! चलूं मैं आगे और वहाँ जला दूँ एक दीपक तुम्हारे लिए । नहीं ! नहीं ! मैं मरूँगी नहीं ! प्यारे ! तुम बलवान हो, युवा हो, और वीर हो । बचालो मुझे मौत से ! छीन लो मुझे उसके पंजों से !

[गाइडो को अपने सामने कर लेती है, उसकी पीठ दर्शकों की ओर है ।]

मैं तुम्हें तब प्यार करूँगी जब तुम इसे हरा दोगे। ओह! क्या तुम्हारे पास कोई उपाय नहीं है कि मुझ पर विष का असर न हो? क्या देश की सारी नदियां सूख गई हैं कि तुम इस अग्नि को शान्त करने के लिए एक चुल्लू पानी नहीं ला सकते?

गाइडो

अरे परमात्मन्!

रानी

कहा क्यों नहीं, कि यहाँ सूखा पड़ा, पानी है नहीं— है तो केवल आग ही आग—

गाइडो

प्रियतमे!

रानी

किसी वैद्य के लिए आदमी भेजो! उसके लिए नहीं जिसने मेरे स्वामी को अभी चंगा किया है। बुलाओ किसी दूसरे को! जल्दी करो! मैं कहती हूँ देर न करो! हर एक विष की दवा होती है, क्या वह धन पाकर उसे न देगा? कहो

उससे मैं पडुआ नगर देती हूँ उसे अगर वह एक घड़ी भी मुझे जिन्दा रख दे। मैं चाहती मरना नहीं। ओह! मेरी जान निकल रही है! रहने दो मुझे—यह विष मेरा कलेजा काटे डालता है। मुझे क्या मालूम था मरना इतना दुखदाई होता है! मैं समझती थी जीने ही में सारा कष्ट है, पर बात तो कुछ उलटी सी प्रतीत होती है।

गाइडो

अभागे तारागण! बुझा दो अपनी क्षुद्र ज्योति को आँसुओं से और कह दो अपने शासक चन्द्र से कि इस रात को चमकना बन्द कर दे।

रानी

गाइडो! हम यहां क्यों आये? यह कमरा तो इस उत्सव के लिए ठीक नहीं। चलो, अभी यहां से चलें। कहाँ हैं घोड़े? हमें शीघ्र वेनिस का रास्ता पकड़ना चाहिये। बड़ी ठंढी है रात! हमें तेज़ चलना चाहिए—

[पादड़ी लोग बाहर गाना आरंभ करते हैं]

संगीत! बड़ी अच्छी बात है, पर आजकल तो रोने

का रिवाज है—ऐसा क्यों ? तुम रोते क्यों हो, क्या हम एक दूसरे को प्यार नहीं करते ?—बस। मौत! यहां कैसे ? तुझे यहां आने की मनाही है—भोज में मैंने तुझे निमंत्रण दिया था जहर में थोड़े ही। उन्होंने झूठ कहा था तुझसे—कि मैं ने तेरा विष पिया है। वह तो जमीन पर ढरक गया था—ठीक उसी भांति जैसे मेरे स्वामी का खून ढरका था। बड़ी देर करके आई तू—

गाइडो

प्रिये, कुछ नहीं है यहां, तुम्हें भ्रम हो रहा है।

रानी

मौत! देखती क्या है खड़ी! दौड़! ऊपर के कमरे में। वहां मेरे मृत स्वामी के श्राद्ध की रोटियां तेरे लिए रखी हैं। यहाँ क्या धरा है तेरे वास्ते ?—ये विवाह के उत्सव और ये आनन्द के दिन, यहाँ तेरा काम ? दूर हो यहाँ से! तेरी भीषण अग्नि हमें भस्म कर देगी। ओह! मैं जली जाती हूँ। क्या कोई उपाय नहीं है ? पानी! पानी दो मुझे! नहीं तो लाओ थोड़ा और विष! नहीं! मुझे कोई

कष्ट नहीं है—क्या यह आश्चर्य नहीं है कि मुझे कोई कष्ट नहीं है और मौत ने मेरा पीछा छोड़ दिया—चलो अच्छा ही हुआ! मैं समझती थी वह हमारा विच्छेद कराने आई थी। गाइडो! क्या तुम्हें इसका दुख नहीं है कि मैं व्यर्थ तुमसे मिली—?

गाइडो

मैं सच कहता हूँ यदि ऐसा न होता तो मेरा ज़िन्दा रहना मुशकिल था। इस कलियुग में भी लोग ऐसे मौकों के लिए तरसते मर गये हैं पर उन्हें एक भी हाथ नहीं लगा है।

रानी

तो तुम्हें इसका दुख नहीं है? बड़े तअज्जुब की बात है!

गाइडो

क्या कहती हो, बिट्रीस? क्या मैंने सौन्दर्य्य का जी भर कर दर्शन नहीं पाया। इतना काफ़ी है मनुष्य के जीवन के लिए। प्रिये! मैं प्रसन्न हूँ इसपर। मैं अकसर

उत्सवों में उदास रहा हूं पर इस अवसर पर कौन ख़ुश न होगा जब कि प्रेम और मृत्यु के प्याले हमारे सामने भरे रखे हैं।

हम साथ ही प्रेम और मृत्यु दोनों का पान करेंगे।

रानी

ओह! मैंने वह पाप किया जो कोई स्त्री न करेगी, पर मुझे वैसा दण्ड भी मिला जो किसी स्त्री को न मिलेगा। क्या कहते हो तुम? नहीं, यह असम्भव है! ओह! क्या तुम समझते हो प्रेम मेरे हाथों से हत्या का कलंक धो देगा? क्या वह मेरे दिल के घावों पर मरहम रख के मेरे भीतरी चोट को चंगा कर देगा? क्या वह मेरे कलंकमय कर्म्मों की कालिमा को मिटा देगा? मैं पापी हूँ जो—

गाइडो

नहीं! वे पापी नहीं हैं जो प्रेम के लिए पाप करते हैं।

रानी

मैंने पाप अवश्य किये हैं पर फिर भी कदाचित् मुझे पापों के लिए क्षमा मिल सके। मेरे प्रेम की पराकाष्ठा हो गई—

[वे इस अंक में पहली बार चुम्बन करते हैं—रानी यकायक मृत्यु के कष्ट से उछल पड़ती है, यंत्रणा से व्यथित होकर अपने कपड़े फाड़ती है और अन्त में कष्ट से मुंह विकृत कर कुरसी पर निर्जीव होकर गिर पड़ती है। गाइडो, उसका ख़ंजर निकाल कर अपने को मार लेता है और ज्यों ही वह उसके घुटनों पर गिरता है वह अपने हाथों से कुरसी के पुश्त पर रखे हुए लबादे को खींच लेता है जिससे रानी ढँक जाती है। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहता है। बाद को रास्ते में सिपाहियों के पैर की आहट सुनाई पड़ती है। दरवाज़ा खुलता है, प्रधान न्यायाधीश, जल्लाद, और सिपाही आते हैं और काले लबादे में लपटे हुए व्यक्ति को देखते हैं— गाइडो नीचे मरा पड़ा है। प्रधान न्यायाधीश जल्दी से दौड़ कर रानी के ऊपर से लबादा उठा लेता है। रानी का मुख इस समय

पत्थर की बनी 'शान्ति' की मूर्ति की भांति दिखाई देता है जो परमात्मा की क्षमा का चिह्न है।]

[सब निश्चल खड़े रहते हैं]

परदा गिरता है

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८	६	बहते	रंगते
२३	६	ततुए	तेंदुए
,,	७	मुझे भले	मुझे और भी भले
३२	२	हैं	हों
५४	४,५	गंदे और मैले	गंदा और मैला
		हो गये हैं	हो गया है
६५	२	को	का
,,	६	मुझे	मैंने
६७	१४	वह	यह
६९	३	उनका	उनकी
,,	१८	उससे	इससे
८८	९	हिटा	मिटा
९३	१३	बाजेवाले	बाजावाले
१३०	१६	हा	हो
१७२	७	तो	लो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०२	९	जात	जाती
२०९	५	उन्हें	तुम्हें
२१२	१२	रहे	रहो
२१६	१८	वाली	वाला
२२१	१२	करा	कर